

आदाब

मै प्रेमचंद हुँ

آداب میں پریم چند ہوں

कार मुंशी प्रेमचंद की कहानियों का नाट्य रूपांतरण

रूपांतरकार **मुजीब खान**

danish artist

प्रेम उत्सवात १० दिवसांत १०० नाटिका!

ल्या सुर्वे। दि. २५ (मुंबई)

सुप्रसिद्ध हिंदी-उर्दू साहित्यिक मुंशी प्रेमचंद यांच्या ३१ जुलै रोजी येणाऱ्या १३२ व्या जयंतीचे चित्य साधून त्यांच्या कथांवर धारित १०० लघुनाटिका अवघ्या दिवसांत सादर केल्या जाणार हेत. आयडियल

एंटरटेन्मेंट ॲकॅडमी (आयडिया) या नाट्य चळवळीतील संस्थेतर्फे हा अनोखा उपक्रम राबवून प्रेमचंद यांचे स्मरण केले जाणार आहे.

प्रेमचंद यांचे साहित्यक्षेत्रात मोठे योगदान आहे. त्यांनी ३१५ लघुकथा, १८ कादंबऱ्या आणि १५ नाटके असे लिखाण केले आहे. त्यांचे सामाजिक स्थितीवर भाष्य करणारे लिखाण साहित्यप्रेमींनी नेहमीच उचलून धरले आहे. त्यांचे साहित्य

प्रेमचंद यांच्या गोदान, बाझार ए हुस्न, कर्मभूमी, शतरंज ...

मुंशी प्रेमचंद यांची विपुल साहित्यसंपदा आहे. आज समाजाचे स्वास्थ्य बिघडत चालले

THE INQUILAB
قوموں کی حیات اُن کے تخیّل پہ ہے موقوف (اقبال)
انقلاب
Mumbai • Sunday, July 24, 2011 • www.inquilab.com

'آئیڈیا' کا 'پریم اُتسو ۔ ۲۰۱۱ء'

منشی پریم چند کی ۷۵ رکہانیاں ۱۰ ردنوں میں ڈراموں کی شکل میں ساٹھے آڈیٹوریم (ولے پارلے، مشرق) میں شام ۵ ربجے سے پیش کی جارہی ہیں۔

آج کھیلے جانے والے ڈراموں کی کہانیاں

آج پیش ہونے والے ڈرامے 'خواب پریشاں' کا منظر

hindustantimes
HT café
Ash, Junior B and B-to-be!

Watch 75 plays in 70 hours

Theatre group to showcase whirlwind n... of skits based on Munshi Premchand's s... in celebration of his 131st birthday

A play based on Premchand's stories

Pooja Mahesh...

DNA after hrs.
DAILY NEWS & ANALYSIS
MUMBAI TUESDAY, JULY 12, 2011

BUZZZ

75 plays to be staged as a tribute to Munshi Premchand

It's a unique way to commemorate celebrated writer Munshi Premchand's 131st birth anniversary. There will be 75 plays, staged in 10 days, all based on the works of the renowned writer. City theatre group Ideal Drama and Entertainment Academy (IDEA) is organising Prem Utsav 2011, conceived, designed and directed by Mujeeb Khan. The event, to be held between July 22 and 31, will witness some well-known plays including *Shatraanj Ke Khiladi*, *Bade Bhaisahab*, *Kafan*, and *Sadgati* among others. Khan feels that the legendary writer's works are relevant in modern times and hence the youth should be educated on the ideas that Premchand had penned down years ago. Premchand wrote about 300 short stories and 14 novels, as well as several essays and letters, plays and translations. Many of his stor... been translated into English and Russian ... Indian films and TV seria... ered one of th...

THE INQUILAB
قوموں کی حیات اُن کے تخیّل پہ ہے موقوف (اقبال)
انقلاب
Saturday, December 3, 2011 • www.inquilab.com

آئیڈیل ڈراما اینڈ انٹرٹینمنٹ اکیڈمی

کا ۷ ارواں انٹر اسکول ڈراما مقابلہ 'کیفی اعظمی ٹرافی'
انٹر کالجیٹ ڈراما مقابلہ 'پی ایل دیشپانڈے ٹرافی'

آئیڈیل ڈراما اینڈ انٹرٹینمنٹ اکادمی (آئیڈیا) کی جانب سے
پریم اتسو 2011ء

منشی پریم چند

دھوکے کی ٹٹی: جھوٹ کا انجام ہمیشہ برا ہوتا ہے۔

عزت کا خون: ایک حیادار عورت کی

وردان: ایک عورت نے

بینک کا دیوالہ

راشٹریہ سہارا
ROZNAMA RASHTRIYA SAHARA
صفحات 12 (یعنی مکمل سچ) ○ حب الوطنی ○ فرض شناسی ○ Rs.4.00

انٹر اسکول ڈرامہ مقابلہ
اور ساتواں انٹر کالجیٹ ڈرامہ مقابلہ

नईदुनिया

नृत्यश्री एवं अलंकरण आज

डॉ. पूरनचंद · डॉ. जेके यादव · मुजीब खान · बसंत मिश्रा · सतीश कुमार सिंह

पत्रकार महेश मेहदेल, फिल्म एवं रंगमंच अभिनेत्री मीनाक्षी चौहान, शिखा शास्त्री पचमढ़ी के महेंद्र दुबे, डॉ. सतीश हर्ष, मंडला के डॉ. शरद नारायण खरे, डॉ. ... धर्मेंद्र शुक्ल, दीक्षा गुप्ता करेली

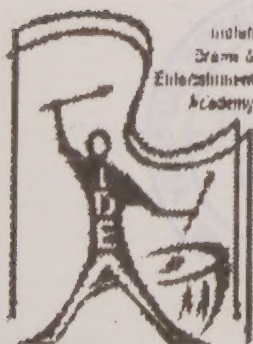
आदाब, मैं प्रेमचंद हूँ

महान लेखक-कथाकार प्रेमचंद की
कहानियों का नाट्यरूपांतरण

भाग-३

रूपांतरकार
मुजीब ख़ान





संस्करण : सीतम्बर २०१२

प्रकाशक : आलिया खान
ए-17, 209, मिल्लत नगर,
अन्धेरी (वेस्ट),
मुंबई-४०० ०९३.
फोन : 9821044429
E-mail : indeamumbai@yahoo.com,
ideamumbai2003@gmail.com
Website : www.indiadrama.net

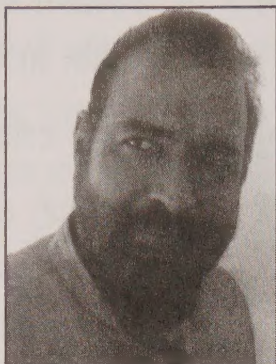
मूल्य : १५० रुपये

अनुक्रमणिका

अपने परिवार

आलिया, अराफीया,
जहीया, फारवरा और
मदिहा के नाम जिन की
खामोशी मेरा हौसला बनी

एक भेंट मुंशीजी से...



मै : उस दिन... पता नहीं वो कौन सा दिन था मुंबई में बारिश हो रही थी और हमारे वर्कशोप के बच्चे नहीं आये थे मुंशीजी की कहानी 'मोटे राम की डायरी' पढ़ रहा था के मुंशीजी आ गये... मुंशीजी आदाब।

मुंशीजी : क्या बात है बरखुरदार कहाँ हो? 'आदाब मैं प्रेमचंद हूँ' के दो भाग निकाल के लापता हो गए। अब समज में आया पुस्तक या समाचार पत्र निकलना कितना मुश्किल काम है ?

मैं : दुरुस्त फरमाया आपने... मुझे एहसास हो गया है के पुस्तक और समाचार पत्र निकालना वाकई में दुश्वार काम है। और आप के दौर में तो और भी मुश्किल था। लेकिन एक बात कहूँ...

मुंशीजी : कहो।

मैं : जब से कारपोरेट कम्पनियां आ गई हैं यह काम इतना दुश्वार नहीं रहा हाँ अकेले आदमी के लिए ये जोखिम भरा काम है।

मुंशीजी : तो तुम कैसे इस जोखिम को बर्दाश्त करते हो।

मैं : मैं किताबें मुफ्त में तकसीम करता हूँ अगर कोई खरीद ले तो मेरी तकदीर वरना मैं ने आप के साहित्य के लिए खुद को वक्फ कर दिया है।

मुंशीजी : भाई तुम पागल तो नहीं हो ?

मैं : आज कि इस कमर तोड़ महेंगाई में जो भी आप के साहित्य को जिंदा रखने के लिए परिश्रम करेगा उसे दुनिया पागल और जुनूनी ही कहेगी।

मुंशीजी : हमारी बहु कुछ नहीं कहती?

मैं : जितना बड़ा मैं पागल हूँ उतनी बड़ी वो भी है... अगर उसका साथ न होता तो मैं कबका इस सिरीज़ को बंद कर देता।

मुंशीजी : और दर्शकों की संख्या में इजाफा हुवा या उतनी ही है...

मैं : मुंशीजी लोग आप को पहचानते हैं और आपकी तारीफ भी करते हैं लेकिन जब हम आपकी जानिब से उन्हें निमंत्रण देते है तो ऐसे भागते हैं जैसे हमने आप का नाम लेके उन पर कोई अत्याचार कर दिया हो।

मुंशीजी : लोग पहेले ऐसे नहीं थे।

मैं : जी हाँ... जितना आप आज के दौर से हैरान हैं मैं भी कुछ कम परेशान नहीं हूँ।

मुंशीजी : सुना है तुम ये कहते हो के तुम प्रेमचंद को बेचते नहीं इसका क्या मतलब हुवा?

मैं : मैं अब तक 'आदाब मैं प्रेमचंद हूँ' सिरीज़ के ३४५ हफ्ते पूरे कर चूका हूँ लेकिन आज तक कभी एक रूपए कि टिकिट नहीं बेचीं। एर कंडीशन हाल में ड्रामे करता हूँ तब भी एक रूपया नहीं लेता और भविष में न ही लेना चाहूँगा।

मुंशीजी : लेकिन क्यों ? क्या मैं इसका कारण जान सकता हूँ?

मैं : कोई कारण नहीं बस यों ही जी नहीं चाहता।

मुंशीजी : वाह... खूब बहुत खूब... भाई इस तरह तो तुम कंगाल हो जाओगे।

मैं : हिम्मत नहीं हारूंगा।

मुंशीजी : तुम्हारी हिम्मत को दाद देता हूँ। अच्छा ये बताओ तुमको केंद्र सरकार या राज्य सरकारें भी कोई मदद नहीं करतीं?

मैं : जी नहीं।

मुंशीजी : क्यों? कारण? तुम इतना अच्छा काम कर रहे हो।

मैं : आप इसे अच्छा समझते हैं और आप के चंद चाहनेवाले भी इसी अच्छा समझते हैं मगर जो लोग सरकारें चला रहे हैं शायद उनको यह अच्छा न लगता हो। जनाब हम आप के नाटकों का एक फेस्टिवल 'प्रेम उत्सव' के नाम से साल में एक बार करते हैं और उसके लिए महीनों भाग दौड़ करते हैं तब भी कोई आगे नहीं बढ़ता अजी आगे बढ़ना तो छोडिये कोई हिंदी उर्दूवाले तो उसे देखने नहीं आते। धीरे धीरे आप को स्कूलों से निकला जा रहा है। पहेले हम आप को हर साल पढ़ते थे अब आप को खोजना पढता है और आप के चाहनेवाले अजी हिंदी और उर्दूवाले आँखे मूँद के बैठें हैं, हिंदी उर्दू कि अकादिमियां चला रहे हैं बड़े बड़े सम्मान पाते है मगर आगे बढ़ कर एक शब्द नहीं कहते... कोई नहीं कहता के प्रेमचंद को किस साजिश के तहेत इस्कूली पुस्तकों से निकला जा रहा है? कौन सी ज़हेनियत इसके पीछे काम कर रही है... आप के दौर में भी आप को ऐसे ही लोग मिले और आप के स्वर्गवास हो जाने के बाद बरसों लोग ये ही कहते रहे के आपकी कहानियां दक्यानूसी हैं, उनमें कोर्स दम नहीं सिर्फ रोना धोना या गरीबी है लेकिन सचाई ये थी के उस वक्त भी किसी ने आप को मन की आँखों से पढ़ा नहीं था और आज भी कोई आप को खुली हुई आँखों से पढ़ना नहीं चाहता। जब के कही उनके मन की चोर खिडकी से उनका ज़मीर झांक कर कहता है भाई प्रेमचंद तो हर दौर के लेखक हैं उन्हों ने कानूनी कुमार लिखा है क्या कानूनी कुमार कल के दौर की कहानी है? उन्होंने मिस पद्मा लिखा है। क्या मिस पद्मा कल का किस्सा है? उन्हों ने बड़े घर की बेटी लिखा है। क्या बड़े घर की बेटी कल की बात है? उन्होंने ठाकुर का कुंवा लिखा है। क्या ठाकुर का कुंवा कल का फ़साना है? उन्होंने कफ़न लिखा है। क्या कफ़न पुराना किस्सा है? उन्होंने 'अफु', 'बेटी का धन', 'रसिक संपादक', 'नमक का दरौगा', 'मासूम

बचा' और न जाने कितनी ऐसी कहानियाँ अपने छोटे से जीवन में लिख दी हैं, जिन्हें पढते पढते तुम्हारा पूरा जीवन निकल जायगा मगर फिर भी वो पूरी नहीं होंगी।

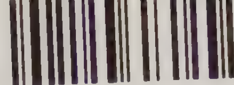
मुंशीजी : बस बस बस भाई बस... तुम तो बहुत गुस्से में दिख रहे हो... देखो मेरी बात सुनो... ये साठे कॉलेज (जहाँ 'आदाब मैं प्रेमचंद हूँ' सिरीज़ के तहेत हर गुरुवार को मुंशजी के नाटक होते हैं) वाले कौन हैं? जो तुम को कम दामों पर हाल देते हैं? ये मैडम कविता मैडम (मैडम कविता रेगे साठ्य कॉलेज कि प्रिंसिपल हैं) जी कौन हैं? जो आप को हमेशा प्रोत्साहन देती हैं? ये कृष्ण गुप्ता कौन हैं? जो हर साल आप के फेस्टिवल में आगे बढ़ के आते हैं। ये अजय कुमार जी (अजय कुमार जी कॉरपोरेशन बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निर्देशक हैं) कौन हैं जो आप को मंगलोर बुलवा कर मेरी कहनियों पर नाटक करवा रहे हैं? आप के दोस्त फारुक नाडियाडवाला कौन हैं जिन्होंने अपनी जगह आप को दी है जहाँ आप रिहर्सल करते हैं? ऐसे बहुत से लोग हैं जो आप पर वक्तन फॉक्तन निगाह करम डालते रहते हैं। ये सब मेरे चाहनेवाले हैं। और इन सब से बढ़ कर आप के परिवार के सदस्य हैं जो आप की हर बात को सरहाते हैं जो अपनी ज़रुरतों को अपने होंठों पर नहीं लाते सब्र के घूंट पी जाते हैं के कंही आप उनकी जरूरतों को सुन कर उदास न हो जाएँ और हमारी कहानियों को पूरा करने के मिशन से पीछे न हट जाएँ... बस अब इजाज़त दीजिए... अब आप से 'आदाब मैं प्रेमचंद हूँ' पुस्तक के चोथे भाग में भेंट होगी... आदाब... (और मैं बहुत देर तक बैठा मुंशजी के चाहनेवालों के बारे में सोचने लगा)

हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी भाषाओं पर मुंशीजी का नज़रिया

देश में ऐसे आदमियों की संख्या कम नहीं है जो उर्दू और हिंदी की अलग अलग और स्वतंत्र उन्नति और विकास के मार्ग में बाधक नहीं होना चाहते। उन्होंने यह मान लिया है कि आरम्भ में इन दोनों के स्वरूपों मे चाहे जो कुछ एकता और समानता रही हो, लेकिन फिर भी इस समय दोनों की दोनों जिस रास्ते पर जा रही हैं, उसे देखते हुए इन दोनों में मेल और एकता होना असम्भव ही है। प्रत्येक भाषा की एक प्राकृतिक प्रवृत्ति होती है। उर्दू का फ़ारसी और अरबी के साथ स्वाभाविक सम्बंध है। और हिंदी का संस्कृत तथा प्राकृत के साथ उसी प्रकार का सम्बंध है। उनकी यह प्रवृत्ति हम किसी शक्ति से रोक नहीं सकते। फिर इन दोनों को आपस में मिलाने का प्रयत्न करके हम क्यों व्यर्थ इन दोनों को हानि पहुँचावे?

यदि उर्दू और हिंदी दोनों अपने आपको अपने जन्म स्थान और प्रचार क्षेत्र तक ही परिमित रखें तो हमें इनकी प्राकृतिक वृद्धि और विकास के सम्बंध में कोई आपत्ति न हो। बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और कन्नड आदि प्रांतीय भाषाओं के सम्बंध में हमें किसी प्रकार की चिंता नहीं है। उन्हें अधिकार है कि वे अपने अंदर चाहे जितनी संस्कृत, अरबी या लैटिन आदि भरती चलें। उन भाषाओं के लेखक आदि स्वयं ही इस बात का निर्णय कर सकते हैं; परन्तु उर्दू और हिन्दी की बात इन सबसे अलग है। यहाँ तो दोनों ही भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा कहलाने का दावा करती हैं। परंतु वे अपने व्यक्तिगत रूप में राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकीं और इसीलिए संयुक्त रूप में स्वयं ही उनका संयोग और मेल आरम्भ हो गया। और दोनों का वह सम्मिलित स्वरूप उत्पन्न हो गया जिसे हम बहुत ठीक तौर पर हिंदुस्तानी ज़बान कहते हैं। वास्तविक बात तो यह है कि भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा न तो वह उर्दू ही हो सकती है जो अरबी और फारसी के अप्रचलित तथा अपरिचित शब्दों के भार से लदी रहती है और न वह हिंदी ही हो सकती है जो

संस्कृत के कठिन शब्दों से लदी हुई होती है। यदि इन दानों भाषाओं के पक्षपाती और समर्थक आमने सामने खड़े हो कर अपनी साहित्यिक भाषाओं में बातें करें तो शायद एक दूसरे का कुछ भी मतलब न समझ सकें। हमारी राष्ट्रीय भाषा तो वही हो सकती है जिसका आधार सर्व सामान्य बोधगम्यता हो – जिस सब लोग सहज में समझ सकें। वह इस बात की क्यों परवाह करने लगी कि अमुक शब्द इसलिए छोड़ दिया जाना चाहिए कि वह फ़ारसी, अरबी अथवा संस्कृत का है? वह तो केवल यह मानदंड अपने सामने रखती है कि जनसाधारण यह शब्द समझ सकते हैं या नहीं? और जनसाधारण में हिंदू, मुसलमान, पंजाबी, बंगाली, महाराष्ट्रीय और गुजराती सभी सम्मिलित हैं। यदि कोई शब्द या मुहावरा या पारिभाषिक शब्द जनसाधारण में प्रचलित है तो फिर वह इस बात की परवाह नहीं करती कि वह कहाँ से निकला है और कहाँ से आया है। और यही हिंदुस्तानी है। और जिस प्रकार अँगरेजों की भाषा अँगरेजी, जापान की जापानी, ईरान की ईरानी और चीन की चीनी है, उसी प्रकार हिंदुस्तानकी राष्ट्रीय भाषा को इसी तौर पर हिंदुस्तानी कहना केवल उचित ही नहीं, बल्कि आवश्यक भी है। और अगर इस देश को हिंदुस्तान न कह कर केवल हिंद कहें तो इसकी भाषा को हिंदी कह सकते हैं। लेकिन यहाँ की भाषा को उर्दू तो किसी प्रकार कहा ही नहीं जा सकता, जब तक हम हिंदुस्तान को उर्दूस्तान न कहने लगें, जो अब किसी प्रकार सम्भव ही नहीं है। प्राचीन काल के लोग यहाँ की भाषा को हिंदी ही कहते थे।



हमारे मुंशीज



मुंशी जी का जनम ३१ जुलाई १८८० में हुवा और देहांत ८ अक्टूबर १९३६ में हुवा।

पिताजी मुंशी अजायब लाल एक पोस्ट आफिस में क्लेर्क थे और माताजी आनंदी घरेलू औरत ।

उनका नाम रखा गया था धनपत राय यानी धन का स्वामी मगर सारी जिंदगी उनकी गुरबत में कट गई। मगर चाचा श्री महाबीर जौ पैसे वाले थे उन्होंने उनको नवाब कहना शुरू किया । तीन लड़कियों पर मुंशीजी पैदा हुवे थे यानी तेंतर । तेंतर के बारे में आम खयाल ये था के वो या तो अपनी माँ की जान लेता है या पिता की या परिवार के किसी सदस्य की । यानी जो शख्स दुनिया में इन घटिया रवायतों को मिटाने के लिए आया था उसका जन्म एक घटिया रवायत में हुवा था । मुंशी जी ने इस रवायत पर कहानी 'तेंतर' लिखी है । उनकी बुनयादी तालीम मदर से में हुई थी जहाँ उन्होंने उर्दू सीखी । उनके माँ बाप बहुत जल्द ही उन्हें छोड कर चले गए। जब वो सात साल के थे तो माताजी स्वर्ग सिधार गयीं और १७ साल की आयु में पिताजी का स्वर्गवास हो गया । वो अब तक अपनी पढाई ही कर रहे थे और घर की ज़िम्मेदारी उनपर आ गई। क्यों के माताजी के देहांत के बाद पिताजी ने दूसरी शादी कर ली थी । दूसरी माँ कुछ ठीक नहीं थी । जो प्यार उन्हें अपनी माँ से मिला था । सौतेली माँ से उसकी आशा भी रखना स्वप्न देखने के बराबर था । उनके सौतेले मामू उनको बहुत तंग करते । उनकी शिकायतें उनके पिताजी से करते और बदले में उन्हें पिताजी की झिडकियां सहनी पड़ती । अभी वो कम उम्र ही थे के मामू ने उनकी शादी पड़ोस के एक गांव में करवादी, लड़की अभूत ही फूहड़ थी इसलिए बहुत दिन वो शादी नहीं टिकी और १८९९ में उससे अलग हो गए । १९०६ में उन्हों ने समाचार पत्र में एक बाल विधवा के पिता की ओर से एक इश्तेहार देखा के उन्हें अपनी बेटी के लिए एक रिश्ता दरकार है और मुंशजी ने उस इश्तेहार पर अपनी अर्जी डाली और शादी तय हो गई शिवरानी देवी उनकी पत्नी बन के उनकी जिंदगी में आ गई।

मुंशीजी ने आम आदमी की भाषा में लिखना शुरू किया उस जमाने में लेखक संस्कृत भाषा का इस्तेमाल बहुत करते थे क्योंकि उसी का चलन था । उस जाने की लेखनी में परियों के किस्से और जादूगरी के नज़ारे थे लेकिन मुंशीजी ने अपनी लेखनी को रोज मर्रा की समस्याओं से जोड़ दिया इसलिए उनको 'मोडर्न हिन्दुस्तानी साहित्य का मेमार' कहा गया ।

आम भाषा का एक नमूना उनकी कहानी नामक का दारोगा में देखने मिलता है :

मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है....

उपरी आय बहता हुवा स्रोत है जिस से सदेव प्यास बुझती रहती है...

लड़कियां हैं कि घांस फूंस की तरह बढती जाती हैं...

मैं तो कगारे का वृक्ष हूँ न जाने कब गिर पड़ूं..

कहानी 'प्रेम का हृदय'

इसलिए घी खिलाती हूँ के तुम जल्दी से काम धंधा करने लगो और मेरे लिए साढी ले आओ...

तो आज कंही चोरी करने जाऊं...

खबरदार जो चोरी की बात की... पहेले मेरा गला काट देना फिर चोरी करना...

नहीं आज के बाद चोरी नहीं करूँगा...

कहानी 'मंदिर मस्जिद'

मस्जिद खुदा का वैसा ही पाक घर है जैसे मंदिर, अगर किसी मुसलमान की गर्दन मंदिर ना पाक करने पर काटी जा सकती है तो हिंदू की गर्दन भी मस्जिद ना पाक करने पर काटी जा सकती है । तुम ने मेरे दामाद को कत्ल किया और मैंने तुम्हारी पैरवी कि थी । जानते हो क्यों ? क्योंकि मैं अपने दामाद को उसी सजा के लायक समझता था जो तुम ने उसे दी । अगर तुम ने मेरे बेटे को या मुझ ही को उस सजा के लिए मार डाला होता तो मैं तुम से खून का बदला न मांगता । वो कुसूर तुम ने किया है । अगर किसी मुसलमान ने मस्जिद में तुम्हें जह्नुम में पहुंचा दिया तो मुझे सच्ची खुशी होती, लेकिन तुम बेहयाओं की तरह वहाँ से बच्च के निकल आए ।

न्या तुम समझते हो खुदा तुम्हें तुम्हारी इस हरकत की सजा न देगा । खुदा का हुक्म : जो उसकी तौहीन करे उसकी गर्दन काट देनी चाहिए । यह हर एक मुसलमान का फर्ज है । चोर अगर सजा न पाय तो क्या वोह चोर नहीं है ? तुम मानते हो या नहीं के तुम ने खुदा की तौहीन की है ?...

मुंशी जी ने यूँ तो ३१५ कहानियाँ लिखी हैं लेकिन कुछ कहानियां ऐसी हैं जिसे वेश्व भर के साहित्य में आला मुकाम हासिल है जैसे :

पंच परमेश्वर	गिल्ली डंडा
ईद गाह	कुसुम
सच्चाई का उपहार	गृहनिति
कफन	बदनसीब माँ
बड़े घर की बेटी	नमक का दारोगा
मिस पद्मा	मोटे राम का सत्याग्रह
पिसनहारी का कुंवा	नादान दोस्त
पूस की रात	पशु से मनुष्य तक
बेटी का धन	सवा सेर गेहूं
मंदिर मस्जिद	शतरंज के खिलाड़ी
बड़े भाई साहब	सद्गति

हम उनकी तकरीबन २९५ कहानियां मनचित कर चुके हैं अब केवल बीस कहानियां बाकी हैं वो भी इस साल के अंत तक संपन हो जाएँगी ।

आलिया खान

(जनर्ल सेक्रेटरी 'आइडिया')

मुजीब खान निस्वार्थ अपनी मंजिल की ओर अग्रसर...



'आदाब मैं प्रेमचंद हूँ' पुस्तक का तीसरा भाग आपके हाथों में है। 'प्रेमचंद श्रासी (प्रेमचंद को पहचानने) के मैदान में मुजीब खान का तीसरा कदम है। जहाँ तक मुंशजी कि कहानियों को ड्रामाई अंदाज़ में पेश करने का तालुक है इस मैदान में मुजीब खान बहुत आगे बढ़ चुके हैं। ३१५ कहानियों का संग मील तय करने में चंद कदमों का फासला है। उसके बाद ये सफर तो मुकमल हो जायगा मगर मुजीब खान इसे सफर को इन्तहा नहीं बल्के इब्तेदा समझते हैं। जिस तरह थियेटर में तीसरी घंटी बजने के बाद ड्रामा शुरू होता है उसी तरह इस तीसरी पुस्तक के बाद 'प्रेम उत्सव' का एक और दौर शुरू हो जायगा। मुजीब खान मुंशीजी की फिक्शन के मैदान में सरबराही का झंडा न सिर्फ भारत में बल्के भारत के बहार भी लहराना चाहते हैं, इससे ये भी साबित होगा के मुंशजी की कहानियाँ आज के दौर में भी तरो-ताज़ा हैं। आज का हिंदुस्तान देहातों में नहीं बल्के शहरों में बसता है, खुसूसन मेट्रो शहर की रहनेवाली नस्लने असल हिंदुस्तान का वो चहेरा नहीं देखा है जो देहातों में बसता था। जहाँ खुश-हाली भी थी बद-हाली भी थी, आमिर उमरा भी थे, सहोकर भी थे, और कर्ज के बोझ तले किसान भी थे। जमाने ने करवट ली। कची सड़कों की जगह एक्सप्रेस हाई वे आ गए। किराना दुकानों की जगह शोपिंग मॉल्स आ गए। बैल गाड़ियों की जगह कारें आ गई। सहोकारों की जगह बैंकों ने ले ली। अगर नहीं बदला तो इंसान का नसीब। पहेले किसान सहोकारों के तकाजों से तंग आ कर मर जाते थे, अब बैंकों के कर्ज के वसूली के डर्र से आत्महत्या कर लेते हैं। आज के इस ज़माने में जहां 'शेख अपनी अपनी देख' का माहोल है। वहाँ प्रेमचंद के ज़माने के 'बोडम', 'शैख़ जुम्मन' और अलगू चौधरी जैसे किरदार हैं जो अपने लिए नही

ूसरों के लिए जीते हैं। 'मंदिर मस्जिद' का चोधरी इतरत अली मुसलमान होते हुवे ी गंगा जल पीता अपने घर में गीता का पाठ करवाता है, गरीब हिंदू मुसलमानों की शादियों में भरपूर मदद करता है। 'पंच परमेश्वर' के अलगू चौधरी और जुमान ोख़ राष्ट्रिय एकता कि मिसाल हैं। मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादीने एक जगह लेखा है 'जब हिंदुस्तान कि आजादी की तारिख लिखी जायेगी उस में प्रेमचंद कि कहानियों का ज़िक्र ज़रूर होगा'।

मुजीब खान मुबारकबाद के पात्र हैं के उन्होंने प्रेमचंद के सन्देश को जन जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठाया है। मुझे आशा है वो अपने इस मिशन में ज़रूर सफलता पायेंगे मेरी शुभ कामनाएं उनके साथ हैं।

काजी मुश्ताक अहमद (पुणे)

(काजी मुश्ताक अहमद प्रसिद्ध उर्दू लेखक हैं उनके हिंदी कहानियों के संग्रह 'जल से बोझल जिंदगी' को २०११ में नेशनल एवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।)



दोनों तरफ से

एक : भैय्या पंडित श्याम सरूप का नाम बहुत सुने हैं उनके बारे में कुछ जानने की इच्छा है...

दूसरा : भैय्या आपको इतना तो पता होगा कि पेशे से वो वकील हैं, ज़बान से कम, दिल, दिमाग और पैर से जियादा काम करते हैं

तीसरा : उनमें बहुत बड़ी खूबी ये है कि वो बहुत सारे कामों में एक साथ हाथ नहीं डालते हैं।

दूसरा : उन्होंने अछूत उद्धार के सुधार के लिए एक अंजुमन खोल रखी है और अपने वक्त फुर्सत और आमदनी का थोड़ा हिस्सा इस काम की नजर रख देते हैं

तीसरा : शाम हुई कचहेरी से कुछ नाश्ता किया बायसिकल उठाई और शहर से जुड़े देहातों में जा पंहुचे वहां कही चमारों के साथ बैठे बातें कर रहे हैं। कही डोमों के बीच बैठे हैं और उनकी ठेठ बोली में उनसे बातें कर रहे हैं।

दूसरा : उनकी सोहबत और हमदर्दी ने साल भर में उनके परगने के अछुतों में बहुत सुधार पैदा कर दी है उन लोगों में सुधार की वजह से शराब खोरी में भी कमी हुई और वारदातें कम हो गई हैं।

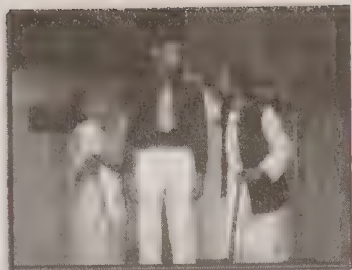
तीसरा : इससे पोलिस इंस्पेक्टर हामिद खान बहुत नाराज़ है

एक : इससे तो अछुतों और पंडित जी में भाइयों वाला रिश्ता बन गया होगा।

दूसरा : और क्या? उनके परगने में तीन सौ मौजे और ऊँची ज़ात की तादाद हज़ार से कम नहीं है उन सभी के साथ पंडितजी का दोस्ताना और भाइयों का सा रिश्ता है।

तीसरा : उनकी शादियों में शरीक होते हैं और रिवाज के मुताबिक वेह्वार ले जाते हैं

दूसरा : कोई अगर बीमार पड़ जाय तो उसे दवाएं देते हैं।



ोसरा : उनकी मोहब्बत का असर ये हुवा की लोग एक दुसरे की इज्जत करना सीख गए।

्सरा : उनकी डोमों चमारों से दोस्ती यहां तक बढ़ी कि उन्होंने एक दिन चमारों के चौधरी की लड़की की शादी में खाना खा लिया।

क : ओ हो ये तो बड़ी आफत वाली बात हो गई।

्सरा : हां हुई तो ...दम के दम में ये खबर पूरे शहर में मशहूर हो गई।

क : बेचारी उनकी पत्नी कोल्सेरी देवी को तो बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा होगा?

ोसरा : अरे भैया वो तो इतनी शरीफ औरत जैसे ईश्वर की गाय न ज़बान की तेज़ हैं न बात–बात में उलझती हैं। अगर कोई चुभती हुई बात कह दे तो सुन के सह जाती हैं मगर उफ़ नहीं करती।

ूसरा : वोही बात उनके दिल में नासूर बन जाती है यह बात पंडितजी समझते हैं इसलिए कभी उनका दिल नहीं दुखाते

एक : तो फिर क्या हुवा?

ीसरा : चौधरी के घर पंडितजी ने खाना तो खा लिया और ये सोचा इसका कोई खास असर नहीं होगा पर जब अगले दिन उनकी पत्नी गंगा अशनान को पंहुची तो एक औरत ने कहा....

औरत : हॉय हॉय ...जरा इन महारानी को तो देखो मर्द तो चमारों में साथ खाना खाय और यह चली गंगा नहाने...

दूसरा : बात कोलेसरी को दिल में लगी। घर आकर खाना बनाया पंडितजी को खिलाया पंडितजी तो कचहेरी चले गये पर उसने न खाया ...

तीसरा : शाम को जब पंडितजी घर लौटे और पत्नी को मुंह ढांपे सोय देखा तो कहा...

पंडित : क्या बात है कोला...ऐसे क्यों पड़ी हो तबियत तो ठीक है?

कोलेसरी : हाँ तबियत ठीक है ऐसे ही लेटी थी...

पंडित : एक देहाती औरत कैश निकलने बैंक गई.. क्लर्क ने कहा यहाँ हस्ताक्षर करो औरत ने कहा कैसे ? क्लर्क ने कहा जैसे ख़त के आखिर



में लिखते हैं, उसने लिखा फ़क़त तुम्हारी राजू की माँ....कमाल है इतने बढ़िया लतीफे पर तुम्हें हंसी नहीं आई एक और सुनो...

कोलेसरी : नहीं मुझे कुछ नहीं सुनना है आपको अच्छुतों की बस्ती में जाना नहीं है क्या?

पंडित : ओ खूब याद दिलाया? आज मांझ गाँव के पासियों के यहाँ शादी है...

(उन तीन लड़को में एक लड़का बाराती और बाकी दो पासी बन गये हैं)

पंडितजी : क्या बात है वही आप लोग यहाँ बैठे हैं बरात आ गई....

दूसरा : हाँ आ गई...

पंडित : तो उनका आदर सत्कार कीजिये यहाँ क्यों मुंह लटकाए बैठे हैं क्या कुछ दहेज़ वहेज का मामला है...

तीसरा : उन्हें शराब चाहिए...

दूसरा : और हमने इनकार कर दिया है...

तीसरा : और कहते हैं औरतें दरवाजे पर नाचें

दूसरा : हमने कहा कि अब हमारे यहां ये रिवाज नहीं है

पंडित : ठीक है मैं बात करता हूँ....जी नमस्ते ...

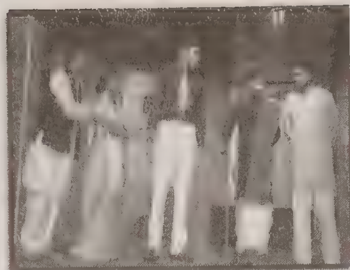
एक : नमस्ते...

पंडित : आप लोग जानते हैं शराब से कितना नुकसान होता है सेहत बिगड़ती है, वो अलग हादसे तक हो जाते हैं, आदमी कही का नहीं रहता अच्छे-खासे आदमी ख़ुशी में आय और घर में हादसा हो जाय तो सारा ख़ुशी का माहौल गामी में बदल जायेगा और दरवाजे पर औरतों को नाचना कहाँ की प्रथा...हम आखिर कब अपनी माँ बहनों की इज़्ज़त करना सीखेंगे...

दूसरा : पंडितजी के मनाने पर वो सब मान गये।

तीसरा : ऐसे मौकों पर वो नौ दस बजे घर आते मगर आज उनका मन नहीं लगा कोलेसरी की मुरझाई हुई तस्वीर आँखों के सामने घूमती रही...

पंडित : आखिर क्या बात हो गई...मेरी ज़बान से तो कोई सख्त बात नहीं निकली.... मुझे तो खयाल नहीं आता के मैंने कुछ कहा हो, जल्दी ह



घर चलना चाहिए...अच्छा भैया आज जरा जल्दी जाना चाहता हूँ, घर का कुछ काम करना है...

ाब : अच्छा भैया नमस्ते...

क : पंडितजी अपनी पत्नी से बहुत प्यार करते हैं...

सरा : बिलकुल भैय्या अगर वो ज़रा मुंह लटका दें तो पंडितजी बेचैन हो जाते हैं...

ंडित : क्या बात है कोलेसरी तुम उदास क्यों हो?

ोलेसरी : उदास तो नहीं हूँ

ंडित : तुम्हारी तबियत कैसी है?

ोलेसरी : तबियत में क्या हुवा है, देखते तो हो अच्छी भली हूँ

ंडित : मैं ये न मानूंगा। तुम्हारे उदास होने की ज़रूर कोई न कोई वजह है क्या मुझे तुमसे ये पूछने का हक नहीं?

ोलेसरी : आप मेरे दिल और जान के मालिक हैं आपको हक न होगा तो किसको होगा

ंडित : तो मुझसे ये पर्दा कैसा है? मैं तो अपने दिल की कोई बात तुम से नहीं छुपाता।

कोलेसरी : क्या मैं कुछ छुपाती हूँ?

पंडित : अबतक तो नहीं छुपाती थी, मगर आज छुपा रही हो। आँखें मिलाओ मेरी तरफ देखो...लोग कहते हैं, औरतें एक निगाह में मर्दों की मोहब्बत का अंदाजा लगा लेती हैं, मगर शायद तुमने अब तक मेरी मोहब्बत की थाह नहीं पाई है यकीन मानो, तुम्हारी इस अफ्सुर्दगी ने मुझे बेचैन कर दिया है अगर इस वक्त भी नहीं बताओगी तो मैं समझूँगा तुम्हें मुझ पर एतबार नहीं रहा।

कोलेसरी : मेरे दिल में जो कांटा खटक रहा है उसे आप निकालेंगे?

पंडित : कोला तुम ये सवाल पूछ कर मुझ पर ज़ुल्म कर रही हो। मैं और मेरा सब कुछ तुम पर निसार है तुम्हें मेरी तरफ से ऐसा ख्याल नहीं रखना चाहिए।

कोलेसरी : मेरा ईश्वर जानता है कि मैंने तुम पर कभी शक नहीं किया। मैंने ये



सवाल इसलिए पूछा था के शायद तुम मेरे उदास होने का सबब सुनकर हंसी में उड़ा दो। मैं ये जानती हूँ कि जो कुछ कहूँगी वो मुझे नहीं कहना चाहिए ये भी जानती हूँ के आपको इस बात के मानने में दिली सदमा होगा इसलिए मैं आपसे छुपाना चाहती हूँ बात ही तो थी, दो चार महीने में भूल जाती हूँ मगर आपकी इस धमकी ने मुझे मजबूर कर दिया है जिस दिन आप ये ख्याल करेंगे के मुझे आप पर एतबार नहीं है, तो जानते हो मेरी क्या गत होगी...यह ही धमकी मुझे मजबूर कर रही है।

पंडित : हाँ हाँ बेखौफ कहो, मुझे अब सब्र नहीं।

कोलेसरी : आप अच्छुतों के साथ मिलना जुलना, खाना पीना छोड़ दें।

पंडित : (कुछ देर सोच के) ठीक है...बहुत अच्छा...तुम्हारे हुक्म की तामील होगी दिल को सदमा बेशक होगा लेकिन कोई मुजाएका नहीं...सिर्फ इतना बता दो के ये हुक्म किसकी इमा से दिया गया है...या दिल में खुद बखुद पैदा हो गया

कोलेसरी : मुझे औरतें ताना देती हैं...और मुझसे उसकी बर्दाश्त नहीं होती। उनकी ज़बान पर मेरा कोई दावा नहीं है, वो जो चाहें कहें आप पर मेरा दावा है..इसलिए आपसे कहती हूं।

पंडित : बहुत अच्छी बात है ये ही होगा।

कोलेसरी : अब आपसे मेरी एक और बिनती है...मैंने आपको अपने दिल की कैफियत आपसे साफ़ साफ़ बयान कर दी। मर्दो को तानो की परवाह नहीं होती है, हम औरतें कमज़ोर होती हैं, हमारा दिल कमज़ोर होता है...उसमें तेज़ धार वाला ताना आसानी से चुभ जाता है, मगर इसका ख्याल न करें मुझे तानों से बचने के लिए आप अपने ऊपर जबर न कीजिये मैं ताने सुन लूंगी। जियादा जी जलेगा तो बाहर आना जाना औरतों से मिलना जुलना बंद कर दूंगी।

पंडित : कोला मुझसे ये गवारा न होगा के मेरे खातिर तुम ताने सहो तुम्हारे नाज़ुक जिस्म पर तानो के ज़ख्म न लगने दूँगा, तुम्हारे दिल में रंज का वास हुवा तो मेरी मोहब्बत कहाँ रहेगी बोलो, अब मुस्कुरा दो... मुस्कुराओ न...(lights off)

एक : फिर क्या हुवा?



दूसरा : एक हफ्ता गुजर गया और पंडितजी देहातियों की तरफ नहीं गया, अछूत भाइयों के साथ बिरदारना रिश्ता कायम करना उन्हें इंसान समझना उन्हें जहालत से निकलना यही पंडितजी ने अपनी ज़िन्दगी का mission समझा था।

तीसरा : शायद इसीलिए वो उदास भी रहने लगे थे।

एक : ज़ाहिर है उदास तो रहेंगे ही, भैय्या इंसान को ज़िन्दगी का लुत्फ़ उस हालत में हासिल होता है जब तक उसे इस बात का यकीन रहता के मैं अपने फ्रायेज़ को अंजाम दे रहा हूँ। दुनिया में ऐसे बेशुमार बंदगान-ए-खुदा हैं जो यही नहीं जानते के उनके श्ख्सी और कौमी फ्रायेज़ क्या हैं मगर ऐसे आदमियों को इंसान कहना भूल है...जिन आदमियों को बुरे काम की चाट पद जाती है वो ये जानते हुए भी के हम जो कुछ कर रहे हैं अपने उस काम से तौबा नहीं करते और जायज मौका न पाकर न जायज़ मौकों से फायदा उठाते हैं। जुवारी को कितना ही समझाओ, कितना ही धमकाओ मगर वो जुवा खेलने से बाज़ नहीं आता। शराबी को चाहे पिंजरे में कैद करदो वो आजाद होते ही सीधे शराबखाने की राह लेंगा ये बुरे कामों का नशा है अच्छे कामों का नशा इस से ज्यादा बेचैन करने वाला होता है।

दूसरा : दुरुस्त फरमाया आप ने...पंडितजी दिन भर तो अपने कामों में मसरूफ रहते मगर शाम होते ही वो बेचैन हो जाते, अपने बगीचे में तनहा बैठे रहते, बाज़ ओउकात अपनी कमजोरी पर झुंझला जाते और सोचते.....

पंडित : चलके कोलेसेरी से कह देता हूँ कि मैं कौम को ज़ात पर कुर्बान नहीं कर सकता ...नहीं मेरी बातों का कोला पर कोई असर न होगा। मेरी मोहब्बत में मतवाली निक शरीफ गरीब कोला पर क्या कुछ न बीत जाएगी ...नहीं मेरी जान से अज़ीज़ कोला, तुम जैसी अनमोल चीज़ पाकर मेरी हिमाकत है अगर मैं अपने तईं बद नसीब ख्याल करूँ...तुम्हारी ख़ुशी के लिए मैं सब कुछ सह सकता हूं। अगर तुझे



आज मालूम हो जाय के मैं बेचैन हो रहा हूँ, तो मुझे यकीन है के तू आज ही मेरे लिए, ताना सहना क्या चीज़ है...सारी दुनिया में अंगुश्त नुमा बनना पसंद करेगी, तेरी इस मोहब्बत के बदले मेरे पास क्या है? कौमी फ्रायेज़ बेशक इंसान के सब फ्रायेज़ से बाला (ऊँचे) हैं, मगर कभी-कभी और ख़ास-ख़ास हालातों में कौम को ज़ात के लिए छोड़ना पड़ता है। राजा रामचन्द्रजी का कौमी फर्ज़ था के वो अवध में रहकर अपनी रिआया पर इन्साफ और आसाईश की बरकतें फैलाते मगर उस कौमी फर्ज़ को उन्होंने बाप की अता-अत के मुकाबले में कुछ न समझा, जो उनका खास जाती फर्ज़ था। राजा दशरथ का कौमी फर्ज़ था के वो अपना राजपाठ रामचंद्र को सौंपते, क्योंकि वो जानते थे के रामचंद्र अवधवालों की आँखों की पुतली हैं, मगर उन्होंने उस कौमी फर्ज़ को अहेद परवरी पर निसार कर दिया, जो उनका ख़ास जाती फर्ज़ था।

तीसरा : यहाँ ये बात भी समझने की है कि पंडितजी ये समझ रहे थे कि कोलेसरी उनके दिल की कैफियत से वाकिफ नहीं है। जिस दिन ये बात हुई उस दिन से आज तक एक लम्हा भी ऐसा नहीं गया जिसमें ये ख्याल उसके दिल में चुभकियाँ न लेता रहा हो...

कोलेसरी : मैंने उन पर बहुत ज़ुल्म किया है...उनके चेहरे की मुस्कुराहट ही न रही और ही खाने पीने का शौक..मैं भी कैसी खुदगर्ज़ हूँ कैसी कामिनी, कैसी ओछी..एक बदज़बान, सफला मिजाज़ औरत के ताने सुनकर मैंने उन पर इतना बड़ा ज़ुल्म किया। मेरे लिए अपने ऊपर इतना जबर करते हैं और मैं एक ताने का सदमा न सह सकी। (lights off)

एक : आखिर पंडितजी के अच्छुत भाइयों ने इस पर कोई वाद विवाद नहीं किया?

दूसरा : नहीं उन्होंने पहेले तो ये सोचा कि मुमकिन हो उनकी तबियत ठीक नहीं न हो...या किसी मुक़दमे की पैरवी में मसरूफ हों, या सैर करने कंही बाहर चले गये हों।

तीसरा : एक हफ्ते बाद जब उन लोगों से सब्र न हुवा तो लोग पंडितजी के मकान पर पंहुचने लगे...



दूसरा : पंडितजी ने पत्नी की तबियत का बहाना कर दिया इस तरह एक हफ्ता और गुजर गया...

तीसरा : लेकिन अच्छुत भैय्यों की बेचैनी बढ़ती गई आखिर एक दिन उन में से एक आदमी हाकिम नादिर अली खान को ले आया

(दूसरा जो अब हाकिम की भूमिका में है पहले के साथ आकर पंडितजी के सामने बैठ जाता है)

दूसरा : मुझे ये सुनकर कमाल अफ़सोस हुवा कि अहलिया मुक्र्मा अरसा दो हफ्ते से अलील हैं,और अफ़सोस से जियादा इस अम्र की शिकायत है कि जनाब ने मुझे जरा भी इत्तेला नहीं दी, वरना मर्ज़ इस कद्र टूल न खींचता, क्या शिकायत है?

पंडित : जी, ये ही कुछ निस्वानी (औरतो की बिमारी) शिकायतें..भाई औरतों को अमोमन जो बीमारियाँ होती हैं वो उन्ही से परेशान थी ... मगर अब तो आप के फैज़–ओ–कर्म से तबिय्यत रूह बा राह है। फिलहाल एक लेडी डॉक्टर से इलाज चल रहा है...आप जानते हैं ये अंग्रेजी तहजीब का दौर है...अंग्रेजी इलाज से लोगों को जियादा अकीदत हो जाती है... और मरीज़ को उसी हाकिम डॉक्टर के इलाज से फायदा होता है जिस पर उसे अकीदा हो इसी वजह से जनाब को तकलीफ नहीं दी।

दूसरा : जी बजा फ़रमाया आपने किस लेडी डॉक्टर से इलाज चल रहा है?

पंडित : उन्ही मिस बोगन का...

तीसरा : इसे किस्मत की खराबी कहिये या कुछ और कल्लो नै मिस बोगन को लिया और वहाँ पंहुच गया...

पंडित : अरे मिस बोगन आइये–आइये औरतों के कमरे में ही आ जाइए...सुनो ..इस वक्त अजीब हालत में जान मुब्तला है...मैंने तो तुम्हारी बीमारी का बहाना किया के किसी तरह उन आदमियों से पीछा छुटे मगर उन्होंने आज हकिम नादिर अली खान और मिस बोगन को लाकर सर पर सवार कर दिया। मिस साहेबा बहर ही खड़ी है, बोलो क्या कहूँ...

कोलेसरी : तो मैं बीमार हो जाऊं, क्यों?



पंडित : तुम्हारे दुश्मन बीमार हों

कोलेसरी : दुश्मनों के बीमार होने से काम नहीं चलेगा, तुम मिस बोगन को लाओ मैं लिहाफ ओढ़कर लेट जाती हूँ...

पंडित : आ जाइए मिस बोगन... ....(मिस बोगन आती हैं)

बोगन : बिमारी जड पकड़ गई है... बुखार बाहर नहीं निकलता...मगर कलेजे पे है...क्यों तुम्हारे सर में दर्द है न...?

कोलेसरी : सर तो फटा जा रहा है...फोड़ा हो रहा है।

बोगन : भूक नहीं लगती...

कोलेसरी : दाने की तरफ देखने को जी नहीं चाहता ....

बोगन : ये दवा लिख दिया है मंगवालो...(मिस बोगन चली जाती है)

पंडित : भाई आप लोगों ने नाहक ही तकलीफ की, उनकी तबियत तो अब अच्छी हो चली है ...खैर आप लोगों का शुक्रिया...
(सब चले जाते हैं पंडितजी हंसने लगते हैं)

पंडित : जो कुछ न करना था वो सब आज करना पड़ा क्या अब भी देवी जी न पसीजेगी (पर कोलेसरी के चहेरे पर हंसी नहीं है)

कोलेसरी : मैंने इन पर कितना ज़ुल्म किया है..आज उनके दिल पर क्या बीती होगी, जिसने ज़िन्दगी भर झूठी बात मुंह से न निकाली, उसे आज मेरे बदौलत झूठ को ओढना बिछौना बनाना पड़ा। अगर उन्होंने झूठ बोलना गंवारा किया होता तो आज दीदार गंज की रियासत हमारे कब्ज़े में होती...ऐसे सच्चाई पर मरने वाले आदमी की मैंने ये दुर्गत की...क्या इसीलिए मैं इनकी किस्मत की शरीक हूँ ? मेरा काम है उनसे हमदर्दी करना, नेक कामों में उनकी मदद करना, नेक सलाह देना, तस्कीन देना इन सब फ्रायेज़ के बदले उन्हें झूठ के जाल में फँसा रही हूँ। ईश्वर मेरा गुनाह माफ़ करना। मेरा फर्ज़ था इस कार–ए–खैर में, मैं उनका हाथ बटाती..ये देहाती कैसे सच्चे हैं..कैसे बे रिया? कैसे मोहसिन परस्त? कैसे दिल के फ़य्याज़? ऐसे शरीफ आदमियों की खिदमत करने से मैंने अपने पति को रोक दिया? सिर्फ इसलिए कि एक बदमिजाज औरत ने मुझे ताना दिया था और इतने पर आसूदा होकर अब



मैं उन्हें ज़बरदस्ती झूठ बोलने के लिए मजबूर करती हूँ, बावजूद मेरी कमिनी ज़ियादातियों के इस नेकी से भी जियादा नेक, शराफत से भी जियादा शरीफ, मेरे रहम दिल, मेरे पाक नफस पति का दिल ज्यों का त्यों है, वो समझते हैं मैं बेवक़ूफ़ हूँ, जाहिल हूँ, कमज़ोर हूँ, जिद्दी हूँ और उन कमजोरियों को अपने विशाल मोहब्बत के दमन में छुपा लेते हैं। मैं कैसी तंग दिल हूँ, इस काबिल भी नहीं के उनका पैर धोऊ ...अज जब मिस बोगन को रुखसत करके आए तो कैसे हंस रहे थे कैसी पाक हंसी थी सिर्फ मेरा दिल रखने के लिए, सिर्फ मेरा गम गलत करने के लिए, प्यारे मैं सर से पैर तक बुराइयों से भरी हूँ, मैं ओछी हूँ तुम मुझे अपने प्रेम की दासी समझते रहना। (lights off)

पंडित : सुनो मैं दो तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ

कोलेसरी : कहाँ?

पंडित : शहर के बाहर एक मुकदमा है भागलपुर जाना है

कोलेसरी : क्या वही ?

पंडित : कल ही तारिख है

कोलेसरी : कब तक लौटेंगे?

पंडित : तीन दिन लग जायेंगे

कोलेसरी : अपना खयाल रखियेगा और खाना बराबर खाईयेगा (lights off)

दूसरा : पंडितजी तीन दिन का वादा करके गये थे पर उन्हें चार दिन लग गये खाई जब अपने मोहल्ले में पहुँचे तो उन्हें संपत चौधरी मिल गया....

पंडित : (तीसरे से जो संपत चौधरी बन चुका है) चौधरीजी कहाँ के धावे पर हैं?

तीसरा : पाल्ग्र ...आप तो कल आवे का रहे...देर काहे हुई

पंडित : कल न आ सका...और तो सब कहिरियत?

तीसरा : सब आप की किरपा, आज तो आप के यहाँ बड़ा जलसा है।

पंडित : मेरे यहाँ? कैसा जलसा?

तीसरा : बहूजी ने सभा करी है...हम लोगन की सब औरतें नेवते में आई है



दूसरा : पंडितजी जब घर में पंहुचे तो दहकानी औरतों को बैठी पाया और उनसे खूब हंस हंस कर बातें कर रही थी। ये वो ही कोलेसरी थी जो अच्छुतों से बात करने पर पंडितजी से नाराज़ हो गई थी और आज उसका ये रंग... कही औरतों को उपदेश दे रही है..उस ने औरतों के पैरों को अपने आँचल से छु कर उन्हें बीड़ा किया, पंडितजी ख़ुशी से झूम उठे पंडितजी का आलम ये था गोया उन को राज तो नहीं कोई इलाका मिल गया हो...
वो औरतों के बीच आए और कहा...

पंडित : बहनों कोला बीमार नहीं थी..इन्होने मुझे तुम लोगों से मिलने जुलने को मना किया था और आज इन्हों ने खुद तुम सब को बुलाया है और तुम से नाता जोड़ा है। मुझे इस वक्त जितनी ख़ुशी है उस का अंदाज़ा तुम लोग नहीं कर सकती...इस ख़ुशी में, मैं एक एक हज़ार रूपए से दस गाँव में लेन देन की कोठियां खोलूँगा और वहां तुम लोगों को बिना सूद के रूपया दिया जायेगा तुम को महाजनों से रूपया लेने में एक आना दो आना रूपया सूद देना पड़ता है इन कोठियों के खुलते ही तुम महाजनों के बंधन से अज़ाद हो जाओगे और इन कोठियों का इंतज़ाम उन्ही के जिम्मे होगा जिन्हों ने तुम को नेवता देकर बुलाया है।

तीसरा : सारी औरतें उठ गई और आस्मां की जानिब हाथ उठाकर पंडितजी को दुवाएं देने लगीं

कोलेसरी : वाह ये ज़हमत मेरे सर डाल दी

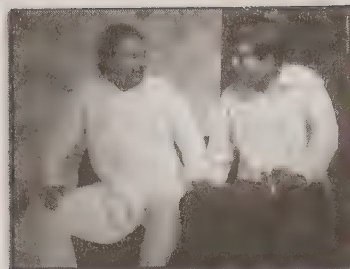
पंडित : पानी में पैर रखा है तो तैरना सीखो

कोलेसरी : मुझे हिसाब किताब कुछ नहीं आता

पंडित : सब खुद आ जायेगा तुम्हें उपदेश करना कब आता था तुम तो औरतों से बोलती लजाती थी। अभी दो हफ्ते हुए। तुम्ही ने उन लोगों से मिलने के लिए मना किया था, आज तुम उन्हें अपनी बाहें समझ रही हो तब तुम्हारा दांव था अब मेरा दांव है।

कोलेसरी : तुमने मुझे फंसाने के लिए जाल फैलाया था।

पंडित : ये जाल दोनों तरफ से फैला हुवा है।



मामता

बाबु रामरखा : बन्दे को बाबु राम रखा कहते हैं, दिल्ली में रहता हूँ, निहायत ही अपटू डेट हूँ, मेरी महमान नवाजी की पूरे मोहल्ले में धूम रहती है, मेरे दोस्त अक्सर मेरे यहाँ जमा होते हैं, टेनिस खेलते हैं, ताश खेलते हैं खाते पीते हैं मेरी तारीफ करते हैं और चले जाते हैं मेरा कई बँकों में हिस्सा है कई दुकाने हैं आमदनी बहुत है।

दोस्त : मगर बाबु साहेब को इतनी फुर्सत नहीं है कि उनकी देख भाल करें महमान नवाजी एक पाक फ़र्ज़ है वो एक सच्चे दोस्त और महमान की तरह जोश में कहा करते थे..

बाबु : महमान नवाजी शुरू ही से हिन्दुस्तानियों की ख़ास खूबी रही है। हम इस लिहाज़ से दुनिया में सब से अलग हैं, हम सब कुछ खो बैठे हैं, मगर जिस दिन हम में यह खूबी बाकी नहीं रहेगी, वो दिन हिन्दू कौम के लिए शर्म ज़िल्लत और मौत का दिन होगा।

दोस्त : मगर बावजूद इन महमान नवाज़ियों के मिस्टर राम रखा देश की जरुरतों के मामले बेखबर न थे वोह देश की तहरिकों में बड़े जोश से हिस्सा लेते यहाँ तक साल में दो बलके कभी तीन तकरीरें ज़रूर तैयार कर लेते तकरीरें बहुत अच्छी होती खूब तालियाँ पड़ती तक़रीर ख़तम होने पर हम अक्सर उन्हें गोद में उठा लेते और हैरत से कहते ....

दोस्त १ : यार तेरी आवाज़ में तो जादू है...इससे जियादा क्या चाहिए कौम की ऐसी खिदमत करना कोई छोटी बात नहीं है

दोस्त २ : नीची जातों के सुधार के लिए दिल्ली में एक सोसाइटी थी। बाबु साहब उसके सेक्रटरी थे और इस काम को गैर मामूली दिलचस्पी से अंजाम देते थे।

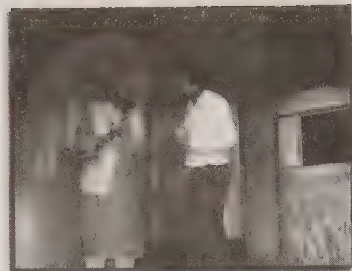


दोस्त ३ : वो बेजा रस्मों की मुखालिफत करते थे। होली के दिनों में जब चमार और कहार शराब के मतवाले होकर फाग गाते और दफ बजाते निकलते तो उन्हें सदमा होता।

दोस्त १ : अपने पिताजी के मरने के बाद अपनी विधवा माँ से अलग हो गए। इस काम में उनकी पत्नी खास मददगार थी। विधवा माँ अपने बेटे और बहु के साथ नहीं रह सकती, इससे बहु की आज़ादी में फर्क आता है। बहु को जलाना और कुढाना सास की तबियत है, इसलिए बाबु राम रखा अपनी माँ से अलग हो गए। हाँ इसमें कोई शक नहीं के उन्होंने दस हज़ार रुपए अपनी माँ के नाम पे बैंक में रख दिया था ताकि उसके सूद से उनका खर्च चलता रहे। बेटे की इस हरकत पर माँ का दिल ऐसा टुटा कि वो दिल्ली छोड़ कर अयोधिया चली गई। बाबु साहेब कभी कभी बावजूद मिस्सेस राम रखा की मुमानियत के उनसे मिलने अयोधिया जाया करते थे, मगर वो दिल्ली आने का कभी नाम नहीं लेती थीं।

दोस्त २ : उसी मोहल्ले में एक सेठ गिरधारी लाल रहते थे लाखों का लेनदेन करते थे, हीरे जवाहिरात का रोज़गार करते थे बाबु राम रखा के दूर के रिश्ते में साढू होते थे रुपियों की ज़रुरत होती तो सेठ गिरधारीलाल के यहाँ से बेतकल्लुफ माँग लिया करते थे आपस का मामला सिर्फ रुक्के (सादे कागज) पर था न कोई रहन, न ज़मानत ना स्टंप न शहादत। मोटर कार के लिए दस हज़ार की ज़रुरत हुई वहीं से आया, घोड़ दौड़ के लिए एक ऑस्ट्रेलियन घोडा डेढ़ हज़ार में लिया गया वो भी सेठजी के यहाँ से आया रफ्ता-रफ्ता कोई बीस हज़ार का मामला हो गया दो तीन साल गुज़र गये गिरधारीलाल एक दिन बाबु राम रख के घर पंहुचे।

गिरधारीलाल : भाई साहेब मुझे एक हुंडी का रुपया देना है अगर आप मेरा हिसाब कर दें तो अच्छा होगा।



बाबु : भाई इस वक्त जरा मैं जल्दी में हूँ फिर देख लूँगा, इस वक्त माफ़ कीजिये और फिर इतनी जल्दी क्या है?

गिरधारीलाल : आप को जल्दी नहीं है मुझे है मेरा दो सो रूपया माहवार का नुकसान हो रहा है

बाबु : भाई साहेब मुझे इस वक्त एक पार्टी में जाने में देर हो रही है, पीछे कल में खुद हाज़िर हो जाऊँगा

गिरधारीलाल : तो ठीक है कल हिसाब साफ़ हो जायगा।

दोस्त ३ : बाबु राम रखा को सेठजी का व्यवहार बहुत बुरा लगा पार्टी में भी नहीं गए तुरंत मुंशजी को बुलाया खाते देखे मगर जूँ जूँ खाते देखते उनका दिल बैठता जाता, आराम कुर्सी पर गिर पड़े। दूकान का माल बिका मगर रकम बकाया में पड़ी हुई थी। कई ग्राहकों की दुकाने टूट गई। कलकत्ता के आढ़तियों से जो माल मंगाया था उसकी पेमेंट की तारीख भी सर पर आ गई और यहाँ रुपए भी वसूल नहीं हुये दुकानों का ये हाल; और बैंक का उस से बदत्तर जूं जूं सुबह आती जाती उन का दिल बैठता जाता।

बाबु : गिरधारीलाल शरीफ आदमी हैं अगर अपना दुःख सुनाऊँगा तो ज़रूर मान जायगा।

दोस्त : वो कमरे से बाहर नहीं निकले न मुंह धोया न नाश्ता किया और न खाना आखिर छोटा बेटा उनको बुलाने आया

बेटा : आज खाने क्यों नहीं चलते

बाबु : भूक नहीं है

बेटा : क्या खाया?

बाबु : मन की मिठाई



बेटा : और क्या खाया?

बाबु : मार

बेटा : किसने मारा?

बाबु : गिरधारीलाल ने (fade out)

दोस्त १: मरीज़ को जब जीने की आस नहीं रहती तो वो इलाज करना छोड़ देता है रात किसी तरह उन्हों ने काटी और दूसरी सुबह गिरधारीलाल के घर पहुँच गए।

बाबु : हजरत मैं आप का हिसाब नहीं कर सकता

गिरधारीलाल : क्यों?

बाबु : इसलिये के बिलकुल मुफलिस कलांच हूँ, मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है आप अपना रूपया जैसे चाहें वसूल करे।

गिरधारी : आप ये कैसी बातें कर रहें हैं

बाबु : बिलकुल सच्च।

गिरधारी : दुकाने नहीं हैं?

बाबु : दुकाने आप मुफ्त ले जाएँ

गिरधारी : बैंक के हिस्से?

बाबु : वो तो कब के उड़ गये

गिरधारी : जब ये हाल था तो आप को मुनासिब नहीं था के मेरे गले पर छुरी फेरते।

बाबु : मैं आप के उपदेश सुनने नहीं आया हूँ (वो बाहर चले जाते हैं)

दोस्त २ : सेठजी ने फ़ौरन नालिश दाएर की बीस हज़ार असल और पांच हजार सूद...डिक्री हो गई, मकान नीलाम पर चढ़ा पन्द्रह हज़ार की जायदाद पांच हज़ार में निकल गई, दस हजार की मोटर चार हज़ार में उड़ गई सब कुछ तबाह हो गया। इज़्ज़त, आबरू माल सब मिटटी में मिल गये। बहुत तेज़ दौड़ने वाला शख्स अक्सर मुँह के बल गिरता है।

दोस्त ३ : इस वाकिए के कुछ दिनों बाद दहली मुनिसिपल्टी के मेम्बरों का इंतेखाब हुवा एक तरफ गिरधारीलाल खड़े हुये और दूसरी तरफ



बाबु रामरखा के दोस्त फैज़ुर्रहमान खान थे बाबु रामरखा। यूँ तो तकरीर करने में माहिर थे ही उन्हों ने ऐसी ऐसी लगती बातें की, के सेठ गिरधारी लाल आग बगुला हो गये।

गिरधारी : मैं हरामखोर हूँ, सूदखोर हूँ, ऐयाश हूँ खैरियत है, तुम ने मेरा नाम नहीं लिया मगर अब भी तुम मेरे काबू में हो।

दोस्त : अजी सेठजी आप को तो उन्हें सबक सिखाना चाहिए।

गिरधारी : अजी मैं उन्हें छोड़ूँ गा नहीं

दोस्त : (बाबु राम रखा से) राम रखाजी आप तो कामयाब हो गए हर तरफ आप की वाह वाही है।

बाबु : आज गिरधारी लाल को बता दूंगा आज उसे मालूम होगा के दौलत दुनिया की कुल नेमतों को मुहिया नहीं कर सकती। जिस वक्त फैज़ुरहमान के वोट जियादा निकलें गे और मैं तालियाँ बजाऊंगा उस वक्त गिरधारीलाल का चहेरा काबिल ए दादी होगा खिसिया जायेगा , हवाईयाँ उड़ने लगेगी, आँखें न मिला सकेगा, शायद मुझे फिर मुँह न दिखाए।

दोस्त २ : थोड़ी देर में वोटिंग शुरू हुई, थोडी देर में चैर्मन साहेब ने फैसला सुनाया सेठ गिरधारीलाल की शिकस्त हुई और फैज़ुर्रहमानने मैदान मार लिया। बाबु रामरखा उच्छल पड़े गिरधारीलाल का चहेरा उतर गया। एक वकील साहबने जब हमदर्दी के दो बोल बोले तो...

दोस्त ३ : सेठजी मुझे आप की शिकस्त का बहुत अफ़सोस है..मैं जनता कि अगर यहाँ मुबारकबादी की बजाय मातम पुरसी का फर्ज अदा करना पड़े गा तो हरगिज़ यहाँ न आता, मैं तो सिर्फ आपके खयाल से यहाँ आया था ।

गिरधारीलाल : वकील साहब मुझे इसका कुछ अफ़सोस नहीं, कौन रियासत निकल



गई खामखा की उलझन, फ़िक्र , परेशानी रहती थी चलो अच्छा हुवा गला छुटा, अपने काम में हर्ज होता था मुझे सचमुच दिल से ख़ुशी हुई ये काम तो बेकामों का है घर पर न बैठे रहे येही बेगार की मेरी हिमाकत थी, के इतने दिनों तक आँखे बंद किये बैठा रहा।

दोस्त १ : लेकिन सेठजी जो कह रहे थे वो दुरुस्त नहीं था। उनका दिल तो कुछ और ही कह रहा था। दूसरी तरफ बाबु राम रखा बहुत खुश थे मगर उनकी ख़ुशी बहुत देर तक कायम नहीं रही गिरधारीलाल ने अपना काम कर दिया, दीवानी के तीन सिपाहियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

दोस्त : जब ये खबर राम रखा की पत्नी को मिली तो वो बहुत मचली और उन्हों ने सेठ गिरधारीलाल को खत लिखा।

गिरधारीलाल : बाबु रामरखा की पत्नी का खत आया है..सेठजी तुम्हें अपनी दौलत का घमंड ने अँधा कर दिया है, मगर किसी का घमंड यूँ नहीं कायम रहता। कभी न कभी ज़रूर नीचा होता है। अफ़सोस है के कल शाम को जब तुम ने मेरे प्यारे पती को गिरफ्तार कराया, मैं वहां मौजूद न थी वरना अपना और तुम्हारा खून एक कर देती। तुम दौलत के नशे में भूले हुये हो मैं उसी दम तुम्हारा नशा उतार देती। एक औरत के हाथों ज़लील हो कर तुम फिर कभी किसी को मुंह दिखाने के लायक न रहते। खैर इस ज़ुल्म का बदला तुम्हें किसी न किसी तरह ज़रूर मिल जायेगा मुझे उस दिन चैन आयेगा जब तुम्हारे खानदान का नमो निशान मिट जायेगा ....अच्छा अब तुझे बताऊँगा मैं तेरे परिवार के साथ और क्या कर सकती हूँ।

औरत : सुनिए...

गिरधारीलाल : माता कहाँ से आना हुवा

औरत : मैं अयोधिया से आयी हूँ।

गिरधारीलाल : अच्छा अब श्री अयोधिया से आई हैं, उस नगरी का क्या कहना



देवताओं की नगरी है। बड़े भाग थे आप के दर्शन हुय यहाँ आप का आना कैसे हुवा?

औरत : मकान तो मेरा यहीं पर है।

गिरधारीलाल : अच्छा तो आप का माकन इसी शहर में है, तो आप ने माया जंजाल को त्याग दिया? वो तो मैं पहेले ही समझ गया था ऐसी पाक आत्माएं इस दुनिया में बहुत कम हैं। ऐसी देवियों के दर्शन बहुत दुर्लभ होते है। आपने मुझे दर्शन दिए बड़ा एहसान किया, मैं इस लायक नहीं कि आप जैसे महत्माओं की कुछ खिदमत कर सकूँ मगर, जो काम मेरे लायक होगा मैं आपके लिए करूँगा। यहाँ सेठ सहोकारों ने मुझे बहुत बदनाम कर दिया है मैं सबकी आँखों में खटकता हूँ इसका सबब इसके सिवा कुछ नहीं के जहाँ वो लोग सूद पर निगाह रखते मैं भलाई पर निगाह रखता हू अगर कोई बुज़ुर्ग मुझसे से मामला करने आता है तो यकीन कीजिये मुझे उसकी जबान फेरते नहीं बनती कुछ तो बुढ़ापे का अदब कुछ उनके दिल के टूट जाने का खौफ कुछ ये ख्याल के कहीं ये दगाबाजों के पंजे में न पड़ जाएँ मुझे उनकी फ्रमईशों की तामील पर मजबूर कर देता है मेरा उसूल है के अच्छी जायदाद और कम सूद मगर आपसे इस किस्म की बातें फुजूल हैं आप से तो घर का मामला है मेरे लायक जो काम हो मैं हाज़िर हूँ।

औरत : मेरा काम आप ही से हो सकता है।

गिरधारीलाल : शौक से कहिये?

औरत : मैं आप के सामने भिकारिन बन कर आई हूँ, आप के सिवा कोई मेरा सवाल पूरा नहीं कर सकता।

गिरधारीलाल : शौक से कहिये।

औरत : मेरा सवाल रद्द मत करना, मैं ने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया।



गिरधारीलाल : कहिये कैसे?

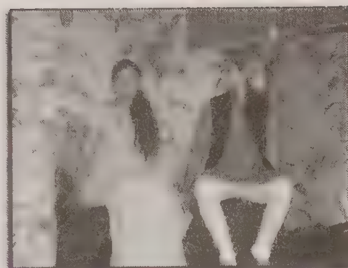
औरत : आप रखा को रिहा कर दीजिये।

गिरधारीलाल : उसने मुझे नुकसान पंहुचाया है उसका घमंड तोड़कर रहूँगा।

औरत : कुछ मेरा, मेरे बुढ़ापे का, मेरे हाथ फैलाने का, कुछ अपनी बड़ी का खयाल करोगे बेटा। मामता बड़ी चीज़ है, दुनिया से नाता टूट जाता है, धन जाय, धरम जाय, मगर लडके की मोहब्बत माँ के दिल से नहीं जाती। इत्तेफाक सब कुछ कर सकता है मगर लड़के की मोहब्बत माँ के दिल से नहीं निकाल सकता उसपर हाकिम का, बादशा का, यहाँ तक के ईश्वर का भी बस नहीं चलता। तुम मुझ पर तरस खाओ मेरे लड़के की जान बख्श दो, तुम्हें बड़ा जस होगा। मैं जब तक जिऊँगी तुम्हें दुआ देती रहूंगी।

गिरधारीलाल : मुझे रामरखा से कोई दुश्मनी नहीं थी अगर उन्होंने मुझे न छेडा होता तो मैं न बोलता आप के कहने से मैं अब भी उनका कुसूर माफ़ कर सकता हूँ मगर उनकी बीवी ने जो खत मेरे पास भेजा है उसे देख कर बदन में आग लग जाती है दिखाऊ आपको?
ये देखिये...(ख़त औरत को देता है औरत खत पढ़ती है)

औरत : इस औरत ने मुझे बहुत दुःख दिया है मुझे देस से निकल दिया इसका मिज़ाज और जबान दोनों इसके काबू में नहीं मगर इस वक्त इसने तुम से गुस्ताखी की है इसका तुम्हें ख्याल नहीं करना चाहिए। ये होश की चिट्ठी नहीं है बेहोशी का खत है तुम उसे दरगुजर कर दो तुम्हारा देस देस में नाम है ये नेकी तुम्हारे नाम को और भी रोशन कर देगी मैं तुम से वादा करती हूँ के सारा हाल रामरखा से लिखवा कर किसी अच्छे अख़बार में छपवा दूंगी। रामरखा मेरा कहा नहीं टालेगा। तुम्हारे इस एहसान को वो कभी नहीं भूलेगा। जिस वक्त ये हालात अखबारों में छापेंगे तो हजारों आदमियों को

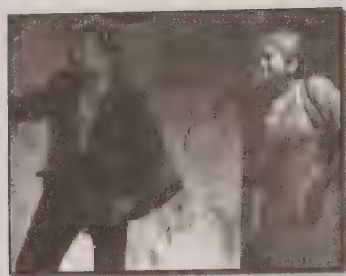


तुम्हारे दर्शन का शौक होगा सरकार में तुम्हारी बड़ाई होगी तुम्हें बड़ी बड़ी पदवी मिलेगी।

गिरधारीलाल : माता मुझे नाम ओ नमूद की बहुत जियादा परवा नहीं है बुज़ुर्गों ने कहा है नेकी कर दरिया में डाल, मुझे तो आप की बात का ख्याल है पदवी मिले तो लेने से इन्कार नहीं और न मिले तो उसकी हवस भी नहीं है मगर ये तो बताईए के मेरे रुपियों का क्या बंदोबस्त होगा। आप को मालूम होगा मेरे दस हज़ार रूपए निकलते हैं

औरत : तुम्हारे रुपियों की ज़मानत मैं करती हूँ ये देखो बैंक बंगाल की पास बुक है इस में दस हजार रूपए जमा हैं इस रूपए से तुम राम रका को कोई रोज़गार करा दोगे तुम उस दुकान के मालिक रहो गे राम रखा को उसका मनेजर बना देना जब तक वो तुम्हारे कहने पर चले, निभाना वरना दुकान तुम्हारी है। मुझे उसमें से कुछ भी नहीं चाहिए मेरा ईश्वर मालिक है राम रखा अच्छी तरह रहे इस से जियादा मुझे कुछ नहीं चाहिए ये लो इसमें चेक भी रखा बंक से पैसे निकाल लो।

गिरधारीलाल : नहीं इसे आप ही रखिये...अब मुझे जियादा शर्मिंदा मत कीजिये मैं बही खाते से राम रखा का नाम उड़ा दूंगा मुझे कुछ नहीं चाहिए मैं ने सब कुछ पा लिया है आज आपको आप का राम रखा मिल जायगा। (गिरधारीलाल उस औरत पैर छूता है)



बड़ी बहन

एक : एक दिन मौजा शिवगंज में शाम के दिन कई औरतें एक नीम के पेड़ के नीचे बातें कर रही थीं ....

(इकतारा विंग से दाखिल होती है और बोलते हुए दूसरी तरफ बढ़ती है)

तारा : आरी चंदुलाल ने अपने घरवालीको डंडों से इसलिए पीट दिया क्योंकि वो उस से पूछे बगैर गंगा नहाने चली गई थी...मैं तो कहती हूँ ऐसे आदमी के मुंह में आग लग जाय (तब तक कुंदन दाखिल होती है)

कुंदन : तारा बहन तुम ज़बान संभलकर बातें नहीं करती अपना शौहर था मार ही बैठा तो क्या हुवा

दूसरा : कुंदन, जय गोपाल की पत्नी थी।

एक : और जय गोपाल दुनिया के उन चंद खुश किस्मतों में से थे जिन्हें बिना हाथ पाँव हिले दोनों वक्त बहतरीन खान मिल जाता था। साल में एक बार लगान वसूल करने घर से निकलते थे।

दूसरा : ये घर उनका नहीं बलके उनके ससुर मादा लाल जी का था जिन्हों ने अपने दामाद की बुरी हालत देख कर उन्हें तोहफे में दे दिया था और कुछ जायदाद भी दे दी थी ताके उनका गुज़ारा हो सके।

एक : अलावा इसके वो अपनी दामाद की कुछ मदद भी करते थे।

दूसरा : उनके ससुर के कोई बेटा न था कुंदन इकलौती बेटी थी..जय गोपाल सोचते के ससुर के मरने के बाद वोही सारी जायदाद के मालिक बनेंगे उन्हें हज़ार सालाना नफा मिलेगा इसलिए ससुर की मौत की आरज़ू में साल में दो बार सत्य नारायण का पाठ भी जरूर करवाते।



एक : खैर जय गोपाल के दस साल हंसी खुसी कटे, तीन बच्चे भी हो गए बुढ़ापा भी आ गया खुशकिस्मती के आने का रास्ता साफ़ हो गया...मगर आना किसे था आया कौन, जो बात न होनी थी वो हो गई, और उसने जय गोपाल का भविष्य काला कर दिया।

दूसरा : साठ बरस की उम्र में उन के ससुर को बेटा हो गया।

कुंदन : बूढ़ा साठ बरस का हो गया मगर अभी हवस नहीं गई...अब उसे गले में बाँधें.... भाई का नाम रखा नोनी चन्द्र

जय गोपाल : सारे किये करे पर पानी फेर दिया ...इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी, जिंदगी नर्क हो गई थी, क्या क्या सपने देखे थे सब चकना चूर हो गए...अब इस उम्र में कंही नौकरी करनी पड़ेगी। चला जाऊंगा असाम। सुना है चाय के कारखाने में नौकरी पाना कोई मुश्किल नहीं है।

एक : और: और वो असाम चले गये कभी तन्हा नहीं रहे थे बाल बच्चो की याद आई मगर हिम्मत करके वहीं जमे रहे पहेले हर हफ्ते खत लिखते फिर दिनों में एक बार और आखिर में एक महीने में भी एक खत नहीं भेजते फिर उन में एक नया जोश पैदा हुवा और वो था के अब घर की हालत सुधारनी चाहिए मगर दूसरी तरफ।

कुंदन : पता नहीं कब आयें गे पहेले तो बराबर खत भी आते थे अब तो खत आना भी बंद हो..मैं उन को अब तंग नही करूं गी जो कहेंगे उस पर अमल करूंगी जैसा रखेंगे वैसे रहूँगी...

दूसरा : जय गोपाल का खुत तो नहीं आया मगर कुंदन के पीता बाबु मदन लाल का खत आ गया लिखा था ...

एक : जल्दी पहुँचो तुम्हारी माँ की तबियत ठीक नहीं है....

दूसरा : और कुंदन के पंहुचते ही ऐसा लगा कि माँ की जान कुंदन में अटकी है उसने बेटे का हाथ कुंदन के हाथ में दिया और दुनिया से चली गई कुछ दिनों बाद पिता का भी देहांत हो गया...



दूसरा : पिता ने कुल जायदाद जय गोपाल के नाम कर दी...अब कुंदन इस घर की मालकिन हुई और नोनी उसके दिल का...

एक : जय गोपाल खबर पाते ही असाम से चले आए और ज़मींदारी का इन्तेजाम करने लगा।

दूसरा : जय गोपाल अब पहेले सा बेफिक्र आजाद मानुष नहीं था अब वो लालची बन चूका था उसे रुपए की चाट पड़ गई थी... उस ने परदेस में खूब माल कमाया खूब गंवाया अब उसके मिज़ाज में छिछोरापन आ गया था।

एक : और बेचारी कुंदन सीधी सादी शरीफ औरत अपने पति को पहेले जैसा समझते हुय उसकी और भी दिलजोई करती, मगर जूं जूं वो करीब आती तूं तूं जय गोपाल उस से दूर भागता

(नोनी चन्द्र खेल रहा है और जय गोपाल आता है)

जय गोपाल : क्या है बे क्या कर रहा है...

नोनी : जीजा जी मैं खेल रहा हूँ...

जय गोपाल : चल अन्दर जा...साले जब देखो तब खेलता रहता है माँ बाप तो मर गए इसे छोड़ गये हमारी जिंदगी को दुखी करने...चल भाग...(तब तक कुंदन दाखिल होती है)

कुंदन : अरे अरे क्या करते हो...क्यों इसको मार रहे हो...? चल नोनी अंदर चल...

दूसरा : पहेले जब कभी नोनी और उसके भानजो में जंग होती तो कुंदन हमेशा अपने यतीम भाई की तरफ रहती इसलिए उस में नोनी के साथ सख्ती से पेश आने की हिम्मत नहीं होती थी मगर अब अदालत का रुख़ पलट गया है नए मुंसिफ ने आकर नया कानून जारी किया था जो फरयाद करता था उसी की सजा होती थी जब कभी जय गोपाल नोनी को मारता तो कुंदन उसे उठा कर किसी कोने में जाती और खूब रोती जूं जूं गोपाल उसके साथ बेरहमी करता तूं तूं कुंदन के दिल में नोनी की मोहब्बत ज्यादा बढ़ती।



एक : दुर्गा पूजा में सब के लिए रेशमी कपड़े बने लेकिन नोनी के लिए सूती कपड़े भी नहीं बनाया गया जय गोपाल की हरकतों की वजह से अब कुंदन के दिल से उसकी इज़्ज़त उतर गई।

दूसरा : जय गोपाल भी धीरे धीरे कुंदन से दूर होता जा रहा था।

एक : भैय्या दूज आया कुंदन ने नोनी के लिए रेशमी कपड़े बनाए उसे उबटन मला खूब अच्छे से नहलाया धुलाया, नोनी अच्छे कपड़ों में पूरे गाँव में घूम रहा था तारा भी किसी काम से गाँव आई थी यहाँ तरह तरह के चर्चे हो रहे थे तारा ने सुना और गुस्से में भरी आई।

तारा : बहन ये क्या स्वांग करती हो दिखावे के लिए तो नोनी का ऐसा लाडो पियार हो रहा है मगर पूरा घर उसका गाहक हो रहा है, सोने के कोर में ज़हर मिला कर दे रही हो

कुंदन : खबरदार तारा बरस बरस के दिन ऐसी बातें मुंह से न निकालो

तारा : मैं कोई बात अपने मन से बनाकर थोड़े ही कहती हूँ गाँव में जो कुछ सुना है वो तुम से आकर कह दिया जिसकी बदोलत तुम्हें सारी दुनिया का सुख मिल रहा है उसीके लिए अब कांटे बोए जा रहे हैं शेखपुरा में तुम्हारे भांजे खरदू गोपाल का नाम चढ़ा दिया है और कई इलाकों में ऐसी चालें चली जा रही हैं मगर याद रखो ऐसी दौलत कभी हजम नहीं होती ईश्वर सब देखता है (तारा चली जाती और जय गोपाल आता है)

कुंदन : मैं ये क्या सुन रही हूँ शिख्पुरा....

जय गोपाल : मैं चाहता था कि तुम्हारे कान तक यह बात पंहुचे...मुझे खुद बड़ा धोका हुवा मैं ने शिख्पुरा का इन्तेजाम खुद्रू के सुपुर्द कर दिया था मगर खुद्रू ने सरकारी लगान बाकी डाल दी और जब गाँव नीलामी को चढ़ा तो उसे अपने नाम पर खरीद लिया मुझे तो कल मालूम हुवा

कुंदन : तो तुम उर्ज्रदारी क्यों नहीं करते?

जय गोपाल : उज़र्दारी से अब काम नहीं चलेगा इलावा इसके अपने भांजे से



मुकदमेबाजी करना बदनामी की बात है लोग हंसी उड़ाएंगे (जय गोपाल चला जाता है)

कुंदन : ये सब नोनी को तबाह करने की साजिश है, मैं नोनी को कैसे बचाऊँ बेकसों का कोई मददगार नहीं है मुझे कलेक्टर साहेब के पास खुद चलना होगा।

एक : उसके बाद नोनी बीमार पड़ा बरसात के दिन थे चारों तरफ मलेरिया फैला हुवा था। नोनी भी उसका शिकार हो गया तीन दिनतक बुखार नहीं उतरा और न बच्चे ने आँखें खोलीं गाँव में एक वैद जी वो दोनों वक्त आते लेकिन उन की दवा से बिलकुल फायदा नहीं हुवा आखिर चौथे दिन कुंदन ने जय गोपाल से कहा।

कुंदन : जाकर शहर से शारदा बाबु को ले आते तो अच्छा होता नोनी का बुखार अब तक नहीं उतरा

जय गोपाल : शारदा बाबु जाने शहर में हैं भी या नहीं अभी दो चार दिन और वैदजी की दावा खिलाओ

कुंदन : वैदजी की दवा से कोई फायदा नहीं हुवा और इसकी हालत खराब होती जा रही है।

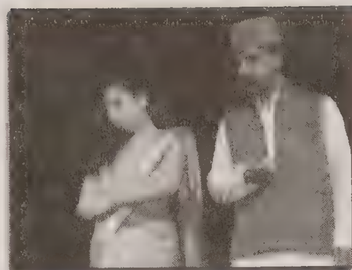
जय गोपाल : अभी कल तीन ही दिन तो हुवा है।

कुंदन : तुम जरा चल के उसे देखो तो कैसा पीला हो गया है।

जय गोपाल : अच्छा कल मैं जाऊँगा।

दूसरा : जय गोपाल सवेरे उठे और दिन भर गायब रहे शाम को खबर लेके आए कि डॉक्टर साहेब घर पर नहीं हैं लेकिन कुंदन को पति की बात पर विश्वास नही हुवा। उसने रात को नोनी को उठाया, बजे घाट पर आके एक कश्ती किराय पर ली और डॉक्टर साहेब के मकान पर पंहुची शारदा बाबु फॅमिली डॉक्टर थे देखते ही पहेचान गए एक कमरा खाली करवाया और नोनी के इलाज में मसरूफ हो गए (fade out)

जय गोपाल : (बाहेर से चिल्लाता है) कुंदन खैरियत चाहती हो तो इसी वक्त मेरे साथ चलो।



कुंदन : तुम इस वक्त मेरा गला काट डालो तो भी मैं नहीं जाऊंगी।

जय गोपाल : अच्छा तो अब मेरे घर मत आना समझीं।

कुंदन : तुम्हारा घर वो घर तो मेरे भाई का है।

जय गोपाल : ठीक है देखता हूँ कैसे वो घर तेरे भाई का हुवा (जय गोपाल वहां से चला जाता है)

एक : जय गोपाल उसी वक्त वहां से चला आया और माकन बाग़ अपने बड़े लडके के नाम पर लिखवा दिया दुसरे दिन उसकी रजिस्ट्री भी हो गई

दूसरा : कुंदन हफ्ते भर बाद जब घर पंहुची तो उसे घर और बाग़ की बे होने की खबर मिली फोरन घर छोड़ अपने बेटे को कुंदन इस वक्त गैर समझ रही थी भाई बेटे से भी जियादा पियारा हो गया

एक : कलेक्टर साहेब मौसम – ए – सरमा का दौरा कर रहे थे शैख़ पूरा में रुके अपने खेमे के सामने बैठे थे आस पास के रईस ज़मींदार उनसे मिलने आए थे जय गोपाल भी पंहुचे थे कलेक्टर साहेब ने जय गोपाल को अपने बाजू में बैठा लिया था कलेक्टर साहेब सब की बिपता सुन रहे थे तब तक कुंदन आई उसके साथ नोनी भी था।

कुंदन : हुजुर मैं इसी गाँव की एक दुखियारी औरत हूँ आप के पास फरयाद लाई हूँ।

साहब : अच्छा इजलास के कमरे में चलो हम अभी आता है।

कुंदन : नहीं हुजुर मेरी अर्ज़ यहीं सुन ली जाय।

साहब : अच्छा बोलो क्या बात है।

कुंदन : हुजुर ये लड़का मेरा भाई है। मैं बाबु माधव सुदन की लड़की हूँ। जिनका दो साल पहेले देहांत हुवा है। ये बाबु साहब जो आपकी बगल में बैठे हैं ये मेरे पति हैं। मेरे पिता का जब देहांत हुवा तो उन्होंने इन बाबु साहब को अपने न बालिग बेटे का वली बनाया था और अपनी ज़मींदारी का दो आना इनके गुज़ारे के लिए वसीयत में लिख गये थे, मगर इन बाबु साहब की नियत अब बदल गई है, ये मेरे गरीब भाई की सारी जायदाद अपने बेटों के नाम पर करते जा रहे हैं। कोई इन



का हाथ रोकने वाला नहीं है। मैं इनकी बीवी हूँ। इनके काबू में हूँ कुछ बोल नहीं सकती। इसका नतीजा ये होगा के, हुजुर के राज में एक यतीम पर कहर टूटेगा और इसकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो जायगा। अब इसके साथ इंसाफ करना आप का धरम है, आप जो मुनासिब समझें ये लड़का में आपको सौंपती हूँ।

साहब : क्या ये सब सच्च है?

जय गोपाल : अब हुजुर क्या अर्ज़ करूँ...बाबु माधव सुदन कर्ज़ छोड़ गये हुजुर कुछ जमीन म्क्फूल करके कर्ज़ अदा किया गया।

साहब : अच्छा कल कागजात हमारे सामने पेश करो

जय गोपाल : जी हुजुर

साहब : अच्छा तुम जाओ हम इस मामले में खूब कोशिश करेंगे तुम्हारा भाई की जायदाद कोई ले नहीं सकता तुम्हारी नेकी से हम बहुत खुश हुए।

कुंदन : ये बच्चा आपके हवाले....

साहब : नहीं नहीं इसे तुम अपने साथ लेती जाओ क्या तुम को कोई खौफ है।

कुंदन : हुजुर इसे मैं आप को सौंप चुकी हूँ अब यह मेरे साथ नहीं रह सकता।

साहब : और तुम कहाँ जाओगी।

कुंदन : मैं अपने शोहर के साथ जाऊंगी।

एक : एक हफ्ते में इलाका के जेर-ए-तहेत आ गया और नोनी को पढ़ने के लिए एक मास्टर रखा गया जय गोपाल असाम चले गये मगर कुंदन को फिर किसी ने नहीं देखा वो जिस दिन साहब के यहाँ से लौटी उस दिन उसे हैजा हो गया मगर गाँव वाले अब भी तस्लीम नहीं करते की ऐसा कुछ उसके साथ हुवा और तारा कहती है....

तारा : बिलकुल नहीं, मैं मान नहीं सकती कि उसे हैजा हुवा था...बात कुछ और है ...बात कुछ और है...

त्रिया चरित्र



सूत्रधार : सेठ लगनदास ने औलाद के खातिर पांच शादियाँ की...मगर फिर भी औलाद से महरूम रहे आखिर दोस्तों के मशवरे पर उन्होंने एक होनहार यतीम बच्चे को गोद ले लिया उसका नाम रखा गया मगनदास। वो बहुत ज़हीन था और बत्तमीज भी, मगर औरतें सब कुछ कर सकतीं हैं, दूसरे के बच्चे को अपना बच्चा नहीं समझ सकतीं और फिर यहाँ तो पांच औरतों का साझा था। अगर एक उससे प्यार करती तो बाकि चार का फ़र्ज था के वो उससे नफरत करें। हां, सेठजी को बच्चे से बहुत मोहब्बत थी। पढाने को मास्टर, सवारी के लिए घोड़ा रख दिया था। रईसाना ख़याल के आदमी थे इस लिए राग रंग का सामान भी मोहिय्या था, गाना सीखने की लड़के ने फरमाईश की तो उसका भी इंतज़ाम कर दिया गया। गरज जब मगनदास सने शबाब को पंहुचा तो रईसाना मशगिल में उसे दर्जा कमाल हासिल था उसका गाना सुनकर उस्ताद लोग कान पर हाथ रख लेते सहसवार ऐसा कि दोड़ते हुवे घोड़े पर सवार हो जाता शादी का मसला दरपेश हुआ, नागपुर के सेठ माखनलाल की बेटी से उसकी धूमधाम से शादी कर दी गई। मगनदास जापान की सैर पर गया था कि उसे लगनदास का पत्र मिला की ईश्वर ने तुम्हें एक भाई दिया है। मुझे इतनी खुशी है के शायद ज़ियादा अरसे तक मैं जी न सकूँ मगनदास के हाथ से तार का कागज छुट गया।

मगनदास : अब घर जाना व्यर्थ है...मुझे अब यह रईसाना चोंचले छोड़ने होंगे नागपुर चलता हूँ देवीजी का रंग ढंग देखूंगा अगर मेरे साथ मेरी गरीबी में रहना चाहेंगी तो ठीक है वर्ना मैं उनसे किनाराकशी कर लूंगा।



सूत्रधार : वो थका मांदा एक कुंवे के पास पहुँचा वहाँ एक मालन बैठे फूलों का हार और गजरा गुन्ध रही थी।

मालन : कहाँ जाओगे?

मगनदास : जाना तो था बहुत दूर मगर यहाँ ही रात हो गई यहाँ कंही ठहेरने का इंतज़ाम हो जायेगा।

मालन : चले जाओ सेठजी के धर्मशाले में बड़े आराम की जगह है।

मगनदास : धर्मशाले में मुझे ठहरने का कभी इत्तेफाक नहीं हुआ है, कोई हर्ज नहीं अगर यहाँ ही पड़ा रहूँ, यहाँ कोई रात को रहता है?

मालन : भाई मैं यहाँ ठहरने को न कहूँगी .. यह मिली हुई बाई जी की बैठक है। झरोके में बैठकर सैर किया करती हैं कहीं देख दाख लें तो मेरे एक बाल न बचेगा।

मगनदास : बाई जी कौन?

मालन : यह ही सेठजी की बेटी इंदिरा बाई

मगनदास : यह गजरे उन्ही के लिए बना रही हो?

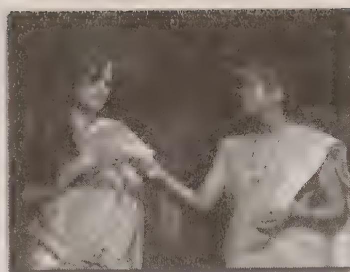
मालन : हां सेठजी के यहाँ है ही कौन? फूलों के गहने बहुत पसंद करती हैं

मगनदास : शौकीन औरत मालूम होती हैं

मालन : यह ही तो बड़े आदमियों की बातें हैं वो शौक न करें तो हमारा तुम्हारा निभा कैसे हो? और धन है किसलिए? अकेली जान पर दस लौंडियाँ हैं सुना करती थी भाग्यवान आदमी का हल भूत जोतता है, वो आँखों से देख लिया आप ही आप पंखा चलने लगे आप ही आप घर में दिन सा उजाला हो जाय। तुम झूठ समझते होगे मगर मैं आँखों देखी बात करती हूँ।

मगनदास : होगा भाई बड़े आदमियों की बात निराली होती है लक्ष्मी के बस में सब कुछ है मगर अकेली जान पर दस लोंडियाँ समझ में नहीं आता।

मालन : तुम्हारी समझ मोटी हो तो कोई क्या करे? अरे कोई पान लगाती है कोई पंखा झेलती है, कोई कपड़े पहनाती है, दो हज़ार रूपए में सीज गाड़ी आई थी, चाहो तो जा कर देख लो, उसी पर हवा खाने



जाती हैं। एक बंगालन गाना बजाना सिखाती है, मेम पढाने आती है, शास्त्रीजी संस्कृत पढाते हैं कागद पर ऐसी मूरत बनाती हैं के अब बोली तब बोली दिल की रानी है बेचारी के भाग फूट गए। दिल्ली के सेठ लगनदास के लड़के से ब्याह हुवा था मगर रामजी की लीला सत्तर बरस के मुर्दे को लड़का दिया, कौन यकीन करेगा जब से यह सुनौनी आई है तब से बहुत उदास रहती हैं। एक दिन रोती थीं मेरे सामने की बात, पिता ने देख लिया समझाने लगे। लड़की को बहुत चाहते हैं। सुनती हू दामाद को यहाँ ही बुला कर रखेंगे। नारायण करें मेरी रानी दूधों नहाय, पूतों फले, मेरा घर वाला मर गया था। इन्होंने आड न दी होती तो घर घर से टुकड़े मागती।

मगनसिंह : (खुद से) बेहतर है अब यहाँ से अपनी इज्ज़त और आबरू लिए हुवे चल दूँ यहाँ मेरा निबाह न होगा, इंदिरा रईसजादी मैं इस काबील नहीं हूँ कि उस का शौहर बन सकूँ......तो धर्मशाले मैं जाता हूँ जाने वहाँ खाट वाट मिलती है के नहीं मगर रात तो काटनी है किसी तरह कट ही जायेगी। रईसों के लिए मखमली गददे चाहिए, हम मजदूरों के लिए पुवाल ही बहुत है।

सूत्रधार : उस वक्त इंदिरा अपने झरोके पर बैठी हुई इन दोनों की बातें सुन रही थी। क्या इत्तेफाक की खूबी है कि औरत को जन्नत की नेमतें हासिल हैं और उस का शौहर आवारा-ए-वतन है जिसे रात काटने का ठिकाना नहीं है। मगनदास मयुसाना खयालात में डूबा हुवा शहर से बाहर निकल आया और एक न मालूम मंजिल की जानिब बढ़ गया। भूका-प्यासा था मगर चला जा रहा था कोई काम करना चाहता था मगर उसे काम कौन देता आखिर वो पहुंचा नागरघाट वहाँ ठाकुर अटल सिंह का राज था। उन्हों ने उस के फ़िक्र-ए-माश का खत्म किया यह एक बड़ा गांव था पुख्ता मकानात थे मगर उसमें आसमानी रूहें आबाद थीं। कई साल पहेले इस गांव में प्लेग फैला था जिस



से काफी जानी नुक्सान हुवा था, माल ओ दौलत को लोग अज़ाब समझते थेल, उसे गुनाह की तरह छुपाते थे, घर में रूपए होते हुवे लोग क़र्ज़ ले लेके खाते थे और फटे हालों में रहते थे उसी में निबाह था काजल की कोठरी थी सफ़ेद कपडे पहनना उन पर धब्बा लगाना था। हुकूमत और जबर का बाजार गरम था। अहीरों के यहाँ अनजन के लिए भी दूध न था और ठाणे में दूध की नहेरें बेहती थी मवेशीखाने के मुहरीर दूध की कुल्लियाँ करते थे इसी अंधेरनगरी को मगनदास ने अपना मिस्कन बनाया वोह जिंदा तो था मगर उसकी जिंदगी उससे रुखसत हो गई थी हिम्मत और हौसला मुश्किल को आसान कर सकते हैं आंधी और तूफ़ान से बचा सकते हैं एक रोज जब शाम के वक्त वो अँधेरे में पड़ा हुवा था एक औरत भीख मांगती आई।

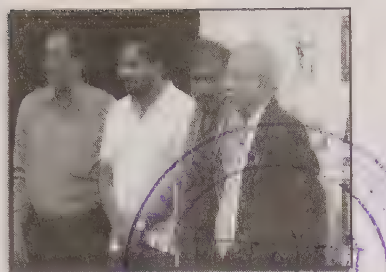
मालन : कुछ दे दो भैय्या

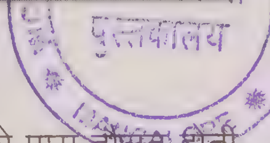
मगनसिंह : मालन तुम्हारी यह हालत कैसी? मुझे पहचानती हो?

मालन : बेटा अब बताओ मेरा कहाँ ठिकाना लगे...तुम ने मेरा बना बनाया घर उजाड दिया न उसदिन तुमसे बातें न करती, न मुझ पर यह आफत आती बाई ने तुम्हें बैठे देख लिया, बातें भी सुनी, सुबह होते ही मुझे बुलाया और बरस पड़ीं कहने लगी।

औरत : नाक कटवालुंगी, कालिख लग्वादुंगी, चुडैल, कुटनी तुने मेरी बात किसी गैर आदमी से क्योंकी..तू दूसरों से मेरी चर्चा करती है क्या वो तेरा दामाद था जो तू उससे मेरा दुखड़ा सुना रही थी जो कुछ मुंह में आया बकती है।

मालन : मुझसे भी रहा न गया रानी रूठें गी अपना सुहाग लेंगी मैं ने भी कह दिया बाईजी मुझ से कुसूर हुवा लीजिए अब जाती हूँ ईश्वर ने मुंह दिया है तो आहार भी देगा चार घर से माँगूगी तो पेट भर जायेगा। अब आप ही बताओ मैं ने उस छोकरी की आप से क्या बुराई की थी, उसकी क्या चर्चा की थी, मैं तो उसका बखान कर रही थी, मगर बड़े आदमियों का गुस्सा भी बड़ा होता है अब बताओ मैं किसकी होकर





रहूँ। आठ दिन इसी तरह टुकड़े मांगते हो गए, एक भतीजी उन्ही के यहाँ लोंड़ीयों में नौकर थी उसी दिन उससे भी निकाल दिया तुम्हारी बदौलत जो कभी नहीं किया था वो करना पडा तुम्हें काहे को दोष दूँ किस्मत में जो कुछ लिखा था वो देखना पड़ा।

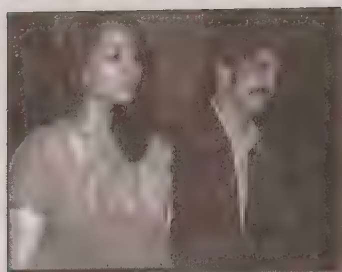
मगनसिंह : ओफो मिज़ाज का यह आलम यह गुरुर अगर मेरे पास दौलत होती तो तुम्हें मालामाल कर देता। सेठ माखनलाल की साहबजादी को भी मालूम हो जाता कि रिज्क की कुंजी उनके हाथ में नही है तुम फ़िक्र मत करो मेरे घर में आराम से रहो अकेले मेरा जी नहीं लगता सच कहो तो मुझे तुम्हारी तरह एक औरत की तलाश थी अच्छा हुवा तुम आ गई।

मालन : बेटा जुग जुग जियो बड़ी उम्र हो यहाँ कोई घर मिले तो मुझे दील्वादो मैं यहाँ रहूंगी तो मेरी भतीजी कहाँ जायगी वो बेचारी शहर में किस के आसरे पर रहेगी।

मगनसिंह : (खुद से) इन की इस हालत का मैं ज़िम्मेदार हूँ ...कोई हर्ज न हो तो उसे भी यहाँ ही ले आओ मैं दिन में बहुत कम यहाँ रहता हूँ सिर्फ एकबार खाने को आता हूँ रात को बहार चारपाई ड़ाल कर पड़ा रहूँगा मेरी वजह से तुम लोगों को कोई तकलीफ न होगी। यहाँ दूसरा मकान मिलना मुश्किल है, येही झोंपड़ा ही बड़ी मुश्किलों से मिला है यह अंधेर नगरी है जब तुम्हारा सुबीते से कहीं इंतज़ाम हो जाय तो चली जाना।

सूत्रधार : नागपुर उस गांव से बीस मील के फासले पर था मालन चंपा उसी दिन चली गई और तीसरे दिन अपनी भतीजी रम्भा को ले आई रम्भा के आने से झोंपड़े में जान सी पड़ गई रम्भा हसीन थी मगनदास के दिल में समां गई।

मगनसिंह : क्या तकदीर यहाँ कुछ और गुल खिलाने वाली है क्या दिल मुझे यहाँ भी चेन न लेने देगा। रम्भा तू नाहक यहाँ आई नाहक एक गरीब



का खून तेरे सर पर होगा मैं तो तेरे हाथों अब बिक चूका हूँ मगर क्या तू मेरी हो सकती है, लेकिन नहीं इतनी जल्दी नहीं, दिल का सौदा सोच समझ कर करना चाहिए। मगनसिंह तुम को ज़ब्त करना होगा रम्भा हसीन है, मगर झूठे मोती की आब ओ ताब उसे सच्चा नहीं बना सकती तुम्हें क्या खबर कि इस भोली भाली नाजनीन के कान हर्फ़–इ–मोहब्बत से आशना नहीं बना सकती कौन कह सकता है उस का बाग–ए–हुस्न किसी गुलची.की दस्त्द्राजीयों से आलूदा नहीं हो चूका था। नहीं, नहीं मैं यह सब क्यों सोचूं।

सूत्रधार : एक दिन मगनसिंह लेटा हुवा था चंपा किसी काम से बाजार गई हुई थी...और एकाएक उसके सामने रम्भा आके खड़ी हो गई उस ने अपने दिल पर जोर डालते हुवे कहा....

मगनसिंह : आओ रम्भा तुम्हें देखने को बहुत दिन से आँखें तरस रही थीं।

रम्भा : मैं यहाँ न आती तो तुम मुझ से कभी न बोलते।

मगनसिंह : बिना मर्ज़ी पाय तो कुत्ता भी नहीं आता
मैं तो आप ही चली आई

मगनसिंह : रम्भा ये बातें न करो कलेजा फटा जाता है मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता इस लिए नहीं के तुम्हारे ऊपर कोई एहसान है तुम्हारी खातीर वो रहत, वो मोहब्बत, वो आनंद जो मुझे यहाँ मयस्सर है और कहीं नहीं मिल सकता। खुशी के साथ जिंदगी बसर हो यह ही जिंदगी का मकसद है। मुझे इश्वर ने वो खुशी यहाँ दे रखी है तो मैं उसे क्यों छोड़ू माल और दौलत को मेरा सलाम है मुझे उसकी हवस नहीं है।

रम्भा : मैं तुम्हारे पॉव की बेढ़ी न बनूँगी चाहे तुम अभी मुझे न छोडो लेकिन थोड़े दिनों में तुम्हारी यह मोहब्बत न रहेगी

मगनसिंह : तुम्हारे सिवा इस दिल में अब कोई जगह नहीं पा सकता

रम्भा : अच्छा (वहाँ से चली जाती है---)

सूत्रधार : सुबह हुई तो मगनसिंह उठा और रम्भा रम्भा पुकारने लगा मगर रम्भा

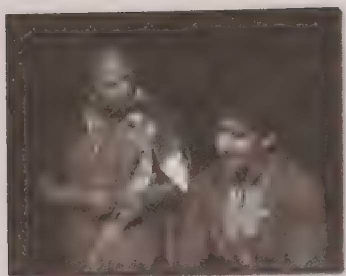


रात को अपनी चची के साथ वाहन से कहीं चली गई थी। मगनसिंह को उस मकान के दरों दिवार पर एक हसरत सी छाई मालूम हुई गोया घर की जान ही निकल गई थी वो घबरा के घर के हर कोने में दौड़ा वो बच्चो की तरह चींख उठा ....

मगनसिंह : रम्भा तुम रात को कहा थी मैं तुम्हें छोड़ दूँगी क्या तुमने वो बात दिल से कही थी? मैं तो समझा था कि तुम दिल लगी कर रही हो नहीं तो मैं तुम्हें अपने कलेजे छुपा लेता, मैं तो तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़े बैठा था तुम्हारी मोहब्बत मेरे लिए सब कुछ थी आह मैं यूँ बेचैन हूँ क्या तुम नहीं हो अरे यह खत कैसा? (खत खोलता है यह रम्भा का खत है)

रम्भा : प्यारे मैं बहुत रो रही हूँ मेरे पैर नहीं उठते मगर मेरा जाना बहुत ज़रूरी है तुम्हें जगाऊंगी तो तुम जाने नहीं दोगे। आह, कैसे जाऊं अपने प्यारे पति को कैसे छोड़ कर जाऊं, किस्मत मुझ से यह आनंद का घर छुडा रही अहि मुझे बेवफा मत कहेना, मैं तुम से फिर कभी मिलूंगी मैं जानती हूँ के तुम ने मेरे लिए त्याग दिया है मगर तुम्हारे लिए जिंदगी में बहुत कुछ उम्मीदें हैं मोहब्बत की धुन में तुम्हे उन उम्मीदों से क्यों दूर रखूं अब तुम से बिदा होती हूँ, मेरी सुध मत भूलना, मैं तुम्हें हमेशा याद रखूंगी यह आनंद के दिन कभी न भूलेंगे क्या तुम मुझे भूल सकोगे?

सूत्रधार : मगनसिंह को देहली आये हुए, तीन महीने गुज़र चुके थे... इस बीच उससे सबसे बड़ा जाती तजरुबा हुवा वो ये था के फिकरे रोज़गार से जज्बाते सरकश का जोर कम किया जा सकता था, डेढ़ साल कब्ल का बेफिक्र नौजवान अब एक मामला फहेम इंसान बन चूका था। सागर घाट के चाँद रोज़ा कयाम से उसे रिआया की तकालीफ़ का जाती तजरुबा हो चूका था जो कारिंदों और मुख्तारों की बदौलत उन्हें उठानी पड़ती थीं उसने रियासत को

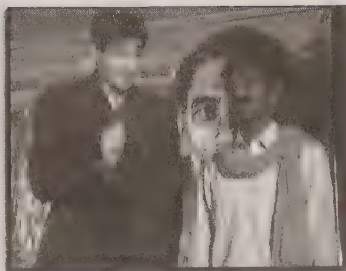


बढाने में बहुत महनत की, मुलाज्मीन दबे लफ़्ज़ों में उसकी शिकायत करतेथे और अपनी किस्मतों और ज़माने की नेरंगियों को कोसते थे, मगर रिआया आसूदा हाल थी मगर जब वो सब धन्दों से फ़ुर्सत पाता तो एक भोली भाली नाजनीन उसके पहलूए ख्याल में आ बैठती और थोड़ी देर के लिए सागर घाट का हराभरा झोंपड़ा और उसकी दिलफरेबियाँ आँखों के सामने आ जाती। सारी बातें एक दिलकश ख्वाब की तरह याद आ आ कर दिल को मसोसने लगती लेकिन कभी कभी खुद उसका ख्याल इंद्रा की तरफ जा पहुंचता, जो उसके दिल में रम्भा के लिए भी वोही जगह थी मगर किसी तरह उसमें इंद्रा के लिए भी गोशा निकल ही आया था जिन हालातों और आफतों ने उसे इंदिरा से बेज़ार कर दिया था वो अब रुखसत हो गई थीं अब उसे कुछ इंदिरा से हमदर्दी हो गई थी।

मगनसिंह : अगर उसके मिज़ाज में गुरूर है, हुकूमत है, तकल्लुफ है, शान है, तो ये उसका कुसूर नहीं, ये रईसजादों की आम कमजोरिया हैं ये ही उनकी तालीम है वो माजूर और मजबूर हैं

सूत्रधार : इन्ही मुतागैय्यर जज़बात के साथ वो रम्भा की याद को ताज़ा किया करता था वहां इंदिरा का खैर मकदम करने और उसे अपने दिल में जगह देने के लिए तैयार था। वो दिन भी दूर नहीं था जब उसे इस अजमाइश का सामना करना पड़ेगा। उसके कई अज़ीज़ अमीराना शानो–शौकत के साथ इंदिरा को रुखसत करने नागपूर गए हुये थे मगनसिंह की तबियत आज इन्ही जज़बात जिन में इंतज़ार और इश्तिआक़ की हैसियत नुमायाँथी उचाट सी हो रही थी जब कोई मुलाजिम आता तो वो संभल के बैठ जाता की शायद इंदिरा आ पंहुची आखिर शाम के वक्त जब दिन और रात गले मिल रहे थे बहुके आनेकी सदा बुलंद हुई सुहागकी सुहानी रात थी दस बज गए थे, चांदनी छंटकी हुई थी, वो चांदनी जिसमें नशा है, कशिश है,

गमलों में खिले गुलाब और चम्पे के फूल चाँदकी सुनहरी रौशनी में और भी मतीन और खामोश नज़र आते हैं मगनदास इंदिरा से मिलनेके लिए चला वो जूंही ख्वाब गहा में पंहुचा.... अरे यह क्या?



मगनसिंह : रम्भा

सूत्रधार : और इस तरह एक साल बीत गये। एक दिन इंदिरा ने अपने शौहर से कहा...

इंदिरा : क्या रम्भा को बिलकुल ही भूल गये? कैसे बेवफा हो? कुछ याद है उसने चलते समय तुमसे क्या इल्तेजा की थी...

मगनसिंह : याद है, मुझे हर बात याद है। मैं रम्भा को भोली भाली लड़की जनता था कि त्रियाचरित्र का तिलिस्म है?मैं अपनी रम्भा को अब भी इंदिरा से ज्यादा प्यार करता हूँ तुम्हें रश्क तो नहीं होता।

इंद्रा : मैं रश्क क्यों करू? तुम्हें रम्भा है तो मेरा मगनसिंह नहीं है? मैं अब भी उस पर मरती हूँ।

सूत्रधार : दुसरे दिन दोनों देहली से कौमी जलसे में शरीक होने का बहाना बनाकर रवाना हो गये और सागर घाट जा पंहुचे, वो झोपड़ा वो मोहब्बत का मंदीर, वो प्रेम भवन फूल और सब्जे से लहेरा रहा था चंपा मालन उन्हें वहां मिली, गाँव के ज़मींदार मिलने के लिय आय कई दिन तक फिर मगन सिंह को घोड़े निकालना पड़ा। रम्भा कुंवे से पानी लाती, खाना पकाती,फिर चक्की पिसती गाँव की औरतें उससे अपने बच्चों के कपड़े सिलातीं। हाँ इतना जरूर कहतीं इस का रंग कैसा निखर आया है हाथ पांओ कैसे मुलायेम पड गए वोही मुरव्वत, वो ही हंसमुख चहेरा इस तरह एक हफ्ते तक इस सादा और पाकीज़ा ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाने के बाद दोनों दहली वापस आय और अब दस साल गुजरने पर भी साल में एक बार झोंपड़े के नसीब जागते हैं वो मोहब्बत की दिवार अभी तक उन दोनों प्रेमियों को आराम देने के लिए खड़ी है।

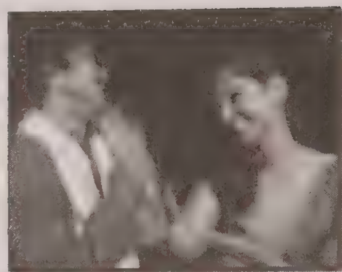


मौत और जिंदागी/अमृत

मैं : मेरा उन्फुवान-ए-शबाब था जब मेरा दिल लजात-ए-दर्द से मानुस हुवा कुछ दिनों तक मशक-ए-सुखन करता रहा और रफ्ता रफ्ता इस शोक ने मेहवियत की सूरत इख्तियार कर ली। सारे दुनियावी तालुकात से मुंह मोड़कर अपने हुस्न फ़िक्र की पनाह में आ बैठा और तीन ही साल की मश्क ने मेरी फ़िक्र के जोहर खोल दिए। कभी-कभी मेरा कलाम असातेज़ा के मशहूर कलाम से टक्कर खा जाता था मेरे कलम ने किसी उस्ताद के सामने सर नहीं झुकाया मेरा ख़याल एक खुर्द पौधे की तरह कता व बरीद की कैदों से आज़ाद नशो ओ नुमा पाता रहा और मेरे कलाम का अंदाज़ बिलकुल निराला था। मैंने अपनी शायेरी को फारस से बहार निकाल कर योरप तक पहुंचा दिया। यह मेरा अपना रंग था। इस मैदान में न मेरा कोई रकीब था न हम असर। बावजूद इस शायराना मेहवियत के मुझे मुशायरों की वाह वाह और सुबहानअल्लाह से नफरत थी। हाँ मैं अहल-ए-ज़ॉक से बिना अपना नाम बताये हुवे अक्सर अपने कलाम के हुस्नोकबाह पर बहेस किया करता गो मुझे दावा-ए-शायेरी न था मगर रफ्ता-रफ्ता मुझे शोहरत से नियाज़ होने लगा और जब मेरी मसनवी दुनीय-ए-हुस्न शाएय हुई तो दुनिया-ए-अदब में हलचल मच गई। शोराए-सलफ ने सुखन फहमों की बुखल दाद में दफ्तर के दफ्तर सियाह कर दिये हैं मगर मेरा तजुर्बा इसके बिलकुल बरअक्स था मुझे कभी कभी यह ख़याल सताया करता के मेरे कदरदानो की यह फय्याज़ी दीगर शौरआ के पस्ती-ए-फिकर की दलील है। यह कहयल हौसला शिकन था बेहरहाल जो कुछ हो, दुनिया-ए-हुस्न ने मुझे कलम-ओ-सुखन का बादशाह बना दिया। मेरा नाम हर एक ज़बान पर था। मेरा चर्चा



हर एक अखबार में था शौहरत अपने साथ दोलत भी ले आई। उस वक्त मेरी जिंदगी एक दिलआवेज़ नगमा थी वोह एक शिर ओ शकर की धार थी जो पुरसुकून रवानी के साथ सायादार दरख्तों के बोसे लेती थी। मीठे सुरों से गाती थी किसी न मालूम मंजिल–ए–मक़सूद की तरफ बहती चली जाती थी मुझे शब्ओ रोज बहेर फ़िक्र–ए–सुखन के और कोई शुगल न था बसा औकात बैठे बैठे रातें गुजर जातीं और जब कोई चुभता हुवा शेर कलम से निकल जाता तो मैं फरत–ए–मुसर्रत से उछल पड़ता अक्सर मगरीबी अदीबों की तरह मेरा भी ख़याल था के सौदा–ए–सुखन और सौदा–ए–हुस्न में बड़ा बैर है। मुझे अपनी ज़बान से कहते हुवे नादिम होना पड़ता है के मुझे अपनी तबियत पर जोर न था। जब कभी मेरी आँखों में कोई दिलफरेब सूरत खप जाती तो मेरे दिल ओ दिमाग पर एक जूनून सा तारी हो जाता। हफ़्तों तक एक खुद फरामोशी का आलम रहता फ़िक्र–ए–सुखन की तरफ तबियत किसी तरह माएल न होती। ऐसे कमज़ोर दिल में बस एक इश्क की जगह थी। हसींन औरत मेरे लिए एक खुश रंग कातिल नागिन थी, जिसे देख कर आँखें खुश होती, मगर दिल खौफ से सिमट जाता है। खैर दुनिया–ए–हुस्न को शअए हुए दो साल गुजार चुके थे। मेरी शोहरत बरसात की उमड़ी हुई नदी की तरह बढ़ती ही जा रही थी ऐसा मालूम होता था कि जैसे मैं ने दुनिया–ए–अदब में कोई जादू करदिया हो। वहाँ से मैं पंजाब आ गया और यहाँ से मेगज़ीन निकालने लगा, नैरंग नैरंग (मेगजीन) के शुरू करते ही मुझ पर एक हैरत अंगेज और खातिर शिकन तजरुबा हुवा, खुदा मालूम क्यों, मेरे पर्दा–ए–ज़हन और फिक्र पर एक पर्दा पड गया। घंटों तबियत पर जोर डालता मगर एक शेर भी ऐसा न निकलता के दिल फड़क उठे। अक्सर झुझला कर उठ बैठता, कागज फाड़ डालता मैं सोचने लगता क्या मेरी शाएराना कुवतों का खात्मा हो गया है ? आखिर मैंने एक डॉक्टर से मशवरा किया। उसने आम डॉक्टरों



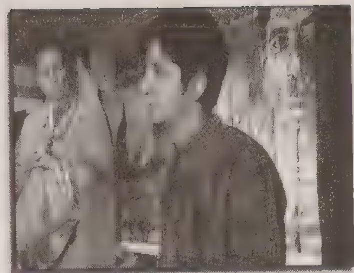
की तरह आबोहवा तब्दील करने का मशवरा दिया। मैं नैनिताल आ गया मगर यहाँ भी कोई फायदा न हुआ। आखिर थक हार कर मैं अख़बारों में यह खबर उडा दी कि मेरा इन्तेकाल हो गया है बस फिर क्या था मुझ पर लंबे लंबे आर्टिकल लिखे जाने लगे, मेरी खूबियों के बारे में मेरी रायटिंग के बारे में मेरे एक दोस्त जिन्हें मुझ से गहेरे मरासिम का दावा था, मुझे शीशा ओ सागर का शेदाई बना दिया वो जब कभी मुझ से मिलते उन्हें मेरी आँखें नशे से सुर्ख नज़र आतीं खैर कुछ दिनों बाद मैं अजमेर चला गया वहाॅ घूमता हुवा एक पब्लिक लाइब्रेरी में जा पहुंचा दफअतन मेरी निगाह एक दीदाजैब रिसाले की तरफ गई जिस का उन्वान था कलम–ए–अख्तर जैसे भोला बच्चा खिलोने की तरफ लपकता है उसी तरह झपट कर मैं ने उस किताब को उठा लिया उस की मुस्सनिफ्फा मिस आयशा आरिफ थीं। मैं उसे पढ़ने में गर्क हो गया। उस का एक एक लफ्ज़ मेरे दिल पर नक्श करता गया उसने मेरी कितनी तारीफ की थी और जहाँ जहाँ मुझे दाद दी वहाँ मोती बरसा दिए थे उस के ऐत्राजात में हमदर्दी और दाद में अकीदत थी। उस ने लिखा था शाएर के कलाम को उयुब के एतबार से नहीं खुबियों के एतबार से देखना चाहिए। उस ने क्या नहीं किया, यह सही मेयार नहीं उस ने क्या किया है, यह सही मेयार है बस जी चाहता था कि मुस्सानिफ्फा के हाथ और कलम चूम लूँ। सफीर भोपाल के दफ्तर से यह रिसाला शाए हुवा था तीसरे दिन मैं मिस आयशा के खूबसूरत बंगले के सामने हरी हरी घांस पर ठहेल रहा था। मैं जब उन के हॉल में पहुंचा तो मेरी तस्वीर दीवार पर लटक रही थी जिसे देख कर हैरान रह गया तब तक मिस आयशा दाखिल हुई...

आयेशा : आप अख्तर मरहूम के अज़ीज़ों में हैं।

मैं : मैं ही बदनसीब अख्तर हूँ।

आयशा : दुनिया–ए–हुस्न के मुस्सान्निफ़ ?

मैं : जी।



ायशा : अकबारों में आप के बारे में एक बहुत मनहूस खबर छपी थी।

ं : आपके ज़बान और कलम से दाद पाने की कोई दूसरी सूरत न थी इस तनकीद के लिए मैं ऐसी ऐसी कई मौतें मर सकता हूँ।

आयशा : मुझे दिखावा पसंद नहीं, क्या डॉक्टरों ने कोई दवा नहीं बताई?

मैं : अब मसीह के सिवा इस मर्ज़ की शिफा और किसी के हातों नहीं हो सकती।

आयशा : मसीह तो चौथे आसमान पर रहते हैं

मैं : रूहों से चौथा आसमान बहुत दूर नहीं है (आयशा मुस्कुरा देती है) अच्छा अब मैं चलूँगा (लाईट्स ऑफ)

मैं : जब मैं उस के यहाँ से आया तो मेरा एक अजीब आलम था मैं कलम लेके बैठ गया और एक ऐसी नज़म लिखी जिसे मैं अपना सरमाया-ए-नाज़ समझता हूँ। अब सब कुछ ठीक हो गया था, यह उस फूल की महक थी जो मेरे दिल में खिला हुवा था। मोहब्बत रूह की गीज़ा है यह वो अमृत की बूंद है जो मेरे जज़्बात को जिंदा कर देती है मोहब्बत रूहानी नेमत है यह जिंदगी की सब से आला, सबसे मुबारक बरकत है येही अक्सीर थी जिस की मुझे नादानिस्ता तलाश थी। वोह रात कभी नहीं भूलेगी जब आयेशा दुल्हन बनी हुई मेरे घर में आई थी। नैरंग इसी मुबारक जिंदगी की यादगार है दुन्य-ए-हुस्न एक गुंचा थी, शगुफ्ता व शादाब फूल है और इसी गुंचे को खिलाने वाली कौन सी चीज़ है? वो ही जिसकी मुझे नादानिस्ता तलाश थी और जिसे मैं अब पा गया था।



कैफ़े किरदार

(गोरा बैठी रो रही है और उसका पिता शिवराम दाखिल होता है)

शिवराम : अरे गोरा जरा पानी पिला इतने ज़ोरों की प्यास लगी है कि ऐसा लगता है गला जल जायेगा, अरे क्या हुवा रो क्यों रही है?

गोरा : बापू जबसे तुमने मेरी मंगनी की है कोई दिन ऐसा न गुज़रा होगा जो मैं ने आंसू न बहाय हों

शिवराम : अरे तो तू कौन बहुत दूर जा रही है, सरजू नदी की उस तरफ तो ही तुझे जाना है। जब जी घबराए कश्ती में बैठ के यहाँ आ जाना

गोरा : बापू यहाँ से जाने का सोचती हूँ तो मेरा दिल बैठ जाता है

आदमी : शिवरामजी गोरा बिटिया के ससुराल से यह साडी ले आया हूँ (गोरा अंदर चली जाती है)

शिवराम : अरे आओ भाई बेठो अब खाना खा के ही जाना

आदमी : नहीं शिवजी जरा जल्दी में हूँ फिर कभी खा लूँगा

शिवराम : सच्च कहूँ जैसे गोरा का मन नहीं होता न यहाँ से जाने का वैसे ही मेरा मन भी होता उसे यहाँ से बिदा करने का...सोचता हूँ वो चली जायेगी तो मैं अकेले इस घर में कैसे रहूँगा। जब मैं यहाँ आया था तो ये पूरा इलाका वीरान था..मैं चंद भैंसे और बकरियां लाया था...मैं ने एक कश्ती भी बना ली थी उसी पर बैठ कर करीब के कस्बे में जाता और उन्हे घी दूध बेच आता, पर इस जगह को आबाद करना मुझे फला नहीं यहाँ आते ही मेरी पत्नी मर गई उसके बाद मुझे गोरा की शादी की फ़िक्र हो गई मगर भगवान जाने क्यों बिरादरी में कोई मुझे अच्छी निगाहों से देखता ही ना था येही सबब था के गोरा के लिए बहुत दिनों तक रिश्ते नहीं आए...खैर अब जहाँ उसकी शादी तय की वो लोग बहुत अच्छे हैं....मैं बहुत खुश हूँ इस रिश्ते से...(धीरे धीरे



रौशनी गुल हो जाती है)

गोरा : (ससुराली साड़ी में दाखिल होती है) मैं ने कितने दिनों बाद अपने आप को आईने में देखा, अच्छी लग रही हूँ। मुझे याद नहीं आता कि मैं ने अपने से अच्छी सूरत कभी देखि होगी (तब तक एक अजनबी वहां दाखिल होता है) तुम कौन हो? (सोंटा उठा लेती है) देखो अगर तुम यहाँ से नहीं गए तो मैं तुम्हारा काम तमाम कर दूँगी

अजनबी : तुम डरो मत मैं तुम्हें कुछ नहीं बोलूंगा मुझे बहुत ज़ोरों की भूक लगी है कुछ खाने को दे दो भूक से मरा जाता हूँ

गोरा : तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो?

अजनबी : एक बदनसीब आदमी हूँ और कौन हूँ दिन भर से जंगल की ख़ाक छान रहा हूँ सेकड़ों आदमी मेरी तलाश में घूम रहे हैं गाँव का गाँव मेरा खून का प्यासा हो रहा है। कल रात को हरदतपूर में डाका पड़ा वहां का हरदतपूर उस डाके में मारा गया अब लोग मुझ गरीब पर शक कर रहे हैं मगर ईश्वर से कहेता हूँ कि मैं उस गुनाह में बिलकुल नहीं शरीक था। ये मेरे दुश्मनों की शरारत है। इस वक्त किस्मत मुझे यहाँ ले आई मगर यहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं मिलता जिधर जाता हूँ पानी और दलदल के सिवा कुछ नहीं सूझता। अगर इसी रस्ते से लौट जाऊं जिधर से आया हूँ तो ज़रूर गिरफ्तार हो जाऊं गा क्योंकि लोग मेरी घात में लगे हुय हैं तुम मुझे कुछ खाने को दे दो तब यहाँ से जान लेकर भाग निकलने का कोई रास्ता बता दो। तुम्हारे दिल में रहें है ईश्वर तुम्हें इस नेकी का बदला देंगे

गोरा : (खुद से) ज़रूर ये कातिल है और मैं इस सुनसान जगह पर इसके सामने खड़ी हूँ, ये मुझे भी मार डालेगा और यहाँ की सारी चीजें उठा ले जायेगा तो मैं क्या करुँगी, फरियाद भी तो नहीं कर सकती यहाँ कौन बैठा हुवा है, बाबूजी भी न मालूम कब आयेंगे, हे ईश्वर तू मेरी मदद कर .... सुनो मैं अगर तुम्हें कुछ खाने को दे दूँ तो तुम यहाँ से



चले जाओगे? अगर जल्द नहीं जाओगे तो मेरे बापू तुम्हें पकड़ लेंगे।

अजनबी : क्या तुम्हारे बाप जल्दी आ जाएँ गे?

गोरा : हाँ वो आते ही होंगे, तुम जल्दी खाना खा लो और फोरन भाग जाओ।

(अजनबी को जूँ गोरा खाना देती है वो टूट पड़ता है और खाना खा के यहाँ वहां देखता है गोया लाठी ढूंढ़ रहा हो गोरा डांट कर पूछती है)।

गोरा : अब तुम यहाँ से चले जाओ।

अजनबी : जान–ए–मन मैं घुड़कियाँ सुनने का आदि नहीं हूँ तुम्हारे हाथ में सोंटा देख कर मैं जर्रा भी नहीं डरता, मैं चाहूँ तो अभी तुम्हारे हाथ से वो हत्यार छीन लूँ मगर तुम ने मेरे साथ नेकी की है इसलिए मैं तुम्हें जियादा तकलीफ नहीं दूँगा, तुम चल कर मुझे रास्ता बता दो।

गोरा : यहाँ से कहाँ जाओगे कोई रास्ता नहीं है

अजनबी : नदी के किनारे कोई नाव नहीं है?

गोरा : मेरे बाप की नाव है अगर तुम ले जाओगे तो वापस कौन ले आयेगा?

अजनबी : उस से मुझे कोई सरोकार नहीं बस तुम मुझे उस नाव तक पंहुचा दो।

गोरा : आओ संभल कर आना आगे रास्ता खरदर है...(कुछ देर चलने के बाद अजनबी कहेता है)।

अजनबी : अपने कपड़े मुझे उतार कर दे दो, जनाना लिबास में मुझे कोई पहेचान न सकेगा, क्यों, क्या सोचती हो? ये मेरी शराफत है के जिस चीज़ को बाजोर ले सकता हूँ उसके लिए तुम से फकीरों की तरह सवाल करता हूँ क्या एक इंसान की जान बचाने के लिए तुम इतनी सी तकलीफ भी बर्दाश्त नहीं करोगी? चलो जल्दी करो वरना मुझे जबरदस्ती करनी भी आती है... लो मेरे साफे से खुद को ढँक लो...।

(गोरा साड़ी उतार कर उसे दे देती है अजनबी उसकी साडी को



पहन लेता है और जोर से एक डंडा गोरा को मरता है गोरा गिर पड़ती है)

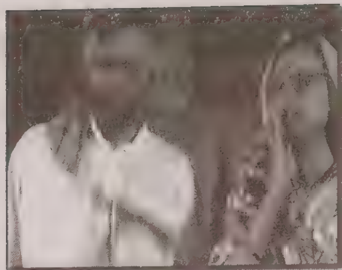
अजनबी : अब अगर तुम्हारा बाप आया भी तो तुम न बता सकोगी के मैं कौन हूँ और किधर गया..अब जहाँ कोई गाँव नज़र आयेगा वहां ही अपनी नाव को रोकूँ गा....जितनी जल्दी हो सके यहाँ से निकल जाना चाहिए वहां कंही रौशनी दिख रही, शायद कोई गाँव है... हां गाँव ही है... यहाँ पर भी हाथ साफ़ करना चाहिए कोई आदमी मिल जाय तो उसको लूट लेता हूँ ...हाँ कोई आ तो रहा है?

नोजवान : कौन है? अरे गोरा तुम मेरी भेजी हुई साडी पहन कर कहाँ घूम रही हो क्या तुम्हारे पिताजी भी आए हैं?...(उसका हाथ पकड़ लेता है अजनबी भागना चाहता है) अरे कहाँ भाग रही हो मुझ से, यूँ शर्मो मत, बताओ तुम यहाँ कैसे आईं?

अजनबी : ए हाथ छोड़ मेरा ...

नौजवान : अरे ये तो आई नहीं आया है ये हाथ तो नहीं छुटेगा.. लगता है आज सुबह तुम ने किसी मनहूस आदमी की सूरत देखि है जो तुम्हारा पाला मुझसे पड गया गोवर्धनदास के हाथ में फंस कर चोरों का कचूमर निकल जाता है, सर के एक बाल भी नहीं रहते, तुम्हारी ऐसी गत करूँगा कि तुम किसी के घर में सेंद डालने के लायक नहीं रहोगे तुम ने मेरी प्यारी गोरा के घर में डाका डाल कर अपने लिए बहुत कर लिया, ये वो ही साड़ी है जो मैं ने उसे कल भिजवाई थी।

अजनबी : ईश्वर गवाह है गोरा ने मुझ पर तरस खाकर ये साड़ी मुझे दी है, मैं ने उसके घर सेंद नहीं मारी है मैं चोर नहीं हूँ ऐसी भोली औरत को मैं नुकसान नहीं पहुँचा सकता था चाहे चोर या कातिल ही क्यों न होता जिस आदमी की हालत पर गोरा ने रहम किया है क्या गोरा का मंगेतर उसी आदमी के गले पर छुरी फेरेगा। मैं किस्मत का सताया हुवा गरीब आदमी हूँ भूलता भटकता गोरा के झोंपड़े तक जा पहुँचा उस ने मेरी राम कहानी सुनी उसे रहम आ गया। ये साड़ी उसने मुझे



दे दी के किसी तरह मेरी जान बच जाय मैं बिलकुल सच्च कहता हूँ जरा भी झूठ नहीं है।

नौजवान (गोबर्धन दास) : बेशक आप बहुत सच्चे और धर्मात्मा आदमी हैं कुछ अपना हाल मुझसे कहो तुम्हारा घर कहाँ है, शिवराम के मकान पर कैसे पहुँचे यूँ मैं नहीं छोड़नेका समझे।

अजनबी (डाकू) : मैं सारी कहानी कह दूंगा कल रात को हरदत्तपूर में डाकापड़ा, नुम्ब्रदार मारा गया, डाकू भाग गए मगर वहां लोगों का शुभा है के मैं भी उस डाके में शामिल था मगर ये दुश्मनों की कारस्तानीहै खामखा मेरे सर पर इलज़ाम थोप दिया। मजबूर होकर मैं भाग निकला। कल सारे दिन नालों और गढ़ों में छुपता फिर वरना इस वक्त तुम्हारे सामने खड़ा न होता।

नौजवान : अच्छा तो हरदूतपुर के डकेतों में हैं? ये कहिये गोरा शायद बड़ी रहम दिल है जो डकेतों की जान बचाती फिरती है अच्छा ये ही सही मगर उसने पुरानी साड़ी क्यों नहीं दी नई साड़ी क्यों दी जो मैं उसके लिए बढ़लगंज से तीन रूपए में लाया हूँ और जिसे पहन कर वो रानी मालूम होती है ये बताओ कोई अपने मंगेतर की दी हुई चीज़ को यूँ लुटाता है।

अजनबी : तुम्हारी दी हुई साडी तो वो खुद पहेने हुय है वो भला मुझे क्यों देती ये साड़ी बिलकुल इसी रंग की है ये उसके बाप ने दी है दोनों साड़ियाँ एक ही रंग की हैं

नौजवान : अच्छा ये भी सही तो उसने अपने बाप की नाव तुम्हें क्यों दी, क्या वो इतना नहीं जानती के नाव आप ही आप अपने ठिकाने पर नहीं चलीं आती, उसका जवाब दीजिये उसको अगर नुकसान का खयाल न हुवा तो क्या अपने बाप का खौफ भी न हुवा?

अजनबी : उसने मुझ से कहा तुम नाव ले जाओ मेरे पिताजी पूछेंगे तो मैं कह दूँगी एक पुरानी नाव के खोजानेसे अगर किसी बेगुनाहकी जान बच जाय तो इसका अफ़सोस नहीं करना चाहिए मैं तो खुद उसे नहीं लेता था मगर उसने ज़बरदस्ती मुझे उस पर बैठा दिया और कहने लगी मेरे



दादा ऐसे लालची और खुदगर्ज़ नहीं हैं तुम इसे ले जाओ अगर हो सके तो कल तक किसी मौताबर आदमी की मार्फ़त भेज देना।

नौजवान : मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं आता मुझे विश्वास है कि तुम ने ज़रूर परशु राम महतो का घर लूटा है शायद गोरा को भी मार डाला होगा तुम्हारा येही पेशा होगा इसलिए जब तक उसकी ज़बान से तस्दीक नहीं हो जाती मैं हरगिज़ न मानुँगा, अभी बहुत रात नहीं गई है, दस बजते बजते हम लोग पंहुँच जाएँगे मुझे गोरा को देखने का एक बहाना हाथ आ जाएगा दो चार मीठी मीठी बातें सुनुँगा अच्छा अच्छा खाना खाऊंगा और सुबह तक लौट आऊँगा लेकिन अगर तुम ने उसका बालभी बांकाकिया है तो तुम्हारी जान की खैर नहीं कुत्तों से बोटी बोटी नोचवा डालूँगा।

(गोबर्धन अन्दर देखते हुय)

नौजवान : माँ मैं शिवराम महतो के घर जाकर आ रहा हूँ आओ मेरे साथ (लाईट बुझतीहै)

अजनबी : अगर तुम्हें ये साबित हो जाय के मैंने शिवराम के घर में सेंद नहीं मारीतो मुझे छोड़ दो गे?

नौजवान : मैं अभी कुछ नहीं कह सकता वहां चल कर बताऊंगा

अजनबी : मैं वहाँ एक शर्त पर चलूँगा के अगर मैंने शिवराम के घर सेंद नहीं मारी हो और गोरा को कोई तकलीफ न दी हो तो तुम मुझे छोड़ दोगे वरना मैं यहाँ ही नदी में कूद पडूंगा और तैर कर उस पार निकल जाऊँगा पोलिस के हाथों में जाना नहीं चाहता

नौजवान : तुम्हारा इख्तियार है, जी चाहे पानी में कूदो, पड़ो या अपना सर पटक लो तुम्हारी खातिर से इतना कहता हूँ के अगर तुम ने यहाँ कोई शरारत नहीं की है न तो तुम्हें पोलिस के हवाले न करूँगा।

अजनबी : कसम खाओ

नौजवान : तुम्हारे सर की कसम (रौशनी बुझ जाती है)



गोरा : (अन्दर से गोरा की आवाज़ आती है) पिताजी आज इतनी देर क्यों कर दी?

नौजवान : अरे ये तो गोरा की आवाज़ है यानी गोरा सलामत है...क्या अभी तक तुम्हारे पिताजी नहीं आए?

(गोरा अपने शरीर को ढंकनेकी कोशिश कर रही है)

नौजवान : देखो गोरा शर्माओ मत जब महतो आ जायें तो जी भरके लजा लेना तुम इस औरत को जानती हो

गोरा : हाँ

नौजवान : इसने तुम्हारे यहाँ से कोई चीज़ चुराई

गोरा : नहीं

नौजवान : तुम ने अपनी साड़ी इसे दे दी?

गोरा : आँ उसने मुझसे छीन ली?

अजनबी : लेकिन....

नौजवान : तुमने अपनी नाव उसे क्यों दी?

गोरा : उसने ज़बरदस्ती खोल ली मैं मना करती रही

नौजवान : इसने तुम्हें मारा तो नहीं?

(गोरा रोने लगती है)

नौजवान : ठेर... कमीने तू मेरे हातों से नही बचेगा। जो डंडा तूने इसके हाथों से छीना था इसी से तेरा सर्वनाश कर दूंगा... तेरी इतनी हिम्मत जिस गोरा को मैंने कभी फूलों से नहीं मारा उसके साथ तू ने बेईज़्ज़ती की...

अजनबी : बचाओ मुझे बचाओ

नौजवान : कोई तुझे बचाने नहीं आयेगा कोई नहीं...तुझे.जमीं में खोद के गढ़ा दूंगा...

गोरा : और वो उनके पीछे दौड़े। सीभा लोगों ने देखा एक बड़ा से गढ़ा लोग समझ गए कि यही उस डाकू की कब्र है... जैसी करनी वैसी भरनी....

धोके की टट्टी



सूत्रधार : लाल मिर्च देखने में कैसी खूबसूरत होती है मगर खाने में कैसी कड़वी? सुरेंद्रू की भी यही कैफियत थी देखने में बहुत खुश वज़ा, खुश लिबास, ज़बान का, बहुत मीठा दोस्तों में हरदिल अज़ीज़, मगर बाला का नफ्स परवर, बद एखलाक, शरीर मदरसे की एंट्रेंस जमात में पढ़ता था सिर्फ सोलह साल से ज्यादा न था मगर मिज़ाज में अभी से आवारगी का दखल हो चुका था शराब की लज़्ज़तों से ज़बान मानूस हो चुकी थी और घर के संदूक खोल कर रुपए चुरा लेना तो एक मामूली बात थी माँ बाप समझा बुझाकर हार गए थे। स्कूल मास्टरों ने मारा पीटा, जुरमाना सब कुछ आज़मा के देखा, मगर सुरेंदरू ने जो रविश इख्तियार किया था उस से ज़रा भी नहीं मुड़ा शहर में कहीं बारात आये, कहीं नाच हो, सुरेंद्रू का वहां पंहुचना एक शरई अमर था उसे कभी किसी ने किताब पढ़ते नहीं देखा मगर ताज्जुब है वो हर साल पास, इम्तिहान मे कामियाब हो जाता इसका राज़ उसके ख़ास दोस्तों के अलावा और कोई नहीं जनता था हां इम्तिहान के दिनों में वो हेड मास्टर और दूसरे मास्टरों के मुलाज़िमों से ज़ियादा रब्त ज़ब्त कर लेता सुरेंद्रू में एक कमाल की बात यह थी कि उसकी निगाह इंसान के कमज़ोर हिस्से पर बहुत जल्द जा पंहुचती और वह इसका फायदा उठाता कोई स्कूल मास्टर ऐसा न था जिसके दाग धब्बे उस पर रोशन न हों इस गुर ने उसे एंट्रेंस तक निभाया यहाँ तक कि एंट्रेंस का सालाना इम्तेहान आया सुरेंद्रू ने इस मौके के लिए बड़े एहतमाम किये थे। सब स्कूल मास्टर उसके खैर अंदेश बन गए थे कामयाबी की सारी सूरतें उसके मुताबिक थी मगर ऐन वक़्त पर जब वह अपना



परचा लिखने में जुटा हुआ था तब हेड मास्टर साहेब की आवाज़ गूंजी।

हेड मास्टर : सुरेंद्रू कलम रख दो अब लिखने की इजाज़त नहीं

सूत्रधार : उसे नक़ल करते ही हेड मास्टर साहेब ने देख लिया, इश्तेहारी मुजरिम गिरफ्तार हो गया और उसका नाम स्कूल से ख़ारिज कर दिया गया मगर इस हादसे ने उस पर कोई असर नहीं डाला न तो उसे कलकत्ता युनिवर्सिटी में दाखला मिला और न हीं अलाहबाद युनिवर्सिटी में इसलिए वो लाहोर जा पंहुचा और वहां एक मदरसे में शरीक हो गया वहां जाकर उसने अपनी जगा बना ली। कॉलेज के प्रिंसिपल मिस्टर कॉटन जब लड़कियों के मदरसे का मोएना करने जाते तो कभी सुरेंदरू को अपने साथ ले जाते हेड मिस्ट्रेस मिस गुप्ता मुस्कुराकर उस से हाथ मिलाती और सुरेंदरू का दिल उमंग से फूल उठता एक दिन सुरेंदरू कॉलेज से आ रहा था के कलकत्ते के एक पुराने रफीक से आँखें चार हुई। यह बाबू हरी मोहन थे जो कलकत्ते में उसकी हरकतों को देख चुके थे

हरी मोहन : क्या भाई यहाँ कैसे?

सुरेंद्रू : बस यहाँ ही पढ़ता हूँ

हरी मोहन : यहाँ ठीक से हो या यहाँ भी वही हाल है?

सुरेंद्रू : भाई साहेब जिसे खुदा ने ख़राब बनाया है वो कभी अच्छा नहीं हो सकता मैंने बहुत कोशिश की, कि नेक बख्त बन जाऊं, मगर बन न सका यहाँ आपके अलावा मुझसे कोई भी वाकिफ नहीं है इसलिए मुझ गरीब पर अपनी नजर–इ–इनायत रखिये। आप चाहें तो बात की बात में मेरा रंग फीका कर सकते हैं मैं बिलकुल आपके बस में हूँ आपको मैंने हमेशा अपना बुज़ुर्ग और खैर अंदेश समझा है

हरी मोहन : तुम मुझे हमेशा अपना दोस्त समझना



ुरेंद्र : मैंने लाहौर में आकर बड़ा काम सर अंजाम दिया। मैंने एक यंग मेन यूनियन (young men union) बनाई और खुद उस का सेक्रेटरी बन गया। हमारे मकसद बहुत बुलंद थे जैसे नवजवानों में अदब और एखलाक की तालीम दी जाय, उनकी इल्मी और तालीमी मैदान में मदद की जाय, उसके लिए मेंबरों को माहवारी चंदा देना पड़ता था और उस चंदे से कुछ अखबार आते और जो पैसा बचता वो कार वगैरह में खर्च होता खैर इस काम में मुझे शानदार कामयाबी मिली एक माह के अन्दर यूनियन के ज्यादा मेम्बर बन गए, रुपए माहवार आने लगे यतीमों और कई विधवाओं की परवरिश होने लगी और इस कामयाबी का सेहरा मेरे सर था प्रिंसिपल काटन मुझे पहेले से ही मानते थे अब मेरे मुरीद बन गए

री मोहन : मगर सच्चाई यह थी मुख्तालीफ़ कॉलेजों के जितने बदमाश, आवारा, बद वज़ा, और बद कमाश लड़के थे वो ही उस के मेम्बर थे वो यहाँ गाने बजाने आते आवारा गर्दी करने आते यूनियन के सारे मेम्बर सुरेंद्र को अपना पेशवा और रहबर तस्लीम करते उसने हर एक के दिल में यह बात जमा दी थी के........

ुरेंद्र : अगर तुम बिना मेहनत और मुशक्कत के पास होना चाहते हो तो यूनियन के मेम्बर बन जाओ

री मोहन : सुरेंद्र को इम्तेहानी पर्चे इम्तेहान हॉल में पंहुचने से पहले मिल जाते और यही उसके असर और दबाव का राज़ था कॉलेज में सुरेंद्र की वो ही इज़्ज़त थी जो किसी प्रोफेसर की होती है शहर में इसके आगे अच्छे–अच्छे के सर झुक जाते।

ुरेंद्र : भाई तुम लोग क्यों अपनी आँखे फोड़ रहे हो?

क : यार परीक्षा है





दूसरा : नहीं पढ़ेंगे तो नाकाम हो जाएँगे और फिर घर से भी बेघर हो जाएँगे

सुरेंद्र : भाई तुम लोग यूनियन के मेम्बर हो, न चंदा हर महीने भरते हो, ना तो नाकाम कैसे होगे? अरे नाकाम होंगे वो जो पढ़ते हैं

हरी मोहन : और हुवा भी वो ही, कॉलेज के कुल ३० % बच्चे पास ही और यूनियन के १०० में से सिर्फ २५ फ़ैल ही। मगर असल राज़ किसी को समझ नहीं आया

सुरेंद्र : मैंने कभी ख्वाब में भी किताब खोलकर नहीं देखी थी ,अव्वल दर्जे में पास हुवा

हरी मोहन : इसी बीच मिस गुप्ता का तबादला हो गया और मिस रोहिणी सरकार कलकत्ते से उनकी जगह पर आयी रोहिणी हुसन ए अदा में मिस गुप्ता जैसी ही थी उस पर तुर्रा यह कि दोशीजा थी सुरेंद्र ने पहली ही नज़र में उसे ताड़ लिया रोहिणी भी पहली मुलाकात में उस पर मर मिटी, बस फिर क्या था चंद ही दिनों में दोनों एक दुसरे से इतने करीब आ गए कि बात शादी तक पंहुच गई सब ही खुश थे सिवाय मेरे ...

सुरेंद्र : क्या बात है हरी मोहन तुम मेरी शादी से खुश नहीं दिखते ?

हरी मोहन : नहीं-नहीं अच्छी बात है और फिर जब मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी।

सुरेंद्र : मिस गुप्ता खास तौर पर दिल्ली से आयी थी।

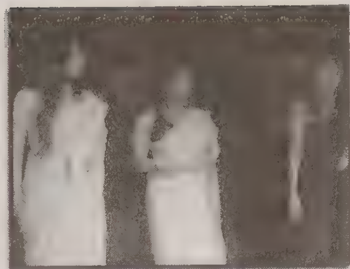
हरी मोहन : हाँ मुझसे भेंट हुई थी।

सुरेंद्र : अच्छा अब चलूँगा हम शिमला जा रहे हैं (exit)

हरी मोहन : तुम्हारा यह सफ़र ख़ुशी का नहीं रंज और गम का सफ़र है महिना भर दोनों शिमला में रहे और उस एक महीने में उन्हें एक दुसरे की खु बू का पूरा तजरुबा हो गया।

रोहिणी : हेलो मिस गुप्ता आप क्या समझती यहाँ मेरी ज़िन्दगी कैसी कट रही अजी सिर्फ और सिर्फ मज़ा है। ज़िन्दगी सुरेंद्र के साथ इतनी

भी अच्छी हो सकती है इसका तो मैंने तस्सवुर भी नहीं किया था, सुरेंद्रू इतने अच्छे इंसान हैं कि पूछिए मत शायद मेरी तकदीर मुझे कलकत्ता से यहाँ इसलिए लायी थी कि मैं ऐसे अज़ीम शख्स की पत्नी बनूं।



हरी मोहन : शुरू शुरू में तो इसी तरह के ख़त आते मगर फिर खतों का मिज़ाज बदल गया...ग़म, हसरत, प्रेशर और तकलीफों भरे खतों का ढेर लग गया और आखरी ख़त तो बहुत दिल शिकन था उस में लिखा था...

रोहिणी : प्यारी बहन मुझे ऐसा खौफ होता है के इस ख्वाब ए मुसर्रत से बहुत जल्दी बेदार होना पड़ेगा जिस चीज़ को मैं ने खालिस सोना समझा था वो चमकता हुवा पीतल निकला अफ़सोस मैंने अपनी मोहब्बत की दीवार बालू पे खड़ी की थी खुदा करे मेरे शुभे ग़लत हों खुदा न करे मेरे यह वास्तव में सही हों प्यारी बहन मगर मेरा दिल कहता है कि मेरी हस्ती का सरमाया ख़तम हो गया है अब बकिया ज़िन्दगी रोने में कटेगी।

हरी मोहन : लाहौर में जब मालूम पड़ा कि यह लोग वापस आ रहे हैं तो लोगों को बहुत ताज्जुब हुआ कहाँ तो दो महीने का बोलकर गए थे और कहाँ एक महीने में आ गए मियां बीवी लाहौर स्टेशन पर उतरे सुरेंद्रू की आँखें शराब से सुर्ख हो रही थीं और रोहिणी शगुफ्ता फूल से मुरझा गई थी साथ में कोई सामान न था क्या हुवा कोई सामान साथ नहीं

रोहिणी : सब कुछ शराब की नज़र हुवा और जेवर जुव्वे के (exit)

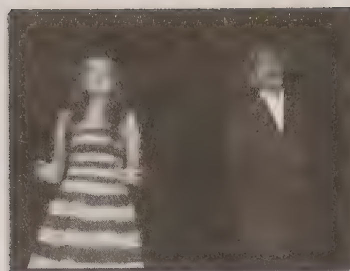
हरी मोहन : मुझे तो मालूम था कि इस शादी का यही अंजाम हो गा... लाहौर में आकर रोहिणी अपने कॉलेज में मसरूफ हो गई मगर सुरेंद्रू शराब से बहार नहीं निकल पाया और जब रोहिणी उसे समझाने की कोशिश करती सुरेंद्रू के तेवर बदल जाते। प्रिंसिपल काटन ने यह समझ कर



(समझा) के बेकारी ने इसकी यह गत बना दी है उसे एक रलर्लीपींरपीं के दफ्तर में एक बहुत माकूल जगह दिला दी एक रोज़ हेड क्लर्क ने एक ऐसा काम दे दिया जहाँ लाखों रुपयों का हिसाब करना था जो उसके बस में नहीं था। इसलिए वहां से भगा और फिर कही टिक न पाया रोहिणी सुरेंद्रू को जब समझती वो बदतमीजी पर उतर आता बेचारी बे ज़बान औरत दिन भर बच्चों को पढ़ाती और गृहस्थी का काम भी करती मियां बीवी की तकरार प्रिंसिपल काटन तक पंहुची और उन्होंने रोहिणी का इस्तीफा ले लिया खुदा जाने किस किस देस की ख़ाक छानते हुए आखिर वो कश्मीर पंहुची वहां से जो उसने मिस गुप्ता को ख़त लिखा वो निहायत दर्दनाक था।

रोहिणी : बहन मेरा क्या हाल पूछती हो? अब ज़िन्दगी से जी भर गया है मगर तुम्हारे बहनोई साहब की हालत निहायत खराब है खुदा गवाह है मैं अब भी उन की प्रतिक्षा करती हूँ मैंने अपना सब कुछ उन पर निछावर कर दिया मगर हाय शराब तेरा सत्यानास हो, हाय जुवा तेरा बुरा हो यह दो मर्ज़ उनके जान के गाहक हो रहे हैं बस और जियादा क्या कहूँ गी तुम से कहते हुय शर्म आती है और शर्म की तो इतनी परवाह नहीं, क्योंकि मुद्दत हुवे उसे रुखसत हो चुकी है मगर तुम्हें सुन कर रंज होगा बस यह ही समझ लो के तुम्हारी भोली भली रोहिणी अब अपने किये पर पछताती और खून के आंसू बहाती है।

अंधेर



सूत्रधार : नाग पंचमी आई साठे के जिंदा दिल नौजवानों की मर्दाना सदाएं बुलंद हुई, कुर्ब ओ ज्वर के जोर अजमा एकठे ही और अखाड़े पर तम्बोलियों ने अपनी दुकाने सजाईं क्योंकि आज ज़ोराज्मै और दोस्ताना मुकाबले का दिन है औरतों ने गोबर से अपने घर लिपे और गाती बजती कटोरों में दूध चावल लिए नाग पूजने चली।

सूत्रधार-२ : साठे और पाठे दो मौजे थे दोनों गंगा किनारे खेती बाड़ी में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। इसीलिए आपस में फौजदारियों की ग्राम बाजारी थी पता नहीं कबसे उनमें दुश्मनी थी? साठे वालों को यह घमंड था के उन्होंने पाठे वालों को कभी सर उठाने न दिया.... और पाठे वाले अपने दुश्मनों को तकलीफ देना ही अपनी ज़िन्दगी का सबसे अहम काम समझते थे।

सूत्रधार : उनकी तारिख फुतुहात से भरी हुई थी पाठे के चरवाहे यह गीत गाते चलते थे....काठे वाले कायर सागर पाठे वाले हैं सरदार...

सूत्रधार-१ : और साठे के धोबी गाते ....साठे वाले साथ हाथ के ...जिन के हाथ सदा तर वार ....उनलोगों के जनम मनाये ...जिन पाठे मान ले अवतार ...गरज रकाबत का यह जोश बच्चोंमें माँ के दूध के साथ दाखिल होता था..और इसके इज़हार का सब से मौजु मौका यह ही नाग पंचमी का दिन था

सूत्रधार : उस दिन के लिए साल भर तैय्यारियाँ होती रहती थी आज उनमें मार्के की कुश्ती होने वाली थी साठे को गोपाल पर नाज़ था

सूत्रधार-१ : और पाठे को बलदेव पर दोनों सुरमा अखाड़े में उतरे कुश्ती शुरू हुई दोनों ही तरफ से लोग चिल्ला रहे थे...।



एक आदमी: अरे मार दिया, मार दिया...गोपाल को उसकी नानी याद दिला दी।

दूसरा आदमी : बेटे नानी तो बलदेव को याद आयेगी, यह देखो गोपाल ने पछाड़ा...

तीसरा आदमी : अरे छोड़ना नहीं बलदेव ...

चौथ आदमी : अरे धर के चांप दे साले को ...

सूत्रधार : गोपाल जीत गया और बलदेव को हार का सामना करना पड़ेगा

सूत्रधार १ : रात दस बजे का वक्त, सावन का महीना आसमान पर काली घटाएं छाई हुई थीं। तारीकी का यह आलम था गोया रौशनी का वजूद ही नहीं रहा। साठे के झोंपड़े और मकानात को बहुत गौर से देखने पर काली-काली भेड़ें नजर आते थे न बच्चे रोते थे न औरते गाती थी...।

सूत्रधार : मतलब मुकम्मल ख़ामोशी थी... सिवाय चिलम के उनका कोई साथी न था...जरा खटका हुवा और चौंक पड़े । तारीकी खौफ का दूसरा नाम है उन्ही रखवालों में आज का हीरो साठे कामाया नाज़ गोपाल भी है जो अपनी मिधिया बैठे हुए और नींद को भागने के लिए धीमे सुरों में गा रहा है...

गोपाल : मैं तो तोसे नैन लगाई पछताई रे

सूत्रधार १ : दफातन उसे किसी के पैरों की आहट मालुम हुई। जैसे हिरन कुत्तों की आवाज़ों को कान लगाकर सुनता है...उसी तरह गोपाल ने भी कान लगाकर सुना, नींद दूर हो गई, लठ लिए अपनी मेढिया से बहार निकला वो जू ही बहार आया उस पर लाठी का भरपूर हाथ पड़ा। वो वहीँ तिलमिला कर गिर पड़ा।

सूत्रधार : हमलावरों ने तो अपनी दानिस्त में उसका काम तमाम कर दिया था लेकिन उसकी हयात अभी बाकी थी यह पाठे के गैरत मंद लोग थे जिन्होंने रात के अँधेरे की आड़ में अपनी हार का बदला लिया था

सूत्रधार १ : गोपाल ज़ात का अहीर था, न पढ़ा न लिखा, दिमाग रोशन ही



नहीं हुवा तो शमा–ए–जिस्म क्यों घुलती गठा हुवा बदन था, ललकार कर गता तो सुनने वाले मिल भर पर बैठे ही उसकी तानो का मज़ा लेते, जिस तरह शेर सुर्ख शोलों से डरता है, उसी तरह सुर्ख साफे से उसकी रूह लर्ज़ा हो जाती। अगरचे साठे के एक जवान हिम्मत सुरमा के लिए ये बेमानी और गैर मामूली बात थी लेकिन उसका कुछ बस न था सिपाही की वो खौफनाक तस्वीर जो उसके बचपन में खींची गई थी, जो निकलती नहीं थी

सूत्रधार : उसे डराया गया था लाल साफे के सिपाही से इसी कारण वो अपने बचपन में ही अपनी शरारतें भूल गया उसकी मिठाई की भूक मिट गई लेकिन सिपाही की तस्वीर अभी तक कायम थी।

सूत्रधार १ : आज भी लाल साफे वाले उसके दरवाजे पर खड़े थे और गोपाल ज़ख्मों से चूर अपने मकान के एक अँधेरे कोने में छुपा बैठा था कोई अहीर की फरयाद सुन्ने वाला न था।

दरोगा : मौजे में इतनी संगीन वारदात हो गई है और इस गोपाल ने शिकायत दर्ज नहीं करवाई ।

मुखिया : हुजुर अब माफ़ी दे दी जाए।

दरोगा : ये उसकी शरारत है दुनिया जानती है जुर्म करना और जुर्म को छुपाना दोनों ही बराबर हैं, मैं उस बदमाश को इसका मज़ा चखाऊंगा उसे अपनी ताकत का घमंड है और कोई बात नहीं है लातों के भुत बातों से नहीं मानते।

मुखिया : हुजुर अब माफ़ी दी जाए।

दरोगा : अबे हुजुर के बच्चे कुछ सठिया तो नहीं गया है...अगर इसी तरह माफ़ी देनी होती तो क्या मुझे कुत्ते ने काटा था जो मैं यहाँ आता न कोई मामला न कोई मामले की बात बस माफ़ी माफ़ी की रट लगाय



है, मुझे ज्यादा फुर्सत नहीं है मैं नमाज़ पढता हूँ जब तक तुम अपना सलाह मशवरा कर लो और मुझे हंसी ख़ुशी रुखसत करो वरना गौस खान को जानते हो मेरा मारा पानी नहीं माँगता।

मुखिया : जी हुज़ूर ...ए गोरा सुन, ये दरोगा बड़ा काफ़िर है...पचास से नीचे तो बात ही नहीं करता, दर्जा अव्वल का थानेदार है, मैंने बहुत कहा हुजुर गरीब आदमी है, घर में कुछ सुभीता नहीं है पर मानता ही नहीं

गोरा : दादा इनकी जान बच जाय किसी तरह की आंच न आने पावे रुपए पैसे की कौन बात है इसी दिन के लिए तो कमाया जाता है।

गोपाल : पचास रुपए की कौन कहे मैं पचास कौड़ियाँ भी नहीं दूंगा कोई गदर, मैंने कुसूर किया है।

मुखिया : रसान–रसान बोलो कहीं सुन ले तो गज़ब हो जाएगा।

गोपाल : मैं एक कौड़ी नहीं दूँगा। देखूं मुझे कौन फांसी लगाता है।

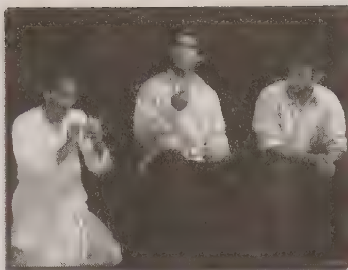
गोरा : अच्छा जब मैं तुमसे रुपए मांगूँ तो मत देना ...

सूत्रधार : ये कहकर गोरा ने छप्पर के एक कोने में से रुपियों की पोटली निकाली और मुखिया के हाथों में रख दी। गोपाल दांत पीस कर उठा, पर मुखिया साहेब पहेले ही खिसक गये।

सूत्रधार १ : मुखिया साहेब ने गोपाल की बात सुन ली थी और दुवा कर रहे थे कि ए खुदा इस मरदूद के दिल को नर्म कर दे इतने में मुखिया ने बहार आकर पचीस रूपए की पोटली दिखाई पचीस उसने रास्ते में ही गायब कर लिए थे।

सूत्रधार : दरोगाजी ने खुदा का शुक्र अदा किया...जेब में रुपया रखा, और वहां से हवा हुए मोज़ि का गला घुट गया, कसाब के गले पर छुरी फिर गई, तेली पिस गया।

सूत्रधार १ : मुखिया साहब ने गोपाल की गर्दन पर एहसान रखा ....उधर गोपाल ने गोरा की खूब खबर ली...गांव में रात भर ये ही चर्चा रही के



गोपाल बहुत बचा और उसका सेहरा मुखिया के सर पर था बलाय-ए-अज़िम आई थी जो टल गई।

सूत्रधार : लोग कह रहे थे नीम तले वाली देवी ने, देवताओं ने, दीवान हरदोल ने, तालाब के किनारे वाली सती ने गोपाल की रक्षा की ये उन्ही का प्रताप है देवी की पूजा होनी ज़रूरी थी। सत्य नारायण की कथा भी लाजिम हो गई

सूत्रधार-१ : फिर सुबह हो गई, मगर गोपाल के घर पर बजाय सुर्ख पगड़ियों के लाल साड़ियों का जमघट था। गोरा आज देवी की पूजा करने जाती थी। गांव की औरतें उसका साथ देने आई थी। उसका घर सौंधी-सौंधी खुशबु से महक रहा था गोरा ने मंदिर में पूजा की, अपने घर को कहारन से लिपवाया क्योंकि शाम को सत्यनारायण की कथा होने वाली थी।

सूत्रधार : शाम हुई पूरा गांव सत्यनारायण की कथा सुनने जमा हुवा। पंडित मोटेराम कंधे पर झोली लटकाय हाथ में शंख लिए सत्यनारायण की कथा सुनाने गोपाल के घर पंहुचे। गोपाल भी एक तरफ को खड़ा यह सब मंज़र देख रहा था मुखिया ने हमदर्दी से कहा.....

मुखिया : गोपाल किस्मत वाले होके बच गये, ये सत्यनारायण की महिमा ही थी के तुम बच गये तुम पर कोई आंच नहीं आई।

गोपाल : सत्यनारायण की महिमा नहीं ये अंधेर है अंधेर....अंधेर के सिवा कुछ नहीं...



कानूनी कुमार

कानूनी कुमार : मैं कानूनी कुमार एम् एल ऐ... इसी तरह समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में सुबह शाम उलझा रहता हूँ... देश की चिंताओं में मेरी देह कमज़ोर हो गई है... सदेव देश उद्धार की फ़िक्र में पड़ा रहता हूँ। ओह हो देश की दशा कितनी खराब होगई है... गवर्में ट कुछ नहीं करती... बस दावतें खाना और मौज उड़ाना उसका काम है... आह ये कोमल कुमार सिगरेट पि रहा है... शोक महा शोक... कोई कुछ नहीं कहता... कोई उसको रोकने की कोशिश नहीं करता... तम्बाकू कितनी ज़हेरिली चीज़ है... बालकों को उस से कितनी हानि होती है... ये कोई नहीं जानता... ये देखिये मेरे हाथ में तम्बाकू से मरने वालों की रिपोर्ट है... अजी रोंगटे खड़े हो जाते हैं... जितने बालक अपराधी हैं उन में ७५ प्रति सैंकड़ो सिगरेट बाज़ होते हैं... बड़ी भयंकर दशा है... हम क्या करें। लाख समझाएं कोई सुनता ही नहीं। इसको कानून से रोकना चाहिए... नहीं तो अनर्थ हो जायगा... इसको नोट कर लेता हूँ... तम्बाकू बहिष्कार बिल पेश करूँगा... कौंसिल खुलते ही ये बिल पेश कर देना चाहिए... गजब है... गजब... कितना घोर अन्याय है... कितना गिरा हुवा वैव्हार है... ये कोमलांगी सुंदरियां चादर में लिपटी हुई कितनी भद्दी और फूहड मालूम होती हैं... तभी तो देश का ये हाल हो रहा है... (रिपोर्ट पढता है) स्त्रियों की मौत की संख्या बढ़ रही है... तपे दिक् उछालता चला आ रहा है... प्रसोत की बिमारी आंधी की तरह चढ़ी आ रही है... और हम हैं की आँखे बंद किये पड़े हैं... बहुत जल्द ऋषियों की भूमि रसातल को चली जायेगी इसका कंही निशान भी न रहेगा। गवर्मेंट



को क्या फ़िक्र है। हमलोग कितने पाशान हो गए हैं। आँखों के सामने ये अत्याचार देखते हैं और जरा भी नहीं चोंकते। यह मृत्यु का शेथ्ल्या है। यहाँ भी कानून की ज़रूरत है। एक ऐसा कानून बनना चाहिए जिससे कोई स्त्री पर्दे में न रह सके। अब समय आ गया है के इस विषय में सरकार कदम बढ़ाए कानूनी मदद के बगैर कोई सुधार नहीं हो सकता... और यहाँ कानूनी मदद की जितनी ज़रूरत उतनी और कहाँ हो सकती है। माताओं पर देश का भविष्य अवलंबित होता है। पर्दा हटाओ बिल पेश होना चाहिए बड़ा विरोध होगा। लेकिन गवर्मेंट को साहस से काम लेना होगा। ऐसे नपुंसक विरोध के भय से उद्धार के कार्य में बाधा नहीं पड़नी चाहिए (नोट करता है) ये बिल भी असम्बली के खुलते पेश कर देना होगा। बहुत विलम्ब की गुंजाइश नहीं है। वरना मरीज़ का अंत हो जायेगा। (कुछ लिखने लगता है... एक भिकारी आता है)

भिकारी : जय हो सरकार लक्ष्मी फूलें फलें...

कानूनीकुमार : हट जा यहाँ से सुवर... अरे कोई काम क्यों नही करता?

भिकारी : बड़ा धर्म होगा सरकार भूख के मारे आँखों तले अँधेरा छा गया है...

कानूनी कुमार : दूर रह सुवर हट जा सामने से... अबे हट नहीं तो खिंच के दो थप्पड़ दूँगा... ये ऋशियों की भूमि आज भिक्षकों की भूमि हो रही है... वाहन रेवड के रेवड और दल के दल भिकारी हैं। ये गवर्मेंट की लापर्वाहि की बरकत है। इंग्लॅण्ड में कोई भिकारी भिक नहीं मांगता... पोलिस पकड़ कर काल कोठरी में बंद कर देती है... किसी सभ्य देश में इतने भीख मंगे भीख नहीं मांगते... ये पराधीन गुलाम भारत है... जहाँ ऐसी बातें आज बीसवीं सदी में भी संभव



हैं... ओह ५०, ५० लाख आदमी केवल भीख मांग कर ही गुज़ारा कर रहे हैं और इसमें कोई शक नहीं है की जल्द ही ये संख्या दुगनी हो जायेगी... ये पेशा लिखाना कौन पसंद करता है। एक करोड से कम भिकारी इस देश में नहीं हैं... ये तो भिकारियों की बात हुई जो द्वार द्वार झोली लिए घुमते हैं... इसके उपरांत टिकाधारी कोपीनदारी जटाधारी समोदाय भी तो है जिन की समस्या कम से कम दो करोड होगी... जिस देश में इतने हरामखोर मुफ्तका माल उड़ानेवाले दूसरों की कमाई पर मोटे होने वाले प्राणी हो, उसकी दशा क्यों न इतनी हिन् हो? आश्चर्य यही है के अब तक देश जीवित कैसे है (नोट करता है) एक बिल की सख्त ज़रूरत है तुरंत पेश करना चाहिए, नाम हो 'भिक माँगा बहिष्कार बिल' खूब जूतियाँ चलेंगी धरम के सूत्रधार खूब नाचेंगे खूब गालियां देंगे गवर्मेंट भी कन्नी काटेगी मगर सुधार का मार्ग तो काँटों से भरा ही है। तीनो ही बिल मेरे नाम से होंगे फिर देखिये कैसी खलबली मचती है। (एक आवाज़ आती है चाय चाय गर्म, आइये मीठी मीठी चाय पीजिए अदरकवाली चाय पीजिए...) चायवाले की दुकान पर एक भी ग्राहक नहीं है क्या मुर्ख देश है... इतनी बल विरुधक वस्तु और ग्राहक कोई नहीं... सभ्य देशों में पानी की जगह चाय पि जाती है। (रिपोर्ट देखता है) इंग्लॅण्डवाले मुर्ख नहीं हैं... उनका आज संसार पर अधिपत्य है... इसमें चाय का कितना बड़ा भाग है... कौन इसका अनुमान कर सकता है... यहाँ बेचारा चायवाला खड़ा है और कोई उसके पास नहीं फटकता। चीनवाले चाय पि कर स्वादीन हो गए, मगर हम चाय नहीं पियेंगे। क्या अक्ल है, गवर्मेंट का सारा दोष है। (नोट करता है) सारे देश की मति मारी गई है... गवर्मेंट से प्रश्न करना चाहिए... असम्बली खुलते ही प्रश्नो का तांता लगा दूंगा।... क्या गवर्मेंट बतायेगी के पांच सालों में भारत वर्ष में चाय की खपत



कितनी बढ़ी है... और उसका सर्व सादारण में प्रचार करने के लिए गवर्मेंटने क्या कदम उठाये हैं। (मिसस बोस दाखिल होती है)... हेलो मिसस बोस, आप खूब आई, कहिये किधर की सेर हो रही है। अबकी अलोक में आप की कविता बड़ी सुंदर थी मैं तो पढ़कर मस्त हो गया, इस नन्हे से हृदय में इतने भाव कहाँ से आ जाते हैं। मुझे आश्चर्य होता है। शब्दों नियास की तो आप रानी हैं। ऐसे ऐसे चोट करनेवाले भाव आप को कैसे सूझ जाते हैं।

मिसस बोस : दिल जलता है तो उसमें अपने आप धुवें के बादल निकलते है। जब तक स्त्री समाज पर पुरुष का अत्याचार रहेगा ऐसे भाव की कमी न रहेगी।

कानूनीकुमार : क्या इधर फिर कोई नई बात हो गई?

मिसस बोस : रोज ही होती है मेरे लिए डाक्टर बोस की आज्ञा नहीं के मैं किसी से मिलने जाऊं। अब की कैसी गर्मी पड़ी के सारा रक्त जल गया पर मैं पहाड़ों पे न जा सकी मुझसे ये अत्याचार ये गुलामी सही नहीं जाती।

कानूनी कुमार : डाक्टर बोस खुद भी तो पहाड़ों पर नहीं गए?

मिसस बोस : वो न जाएँ, उन्हें धन की हाय हाय पड़ी है। मुझे क्यों अपने साथ लिए मरते हैं। वो क्लब में नहीं जाना चाहते हैं। उन का समय रूपए उगलता है मुझे क्यों रोकते हैं। वह खदर पहनें, मुझे क्यों मेरे पसंद के कपड़े पहनने से रोकते हैं। वो अपनी माता और भाइयों के गुलाम बने रहें। मुझे क्यों उन के साथ रो कर दिन काटने पर मजबूर करते हैं। मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकता। अमरीका में एक कटु वचन कहने पर सम्बन्ध विच्छेद हो



जाता है पुरुष जरा देर से आया और स्त्रीने तलाक दिया। वह स्वाधीनता का देश है, वहां के लोगों के विचार स्वाधीन हैं ये गुलामों का देश है, यहाँ हर एक बात में गुलामी की छाप है। मैं अब डाक्टर बोस के साथ नहीं रह सकती नाकों दम आ गया है। इसका उत्तरदाइत्व उन्ही लोगों पर है, जो समाज के नेता और व्यवस्थापक बनते हैं। अगर आप चाहते हैं के स्त्रियों को गुलाम बना कर स्वाधीन हो जाएँ तो यह अन्हूनी बात है, जब तक तलाक का कानून न जारी होगा आप का स्वराज्य आकाश कुसुम ही रहेगा। डाक्टर बोस को आप जानते ही हैं उनकी धरम में कितनी श्रद्धा है। खब्त कहिये मुझे धरम के नाम पर घिढ़ना है। इसी धरमने स्त्री जातीको पुरुष की दासी बना दिया है। मेरा बस चले तो मैं सारे धर्म की पोथियों को उठाकर परनाले में फेंक दूँ।

(मिसेस अय्यर आती हैं)

कानूनी कुमार : हेलो मिसेस अय्यर आप खूब आई। कहिये किधर की सेर हो रही है। अलोक में अब की आप का लेख पढ़ा अत्यंत सुंदर था। मैं तो पढ़ कर दंग रह गया।

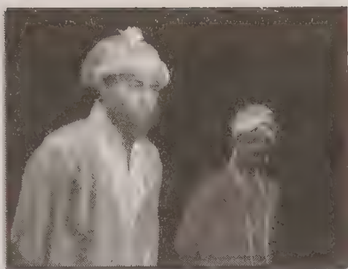
मिसेस अय्यर : दंग ही तो रहेंगे या कुछ किया भी। हम स्त्रिया अपना कलेजा निकल कर रख दें लेकिन पुरुष का दिल कभी नहीं पसीज़ेगा।

मिसेस बोस : सत्य बिलकुल सत्य...

मिसेस अय्यर : भगर अब सस पुरुष राजका बहुत जल्द अंत हो जायेगा... स्त्रियां अब कैद में नहीं रह सकतीं मिस्टर अय्यर की मैं सूरत भी देखना नहीं चाहती।

कानूकी कुमार : मिस्टर अय्यर तो खुबसूरत आदमी हैं।

मिसेस अय्यर : उनकी सूरत उन्हें मुबारक रहे। मैं खुबसूरत पराधीनता नहीं चाहती बदसूरत स्वाधीनता चाहती हूँ। वो मुझे जबरदस्ती पहाड़ी पर ले गए। वहाँकी ठण्ड मुझ से सही नही जाती कितना कहा मुझे



मत लेजाओ, मगर किसी तरह न माने मैं किसी के पीछे कुतिया की तरह चलना नहीं चाहती।

कानूनी कुमार : अब मुझे मालूम हो गया तलाक का बिल असेम्बली में पेश करना पड़ेगा।

मिसेस अय्यर : खैर आप को मालूम तो हुवा मगर शायद कयामत में।

कानूनी कुमार : नहीं मिसेस अय्यर अबकी छुटियों के बाद ही ये बिल पेश होगा। और धूमधाम के साथ पेश होगा। बेशक पुरुषों का अत्याचार बढ़ रहा है जिस प्रथा का विरोध आप दोनों महिलाएं कर रही हैं वो अवश्य हिन्दू समाज के लिए घात है। अगर हमें सभ्य बनना है तो सभ्य देशों के पद चिन्हों पर चलना होगा। धर्म के ठेकेदार शोर मचाएंगे उनकी कोई परवाह नहीं। उनकी खबर लेना आप दोनों महिलाओं का काम होगा। ऐसा उनको ठीक करना के मुंह न दिखा सकें।

मिसेस आय्यर : पेशगी मुबारकबाद देती हूँ।

मिसेस बोस : आज इसके घर में घी का चिराग जलेगा। यहाँ से सीधे बोस के पास गई होगी मैं भी चलती हूँ।

(आचार्य आते हैं।)

आचार्य : औरतें चली गईं मैं आ जाऊं।

कानूनी कुमार : आईये आईये मिस्टर आचार्य... आप तो उस दिन खूब आये आज किधर की सैर हो रही है। होटल का क्या हाल है ?

आचार्य : कुत्ते की मौत मर रहा हूँ मैं। इतना बढ़िया भोजन इतना साफ़ सुथरा मकान ऐसी रौशनी इतना आराम फिर भी ग्राहक नहीं आते, समझ में नहीं आता... अब कितना दाम घटाऊं। इन दामों में घर में मोटा खाना भी नसीब नहीं होता। उसपर सारे ज़माने



की झंझट, कभी नौकर का रोना, कभी दूधवालेका, कभी धोबीका, कभी म्हेत्रका, जिंदगी दुशवार है फिर भी आधे कमरे खाली हैं।

कानूनी कुमार: यह तो आपने बुरी खबर सुनाई।

आचार्य : पश्चिम में क्यो इतनी सुख शांति है क्यों इतना प्रकाश और धुन है? क्यों इतनी स्वाधीनता और बल है। इन्ही होटलों के प्रसाद से। होटल पश्चिमी गौरव का मुख्याअंग है। पश्चिमी सभ्यता का प्राण है। अगर आप भारत को उन्नति की शिखर पर देखना चाहते हैं तो जीवन का प्रचार कीजिये। इसके सिवा दूसरा उपाय नहीं है। जब तक छोटी छोटी घरेलू कनातों से मुक्त न हो जाएँगे, आप उन्नति कर ही नहीं सकते। राजों रईसों को अलग घर में रहने दीजिए वो एक की जगह दस खर्च करते हैं। मध्यम श्रेणीवालों के लिए होटल के प्रचार में ही सब कुछ है हम अपने सारे महमानों की फ़िक्र अपने सर लेने को तैयार हैं फिर भी जनता की आँखे नहीं खुलती, इन मूर्खों की आँखें उस वक्त तक नहीं खुलेंगी जब तक कानून न बन जाये।

कानूनी कुमार : हाँ मैं भी सोच रहा हूँ। ज़रूर कानून से मदद लेनी चाहिए। एक ऐसा कानून बन जाय के जिन लोगों की आय ५०० से कम हो वो होटलों में रहें। क्यों?

आचार्य : आप अगर यह कानून बना दें तो आनेवाली संतान आप को मुक्त दाता समझेगी। आप एक कदम में देश को ५०० वर्ष की मंजिल तय करवा देगे।

कानूनी कुमार : तो लो अब की यह कानून भी असम्बली कुलते ही पेश कर दूँगा। बड़ा शोर मचेगा। लोग देश द्रोही और न जाने क्या क्या कहेंगे। पर मैं इस के लिए तैयार हूँ। कितना दुःख होता है जब लोगों को अहीर के द्वार पर लुटिया लिये खड़ा देखता हूँ। स्त्रियों का जीवन



तो नर्क तुल्य हो रहा है। सुबह से दस बारह बजे तक घरों के धंधों से फुर्सत नहीं। कभी बर्तन मांझो, कभी भोजन बनाओ, कभी झाड़ू लगाओ। फिर स्वास्थ्य कैसे बने? जीवन कैसे सुखी हो? सैर कैसे करें? जीवन के अमोद प्रमोद का कैसे लुत्फ उठाएँ। आपने ठीक कहा एक कदम में ५०० साल की मंजिल तय हो जायेगी।

आचार्य : तो अबकी बिल पेश कर दीजिएगा।

कानूनी कुमार : अवश्य।

आचार्य : अच्छा नमस्ते।

कानूनी कुमार : नमस्ते... (आचार्य बहार निकल जाता है) हाय हाय वो देखिये... इस समाज का इस जीवन का और इस देश का सत्यानाश हो, जहाँ रमणीयों को केवल बच्चा देने की मशीन समझा जाता है... इस बेचारी को जीवन का क्या सुख, कितनी ही ऐसी बहेनें इस जंजाल में फंस कर ३२,३५ की अवस्था में जब के वस्तो में जीवन को सुखी होना चाहिए रुग्ण होकर संसार यात्रा समाप्त कर देती हैं... हाय भारत यह विपति तेरे सर से कब टलेगी? संसार में ऐसे ऐसे पाशन हृदय मनुष्य पड़े हुवे हैं जिन्हे इस दुखयारी पर जरा भी दया नही आती। ऐसे पाशन, ऐसे पाखंडी समाज को, जो स्त्रीको अपनी वासना की बेदी पर बलिदान करता है, कानून के सिवा और किस विधि से सचेत किया जाय? और कोई उपाय ही नहीं है। नरहत्या का जो दण्ड है वोही दण्ड ऐसे मनुष्यों को मिलना चाहिए। मुबारक होगा वो दिन जब भारत में इस नाशी प्रथा का अंत हो जायगा। स्त्रीका मरण, बच्चोंका मरण और जिस समाज का जीवन ऐसी संतानों पर आधारित हो, तो क्यों न इस मरण का दण्ड इन बदमाशों को दिया जाय। कितने अंधे लोग हैं।



बेकारी का यह हाल है के किसी को भर पेट रोटियां नहीं मिलतीं। बच्चों को दूध स्वप्न में नहीं मिलता और यह अंधे हैं के बच्चे पे बच्चे पैदा किये जा रहे हैं। सन्तान निग्रह बिल की जितनी ज़रूरत है इस देश को उतनी और किसी कानून की ज़रूरत नहीं है। असम्बली खुलते ही यह बिल पेश कर दूँगा। प्रलय हो जायेगा। यह जानता हूँ, पर और उपाय ही क्या है। दो बच्चों से ज्यादा जिस के हों उसको कम से कम पांच वर्ष की क़ैद, उस में पांच महीने से कम की काल कोठरी न हो। जिस की आमदनी सो रूपए से कम हो उसे सन्तान पैदा करने का अधिकार ही न हो। कितना सुख से जीवन कटेगा। हाँ एक दफा यह भी रहे के एक संतान के बाद कम से कम सात वर्ष तक दूसरी संतान न आने पावे। तब इस देश में सुख और संतोष का साम्राज्य होगा। तब स्त्रियों और बच्चों के मुंह पर खून की सुर्खी नजर आयेगी। तब मज़बूत हाथ पावों और मज़बूत दिल और जिगर पुरुष उत्पन्न होंगे। (मिसेस कानूनी कुमार आती है)

मिसेस : क्या कर रहे हो? वोही धून।

कानूनी कुमार : उपन्यास पढ़ रहा हूँ।

मिसेस : तुम सारी दुनिया के लिए कानून बनाते हो एक मेरे लिए भी बना दो। इससे देश का जितना उपकार होगा उतना और किसी कानून से नहीं होगा। तुम्हारा नाम अमर हो जायगा और घर घर तुम्हारी पूजा होगी।

कानूनी कुमार : अगर तुम्हारा ख्याल है के मैं नाम और यश के लिए देश की सेवा कर रहा हूँ तो मुझे यह ही कहना पड़ेगा के तुम मुझे रत्तीभर भी नहीं समजी।

मिसेस : नाम के लिए कोई काम बुरा नहीं होता। हाँ अगर तुम्हें यश की आकांक्षा हो तो मैं उसकी निंदा न करुँगी, भूल कर भी नहीं। मै



तुम्हें एक ऐसी तदबीर बता दूंगी जिससे तुम्हे इतना यश मिलेगा के तुम ऊब जाओगे। फूलों की इतनी वर्षा होगी के तुम उसके निचे दब जाओगे। गले में इतने हार पड़ेंगे के तुम गर्दन सीधी न कर सकोगे।

कानूनी कुमार : कोई मजाक की बात होगी। देखो मिनी काम करनेवाले आदमी के लिए इससे बड़ी दूसरी बाधा नहीं हो सकती के उसके घरवाले उसके काम की निंदा करते है। मैं तुम्हारे इस व्यवहार से निराश हो जाता हूँ।

मिसेस : तलाक का कानून तो बनाने जा रहे हो अब क्या डर है?

कानूनी कुमार : फिर वोही मजाक? मैं चाहता हूँ तुम इन प्रश्नो पर गंभीर विचार करो।

मिसेस : मैं बहुत गंभीर विचार करती हूँ सच मानो। मुझे इसका दु:ख है के तुम मेरे भाव को नहीं समझते। मैं इस वक्त जो बात तुम से करने जा रही हूँ, इसमैं देश के लिए आवश्यक ही नहीं परमावश्यक समझती हूँ। मुझे इसका पक्का विश्वास है पूछोगे नहीं वो क्या बात है?

कानूनी कुमार : पूछने की हिम्मत नहीं होती।

मिसेस : मैं खुद ही बता देती हूँ। हमारा जीवन कितना लज्जास्पद है, तुम खूब जानते हो। रात दिन रगडा झगडा मचा रहता है। कहीं पुरुष स्त्री पर हाथ साफ कर लेता है कंही स्त्री पुरुष के मूंछों के बाल नोचती है। हमेशा एक न एक गुल खिला ही रहता है। कंही एक मुंह फुलाय बैठा है कंही दूसरा घर छोडकर भाग जाने की धमकी दे रहा है। कारण जानते हो क्या है ? कभी सोचा है? पुरुषों की रसिकता और किर्पनता यही दोनों एब मनूशों के जीवन को नर्क तुल्य बनाये हुए हैं। जिधर देखो अशांति है, विरोध है, बाधा है।



साल में लाखों हत्याएं उन्ही बुराइयों के कारण हो जाती हैं। लाखों स्त्रियां पतीत होजाती हैं। पुरुष मध्य सेवन करने लगते हैं। यह बात है या नहीं?

कानूनी कुमार: बहुत सी बुराइयां ऐसी हैं, जिन्हें कानून नहीं दूर कर सकता।

मिसेस : अच्छा किया आप भी कानून की अक्षमता स्वीकार करते हैं? मैं यह नहीं समझती थी। मैं तो कानून को इश्वर से ज्यादा सुर्व्यापी सुर्वाशक्ति समझती हूँ।

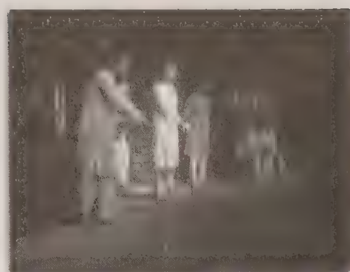
कानूनी कुमार : फिर तुमने मजाक शुरू कर दिया।

मिसेस : अच्छा लो कान पकडती हूँ। अब न हंसूगी। मैंने इन बुराइयों का एक कानून सोचा है। उसका नाम होगा दम्पति सुख शांति बिल उसकी दो मुख्य धाराएं होंगी। और कानूनी बारीकियां तुम ठीक कर लेना। एक धारा होगी के पुरुष अपनी आमदनी का आधा हिस्सा बिना कान पूँछ हिलाय स्त्री को दे दे। अगर न दे तो पांच साल का कठिन कारावास और पांच महीने की काल कोठरी। दूसरी धारा होगी, पन्द्रह से पचास तक के पुरुष घर से बहार न निकल पावें। अगर कोई निकले दस साल का कारावास दस महीने की काल कोठरी... बोलो मंजूर है?

कानूनी कुमार : असम्भव तुम प्रकृति को पलट देना चाहती हो। कोई पुरुष घर में कैदी बन कर रहना स्वीकार न करेगा।

मिसेस : वो क्या उस का बाप भी करेगा। पोलिस डंडे के जोर से करायगी। न करेगा तो चक्की पीसनी पड़ेगी। करेगा कैसे नहीं? अपनी स्त्रीको घर की मुर्गी समझना और दूसरी स्त्रियों के पीछे पीछे दौडना, क्या खालाजीका घर है। तुम अभी इस कानून को असौभाविक समझते हो। मत घबराओ। स्त्रियों का अधिकार होने दो। यह पहेला कानून न बन जावे तो कहना के कोई कहता था।

स्त्री एक पैसे के लिए तरसे और आप गुलछर्रे उडाएं, दिल लगी है। आधी आमदनी स्त्रीको दे देनी होगी। जिसका उससे कोई हिसाब न पुछा जा सकेगा।



कानूनी कुमार : मिनी तुम समाज को खिलौना समजती हो।

मिसेस : कदापि नहीं मैं यह ही समझती हूँ के कानून सब कुछ कर सकता है। मनुष्य का स्वभाव भी बदल सकता है।

कानूनी कुमार : कानून ये नहीं कर सकता।

मिसेस : कर सकता है। अगर वो ज़बरदस्ती लड़कों को स्कूल भेज सकता है। अगर वो ज़बरदस्ती विवाह की उम्र तय कर सकता है अगर वो ज़बरदस्ती बच्चों को टिका लगवा सकता है तो वो ज़बरदस्ती पुरुष को घर में बंद भी कर सकता है। उसकी आमदनी का आधा स्त्रियों को भी दिला सकता है। तुम कहोंगे पुरुषको कष्ट होगा। ज़बरदस्ती जो काम कराया जाता है। उसमें करनेवाले को कष्ट होता है। तुम इस कष्ट का अनुभव नहीं करते, इसी लिए वो तुम्हें नहीं अखरता। मैं यह नहीं कहती के सुधार ज़रूरी नहीं है। मैं भी शिक्षा का प्रचार चाहती हूँ मैं भी बाल विवाह बंद करना चाहती हूँ बीमारियाँ न फैलें। लेकिन कानून बना कर। ज़बरदस्ती ये सुधार नहीं करना चाहती। लोगों में शिक्षा और जागरुकता फैलाओ। जिसमें कानूनी भय के बगैर वो सुधार हो जाय। आप से कुर्सी तो छोड़ी जाती नहीं, घर से निकला जाता नहीं शाहेरों की विलासता को एक दिन के लिए भी त्याग सकते नहीं। और सुधार करने चले हैं आप देश का इस तरह सुधार न होगा। हां पराधीनता की बेडी और भी कठोर हो जायेगी...



कफ़न

(मंच पर बुधिया के चिल्लाने की आवाज़ आ रही है उसे पर्सो वेदना हो रही है। और माधव और घिसु आलू भून रहे है। मंच पर दो वैक्ति दाकिल होते हैं।)

१: ओ हो... ये माधव की औरत कितना चिल्ला रही है।

२: लगता है आज रात सोने नहीं दे गी। सुना पेट से है।

१: यह चमारों का ऐसा ही है। काम धंदा करते नहीं बस बच्चे पैदा करते हैं।

२: और ये बाप बेटे एकदम ही काहिल हैं। काम चोर, घिसु एक दिन काम करता है और माधव घंटा भर काम करता है तो दस घंटे चिलम पीता है।

१: इसी लिए तो इन्हें कोई काम पर नहीं रखता। घर में मुट्ठी भर अनाज मौजूद हो तो इनके लिए काम न करने की कसम है।

२: और जब दो सदिन भूके होते हैं तो घिसु दरख्तों पर चढ़ कर लकडियाँ तोड़ लाता है और माधव बाज़ार में बेच आता है। और जब तक वो पैसे जेब में होते हैं दोनों कोई काम नहीं करते और पैसे खत्म होते ही मजदूरी के लिए या तो मारे मारे फिरते हैं या लकडियाँ तोड़ते हैं।

१: हलाँ कि हमारे गांव में काम की कमी नहीं है। काश्तकारों का गांव है मेहनती आदमी के लिए ५० काम हैं।

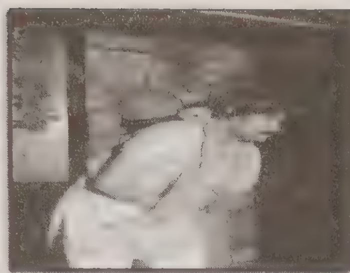
२: घर में भी दो चार मिट्टी के बर्तनों के अलावा कुछ है नहीं, कपड़े भी फटे पुराने ही पहनते है, कर्ज़ में लदे हुवे हैं गालियाँ भी खाते हैं और मार भी।.. **(माधव की पत्नी और चिल्लाने लगती है)**

घिसु : मालूम होता है बचेगी नहीं। सारा दिन तडपते हुवे गुजर गया **(माधव से)** अबे जा जरा देख तो आ।

माधव : मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती। देख कर क्या करूँगा ?

घिसु : तू बड़ा बेदर्द है बे... साल भर जिस के साथ जिंदगी का सुख भोगा उसी के साथ बेवफाई?

माधव : मुझे उसका यूँ तडपना और हाथ पाओं पटकना बर्दाश्त नहीं होता।



घिसु : अच्छा देख आलू भून गये।

माधव : अभी कच्चे हैं।

१ : वो अपने पेट कि आग बुझाने के लिए किसी के खेत से मटर और आलू उखाड लाते और भून कर खाते। और कभी कभी दस पांच उख उखड लाते और रात भर चूसते। इसी तरह घिसु ने अपनी जिंदगी के साठ साल काट लिए और बेटा भी बाप के नक्श–ए–कदम पर चल रहा था।

२ : लेकिन सुना है जब से माधव की घरवाली आई है तब से घर में खाना बराबर बनता है। वो बेचारी मजदूरी करके, पिसाई करके, घांस छील के सेर भर आटे का इंतज़ाम कर लेती, और इन दोनों बे–गैरतों का पेट भरती। **(माधव की पत्नी की आवाज़ बढ़ जाती है)**

घिसु : जा के देख तो आ। क्या हालत है उसकी। चुडैल का फसाद होगा और क्या? यहाँ तो ओझा भी एक रूपया मांगता है, किसके घर से आए। जा देख आ।

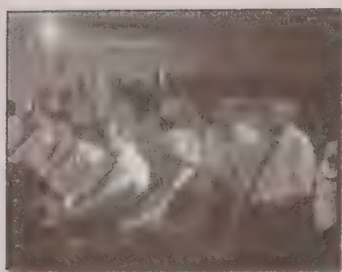
माधव : **(दर्शकों से)** बड़ा होशियार है बापू मुझे अंदर भेज रहा है। मैं अंदर जाकर बहार आऊंगा और यह सारे आलू खा जायेगा... मुझे वहाँ डर्र लगता है बापू।

घिसु : डर्र किस बात का मैं तो हूँ यहाँ पर।

माधव : तो तुम ही जाके देख आओ।

घिसु : जब मेरी औरत मरी थी तो मैं ३ दिन उसके पास से हिला भी नहीं था। और फिर तेरी घरवाली मुझसे लजाएगी नहीं? कभी उसका मुंह नहीं देखा, आज उसका उभरा हुआ बदन देखूंगा? उसे तन की सुध भी तो ना होगी। मुझे देख लेगी तो खुल के हाथ पाव भी पटक न सकेगी।

माधव : मैं सोचता हू कोई बाल बचा हो गया तो क्या होगा। सौंठ, गुड, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में।



घिसु : सब कुछ आ जायेगा, भगवान बच्चा दे तो। जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे, वही तब बुलाकर देंगे। मेरे ९ लड़के हुए, घर में कभी कुछ ना था। मगर इसी तरह हर बार काम चल गया।

माधव : बापू तू भी सोचता खूब है।

घिसु : अरे बेटा हमारे सामज में जो किसान मेहनत करते है वो भी हमारे ही तरह है, और जो उन किसानो की कमजोरी से फायदा उठाते है वो ज्यादा सुखी है। इसीलिए मैंने अपनी जिंदगी का नीयम बना लिया है कि चाहे खुशी हो चाहे गम हो, जाके गांवोंवालो के आगे हाथ फेलाओ, रों, गाव काम चल जाता है। **(घिसु चकित से माधव को देखता है और कहता है)** अबे तू ऐसे क्या देख रहा है खाता क्यों नहीं?

माधव : तुमसे बचे तब ना, गरम गरम, गबर गबर खाए जा रहे हो। अरे छिलका उतारने के बाद ऊपर का हिस्सा ठंडा लगता है मगर अंदर तो गरम ही होता है।

घिसु : अबे एक बार अंदर पहुँच जाए, फिर उसे अंदर ठंडा करने के बोहोत से सामान है और ससुरे तू मुझे ही खाली बोल रहा है खुद भी तो अंधाधुं भकर भकर अपने पेट में भर रहा है। **(कुछ याद करके हंसता है)**

माधव : क्या हुआ बापू हंसता क्यों है?

घिसु : कुछ नहीं, ठाकुर साहब की बारात का भोज नहीं भूलता। २० साल हो गए वैसा खाना आज तक नहीं खाया। लड़कीवालो ने सबको पुडिया खिलाई थी... सबको। छोटे, बड़े सबने पुडिया खाईं, असली घी की। चटनी, रायता, ३ तरह के साग, एक से एक तरकारी, मिठाई। अब क्या बताऊँ उस भोज में कितना स्वाद था। कोई रोक नई थी, जो चीज़ चाहो मांगो और जितना चाहो खाओ, लोगो ने ऐसा खाया, ऐसा खाया कि किस्सी से पानी न पिया गया। मगर परोसने वाले है कि सामने गरम-गरम, गोल-गोल महेकती हुई कचोड़ीयाँ डाल देते है।



मना करते है... कि नहीं चाहिए पतल को हाथ से रोके हुए है, मगर वो है कि दिए जाते है, और जब सब ने मुंह धो लिया तो एक बीड़ा पान भी मिला। मगर मुझे पान लेने की सुध कहाँ थी, खड़ा न हुआ जाता था। चटपट जाकर कंबल तान कर सो गया। ऐसा दरिया दिल था वो ठाकुर।

माधव : काश कि हमको भी कोई ऐसा भोज खिलाता।

घिसु : अब कोई क्या खिलाएगा, वो ज़माना दूसरा था। अब तो हर किसी को किफायत की सूझती है। शादी में कम खर्च करो, क्रियाक्रम में खर्च मत करो। पूछो गरीबो का माल बटोर–बटोर कर कहा रखोगे। बटोरने में कोई कमी नहीं है, हां खर्च करने में किफायत सूझती है।

माधव : बापू तुमने २० पुडिया खायी होगी ?

घिसु : अबे २० तो खाली मुंह के इस तरफ ही दबा गया था। २० से ज्यादा खायी थी।

माधव : मैं होता तो ५० खा जाता।

घिसु : ५० से कम मैंने भी न खाई होगी। अच्छा पठ्ठा था मैं, अपने ज़माने में। तू उसका आधा भी नहीं है।

माधव : बाबु सारे आलू खतम हो गए।

घिसु : ज़रा पानी तो बढा... **(माधव पानी लाके देता है, घिसु पानी पीता है)**

माधव : यहाँ ही सो लेते है बुधीया को सुबह देखेंगे... **(मंच पर अँधेरा छा जाता है... फिर थोड़ी देर के बाद मंच पर रौशनी आती है... माधव अंदर विंग में जाता है और चिल्लाते हुवे दाखिल होता है)**

माधव : बापू। ए बापू देख बुधीया मर गई। साथ में बच्चा भी मर गया।

घिसु : अबे ऐसे क्या खड़ा है रों जोर जोर से रों तब भी कफ़न, लकडियों के पैसे आएँगे। चिल्ला जोर जोर से। **(दोनों जोर जोर से रोते हैं)** अब



सीधे चलते है ज़मींदार साहब के पास।

माधव : बाबु वो हमारी शकल से भी नफरत करता है, कई बार अपने आदमियों से पिटवा भी चूका है।

घिसु : अबे ऐसे समय पर आदमी का दिल पसीज जाता है। मैं जैसा बोलू वैसा कर। चल रोना शुरू कर।

दोनों : **(रोते हुवे)** हाय हाय हम बर्बाद हो गए। जो कुछ था वो भी चला गया। है भगवान अब हम क्या करे।

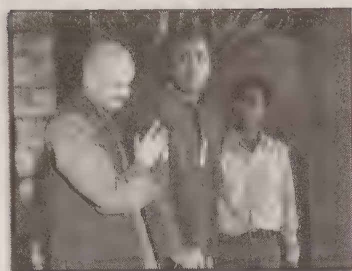
(जो दो आदमी शुरू में आए थे उनमे से एक ज़मींदार बन जाता है।)

ज़मींदार : क्या है रे घिसुआ रोता क्यों है। अब तो तेरी सूरत ही नज़र नहीं आती। मालूम पड़ता है तुम लोग इस गाव में रहना ही नहीं चाहते।

घिसु : सरकार बड़ी बिपता में हूँ। माधव की घरवाली गुजर गई। दिन भर तडपती रही सरकार। आधी रात तक हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे। दवा दारु जो कुछ हो सका सब कुछ किया। अब कोई एक रोटी देनेवाला नहीं रहा मालिक। हम तबाह हो गए। घर उजड गया। आप का गुलाम हूँ, अब आप के सिवा उसकी मिट्टी कौन पार लगाएगा। हमारे हाथो में जो कुछ था वो सब दवा दारू में उड़ गया। सरकार ही की दया होगी तो उसकी मिट्टी उठेगी। आप के सिवा और किस के द्वार पर जाऊ।

ज़मींदार : जी में आता है कह दू, चल दूर हो यहाँ से, लाश घर में रखके सड़ा। यु तो बुलाने से भी नहीं आता। आज जब गर्ज पड़ी तो आकर खुशामद कर रहा है। हरामखोर कही का, बदमाश। चल ले यह २ रूपये और जा यहाँ से।

घिसु : अरे माधव की घरवाली के कफ़न के लिए ज़मींदार साहब ने २ रूपये दिए है, तुम भी कुछ दो, तुम भी दो महाजन, अरे भैया तुम कहा भागे जा रहे हो ज़मींदार साहब ने दो रूपये दिए है। **(वो दोनों रूपए मांगने और**



लेने का अभिनय करते हैं) अबे उधर चल कोने में गिनते है कितना रुपया है। चार आने, एक आने, दो आने, आठ आने, २ पैसे खोटा, छी छी लोग कफ़न के लिए भी अपनी आदत से बाज नहीं आते। अब यह तो पुरे ५ रुपये है।

माधव : बाबु लकड़ी तो गाववाले दे देंगे चल हम चल कर उसका कफ़न ले लेते है।

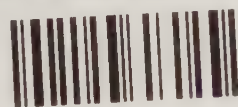
घिसु : हाँ कई हल्का सा कफ़न ले लेते हैं।

माधव : हां और क्या लाश उठाते उठाते रात हो जाएगी रात को कफ़न कौन देखता है।

घिसु : कैसा बुरा रिवाज है के जिसे जीते जी तन ढाँकने को चिथड़ा भी न मिला उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।

माधव : कफ़न लाश के साथ जल ही तो जाता है।

घिसु : और क्या रखा रहता है। यही ५ रुपये पहले मिलते तो कुछ दवा दारु करते।



माधव : बापु।

घिसु : अबे रुक क्यों गया?

माधव : बापु जो मैं देख रहा हू वही तू भी देख [illegible]।

घिसु : शराब... **(जो दो आदमी शुरू में आए थे उनमे से एक शराब फरोश बन जाता है)**

माधव : दो तीन बोतल दे दो। बाद में और ले जाऊंगा।

(दोनों शराब पीने लगते है)

घिसु : अबे कुछ पुडिया, थोडा गोश्त, कलेजी और मच्छली भी तो ले आ...

माधव : सब लाता हू बापु धीरज रख। **(वो दौड़ कर जाता है और कुछ ही देर में सामान ले आता है)**

घिसु : कफ़न पहनाने से क्या मिलता है। आखिर जल ही तो जाता है। कुछ बहु के साथ तो न जाता।



माधव : दस्तूर है यही लोग ब्राह्मणों को हज्जारो रूपये क्यों दे देते है, कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं।

घिसु : बड़े आदमियों के पास धन है, फुके। हमारे पास फुकने के लिए क्या है?

माधव : लेकिन लोगो को जवाब क्या दोगे। लोग पूछेगे नहीं कफ़न कहा है।

घिसु : **(हँस्ते हुए)** कह देगे रूपये कमर से खिसक गए। बहुत ढूंडा नहीं मिला।

माधव : **(हँस्ते हुए)** बड़ी अच्छी थी मरनेवाली, मरी भी तो हमे खिला पीला के मरी।

घिसु : अभी कितने पैसे बचे है।

माधव : १.५० रुपये।

घिसु : बोहत है... एक बात बता माधव यह सब खा पी के हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुण्य न होगा।

माधव : ज़रूर होगा। भगवान तुम अंतरयामी हो उसे बैकुंठ ले जाना। हम दोनों हृदय से उसे दुआ दे रहे है। आज जो भी भोजन मिला है वो कभी उम्र भर भी न मिलता... क्यों बापू एक दिन हमलोग भी तो यहाँ से जायेंगे... जो वो ऊपर हमसे पूछेगी कि तुम लोगो ने हमको कफ़न क्यों नहीं दिया तो क्या कहेंगे?

घिसु : कहेंगे तुम्हारा सर।

माधव : पूछेगी ज़रूर बापू।

घिसु : तू कैसे जानता है कि उसे कफ़न नहीं मिलेगा। तू मुझे ऐसा गधा सम झता है। मैंने ६० साल दुनिया में क्या घास खोदी है? उसको कफ़न मिलेगा और उससे बोहोत अच्छा मिलेगा जो हम उससे देते।

माधव : कौन देगा? रूपए तो हम चट कर गए।

घिसु : मैं कहता हूँ उससे कफ़न मिलेगा तू मानता क्यों नहीं।



माधव : कौन देगा बताते क्यों नहीं?

घिसु : वही लोग देंगे जिन्होंने अब दिया। हां वो रूपए हमारे हाथ न आयेंगे। और अगर किसी तरह आ जाये तो फिर हम यहाँ बैठ कर शराब पीयेंगे और कफ़न तीसरी बार मिलेगा।

माधव : बापू तू और खायेगा?

घिसु : नहीं।

माधव : तो इससे उस भिकारी को दे देता हू। **(जो दो आदमी शुरू में मंच पर आए थे उनमेसे एक आदमी भिकारी बन जाता है)**... ले जा... खूब खा... और आसिरबाद दे जिसकी कमाई है वो तो मर गई। मगर तेरा आसिरबाद उस तक ज़रूर पहुंचेगा। रोए रोए से आसिरबाद दे। बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे है। वो बैकुंठ में जायेगी बाबा, बैकुंठ की रानी बनेगी।

घिसु : हां बेटा। बैकुंठ में जायेगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं, मरते मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वो न बैकुंठ में जायेगी तो क्या यह मोटे मोटे पेटवाले लोग जायेंगे जो गरीबो को दोनों हाथो से लूटते है और अपना पाप धोने गंगा में जाते है और मंदिरों में जल चढाते है।

माधव : मगर बाबु बेचारी ने जिंदगी में बड़े दु:ख झेले है। **(माधव रोने लगता है)**

घिसु : क्यों रोता है बेटा। खुश हो कि वो माया जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी जो इतनी जल्दी माया मोह के बंधन से छुटकारा पा लिया **(गाना शुरू करता है धिग्नी क्यों नैना झंकावे, ठिगनी क्यों... धीरे धीरे माधव भी उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाता है और दोनों नाचने लगते है। नाचे नाचते गिर पड़ते है)**

मुजीब खान की उपलब्धियाँ

पिछले तीन दहाईयों से हिन्दी और उर्दू थिएटर से जुडे हुए हैं। मुंबई युनिवर्सिटी से एम.ए. किया, तकरीबन ४५० एकांकी लिखी और ३ नाटक लिखे। अब तक के ५०० से ज़्यादा नाटकों का निर्देशन कर चुके हैं। हिन्दी और उर्दू के अलावा गुजराती, मराठी, सिंधी और अंग्रेजी नाटकों का भी प्रदर्शन किया है। केवल १८ साल की उमर में सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार इनके नाटक 'लाचारे माई' को महाराष्ट्र राज्य उर्दू अकॅडमी द्वारा दिया गया है। तब स्पर्धा की जज असमत चुगताई ने मंच पर आकर मुजीब खान से कहा था कि उनका मन ये स्विकारने के लिए तैयार नहीं है के ये नाटक किसी नवयुवक ने लिखा है। उसके दो साल बाद हिन्दी रंग मंच की प्रसिद्ध अभिनेत्री शौकत कैफी उसी स्पर्धा में जज थीं और मुजीब खान के दो नाटक प्रस्तुत किए गए। जब ये पूछने पर के निर्णय लेने में इतना विलम्ब क्यों किया गया तो शौकत कैफी ने कहा कि एक निर्देशक के दो नाटक थे और दोनों ही इतने अच्छे थे के हम निर्णय नहीं कर पाये कि किस नाटक को सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार दिया जाए। फिर हमने टॉस किया और बहतरीन नाटक का ईनाम 'अपाहिज' को दिया गया। हिन्दी रंगमंच पर कहानियों पे नाटक लिखने की शुरूआत मुजीब खान ने कि। उन्होंने १९८३में सादत हसन मन्टो की कहानी 'हतक' पर नाटक लिखा 'सुगंधी'।

मुजीब खान को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, लेखक और कलाकार के बहोत सारे राज्य और राष्ट्रीय स्थर पर पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – मूड इंडिगो नाटक स्पर्धा १९८३
* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – महाराष्ट्र राज्य उर्दू अकादमी नाटक स्पर्धा १९८४–१९८६
* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – प्रिन्स अली खान इंटर ग्रुप नाटक स्पर्धा १९८४
* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – प्रिन्स अली खान इंटर ग्रुप नाटक स्पर्धा १९८६
* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – अखिल भारतीय नाटक स्पर्धा (दिल्ली) १९८६
* **सर्वश्रेष्ठ निर्देशक** – अखिल भारतीय नाटक स्पर्धा (नागपूर) १९८६

दूरदर्शन में अनुभव :

* लेखक एवं निर्देशन २००० भाग चलचित्र आधारित चैनल में जैसे डी.डी. १ और डी.डी. २ इन मुंबई, सी.वी.ओ., सी.आय.टी.आय. केबल, बी फोर यू, इ.टी. सी., ज़ी, जैन, एन.ई.पी.सी., सोनी, ई.टी.वी. (हिन्दी, उर्दू और गुजराती)
* ''अंदाज'' ज़ी टी.वी. पर (२५० भाग)
* ''साथ साथ'' ज़ी टी.वी. पर (११० भाग)
* ''चाँदनी'' ज़ टी.वी. पर (५२ भाग)
* ''माल है तो ताल है'' स्टार पर (३९ भाग)
* ''दामन'' सहारा पर (३९ भाग)
* ''अनुभव'' डी. डी. मेट्रो पर (२६ भाग)
* ''आखरी मौसम'' डी. डी. १ पर (१३ भाग)
* ''नतीजा ठन ठन गोपाल'' एन.ई.पी.सी. (१३ भाग)

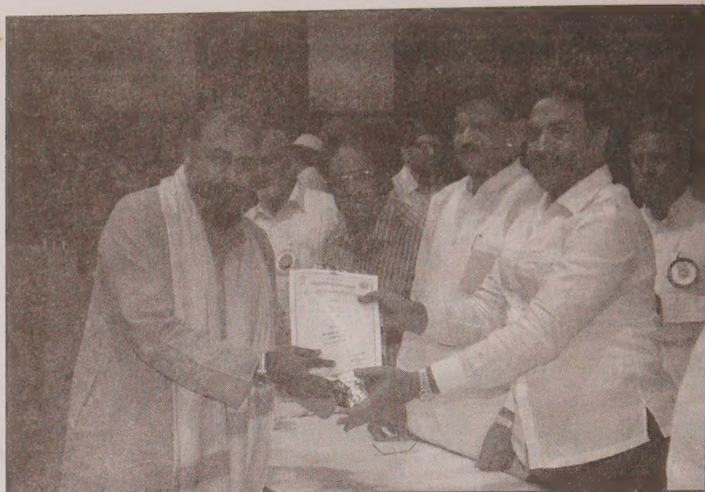


भारत में पत्रकारिता नाटक करने में मुजीब खान अकेले लेखक निर्देशक हैं जो बरसों से इस काम में जुटे हैं और इस तरह का रंगमंच दुनिया में दो ही स्थानों पर होता है। लंडन में और भारत में.

आईडीया पब्लिकेशन



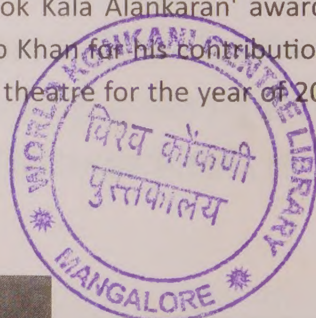
'Hum Log-Mumbaikar Ki Aawaz' a non-government organization conferred the 'Hum Log Gaurav Puraskar' on Mr. Mujeeb Khan, for his extensive contribution to the field of dramatics for the year 2009.



Maharashtra State Minister Mr. Arif Naseem Khan awarded Mujeeb Khan for his contribution in theatre for the year 2011



On the occasion of Bundali Diwas Jabalpur, Madhya Pradesh, Gunjan Kala Sadan presents 'Lok Kala Alankaran' award to Mr. Mujeeb Khan for his contribution in Hindustani theatre for the year of 2010.





Deputy Vice Chairman of jiant International Mr. Nooruddin Sevwala presented Mr. Mujeeb Khan with an excellence award for his contribution in Indian theatre. Mr. Amin Patel (M.L.A.) is also seen in this picture.

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Reliving extraordina tales of ordinary live

Mohammed Wajihuddin | TNN

Mumbai: On M… Munshi Prem… tempor… 1935, his…

Theatre director Mujeeb Khan will feature 54 pl… nd's works to mark his 130th birth anniversary

how his grandmo… ably burns her fi… making chapatis… ta (tongs) for his… so that she can fi… Khan will also… (Shroud), the st… man who collects… funeral rites of… spends it on food… "Kafan pric… ience and jolts… most criminal… ows how po… to insanity… these, Pr… to us,"… and Sh… stor…

director… ears ago… an-… and-… rn-… at…

मुंशी प्रेमचंद हर दौर के लेख

■ नाटककार मुजीब खान से विशेष बातचीत

हरिभूमि संवाददाता

जबलपुर। मुंशी प्रेमचन्द एक समय के नहीं वरन … जिनकी …

सफदर हाशमी का 'नुक्कड़' … अब हर तबके में हो रहा …

जर्नलिस्टिक थियेटर

भारत में जर्नलिस्टिक थियेटर … जनक आइडियल ड्रामा … एंटरटेनमेन्ट एकेडमी के डा… मुजीब खान ने बताया … जर्नलिस्टिक थियेटर का … विश्व में केवल 2 ही देशों … है। उनमें पहला ब्रिटेन और … भारत है। श्री खान ने इस … माध्यम से समाचार …

समाज को पैगाम देना चाहता हूं: मुजीब खान

जबलपुर (मेट्रो डेस्क)। मैं चाहता हूं कि थियेटर के माध्यम से समाज को संदेश दिया जाए और इसके लिए प्रेमचंद की कहानियों से बेहतर मुझे कुछ और नजर नहीं आता। सही मायनों में प्रेमचंद का साहित्य आज के दौर की जरूरत है या कहा जा सकता है कि हर दौर का आइना है प्रेमचंद का लेखन। ये कहना है मुंबई से आए वरिष्ठ रंगकर्मी मुजीब खान का। मुजीब शिक्षाविद् स्व.डॉ पूनचंद श्रीवास्तव के 95वें जन्म महोत्सव पर आयोजित बुंदेली दिवस में शामिल होने के लिए आए हैं। महज 14 वर्ष की उम्र से ही मुजीब ने रंगमंच को अपना लिया। मुनसिफ, ये बच्ची किसकी, गुड़िया, बताना है तो बताइए, थोड़ा सा प्यार, कन्यादान, बिल्कीस बानो, क्या इमरान गुनहगार है? माँ मुझे मत मारो, अमर शहीद सिंह भगत सिंह और ऐसे ही कई नाटक हैं जिन्हें मुजीब खान ने लिखा और निर्देशित किया है। … में मुजीब आइडियल ड्रामा … के जरिये युवा … निखार रहे हैं। …

शहर आए रंगकर्मी से मुलाकात

Estd.:1960

Premchand's celebrated plays coming soon to a local theatre

DNA DAILY NEWS & ANALYSIS

Over 50 of his famous stories to be shown in the city this August

Apoorva Dutt

Renowned Hindi poet and playwright Premchand's literary legacy has shaped the realism of contemporary Hindi literature. His refusal to use the language of the elite and instead speak about the lives of ordinary people made his stories instant classics. And now, the Prem Utsav theatre festival is all set to give you a crash course of the literary godfather's works … by producing and showing fifty of his plays ten days, beginning August … Vile Parle … non-commercial the… group which will not be … the shows is holding … grand extravaganza … to spread aware… wide entertain…

PREM UTSAV: The organisers plan to extend the festival … four weeks next year, and hope to include more …

THE INQUILAB

قوموں کی حیات اُن کے تخیل پہ ہے موقوف (اقبال)

انقلاب

قائم شدہ : ۱۹۳۸ .. بانی : عبدالحمید انصاری مرحوم

…nday, March 7, 2011 • www.inquilab.com

اردو ٹائمز

ممبئی

روزنامہ

بانی : محمد نذیر مرحوم

اردو عوام کا بے باک ترجمان

قائم شدہ: ۱۹۶۰ء

www.urdutimes.in

The Urdu Times Daily, Mumbai

اردو تھیٹر کے تین دیوانے

مجیب خان، قاضی مشتاق اور ابراہیم اشک

…وال پر خواتین کے استحصال سے متعلق نکڑ ناٹک 'عورت بھی نہ بچ پائی آتنک واد…

नया जमाना नया अखबार

पीपुल्स समाचार

जबलपुर, भोपाल, इंदौर और ग्वालियर से एक साथ प्रकाशित

इराक में खत्म हुआ सैन्य अभियान

जबलपुर, गुरुवार 2 सितंबर 2010

यूएस ओपन: दूसरे दौर …

बेहिस हो गया आदमी

यंग रिपोर्टर। लोक कला सम्मान ग्रहण करने गुंजन के विशेष आग्रह पर जबलपुर आए मुंबई के नाट्य निर्देशक मुजीब खान मुंशी प्रेमचंद की 283 कहानियों में से अब तक 238 का नाट्य मंचन कर चुके हैं। टीवी सीरियल्स और फिल्मों के …

की प्रसिद्ध कहानियां कफन, कहर खुदा का, मंदिर मस्जिद, पंच परमेश्वर, सवा सेर, शिकवा शिकायत आदि का नाट्य रूपांतरण कर चुके हैं।

फैमिली कोर्ट में ड्रामा

50 कहानियों का नाट्य मंचन किया जाएगा। मुजीब ने बताया कि उनके आदर्शियल ग्रुप में 35 कलाकार शामिल हैं जिनमें से अधिकतर टीवी सीरियल्स के लिए चुने जा चुके हैं। फिल्म प्रतिष्ठान के लिए संवाद लिख चुके मुजीब का मुंशी प्रेमचंद की कहानियों पर नाट्य मंचन का सफर वर्ष 2005 …

बदल चुका है … की कहानियों को … से जन जन तक … कलाकारों के इस … आज तक एक … नहीं दी। वर्ष 20… के दौरान हर … राष्ट्रपिता महात्मा … थे वहां का …



मुजीब खान रंगमंच की दुनिया में एक जाना-पहचाना नाम है। वह पिछले ४५ सालों से नाट्य लेखन, अभिनय और निर्देशन से सक्रिय रुप से जुडें हुए है। उनका नाट्य संगठन आइडियल ड्रामा ॲन्ड एंटरटेनमेंट एकेडमी पिछले ६ सालों से मुंशी प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन करने में जुटा है। मुजीब खान अब तक प्रेमचंद की २९५ से अधिक कहानियों का नाटय रुपांतर कर चुके हैं, तथा इनमें से लगभग सभी के नाट्य प्रदर्शन हो चुके हैं। प्रेमचंद के सामाजिक संदेश को जन-जन तक पहुंचाना मुजीब खान का मिशन बन चुका है। प्रेमचंद की १० कहानियों के नाट्य रुपांतरण की तीसरी किस्त इस पुस्तक के रुप में प्रस्तुत है।